गीता पार्टी कॉमरेड

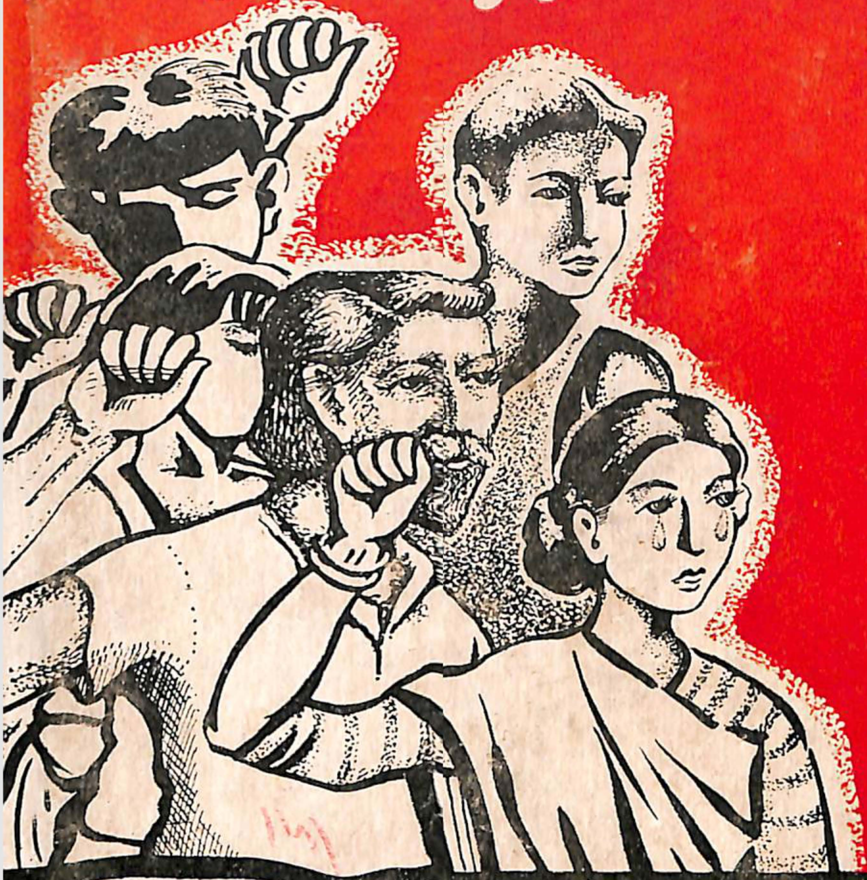

यशपाल

H
813.3
Y 26 P

H
813.3
Y26P

विप्लव पुस्तक माला—१४

पार्टी कामरेड

(उपन्यास)

यशपाल

परिमार्जित

(पांचवां संस्करण)

प्रकाशक

विप्लव कार्यालय, २१ शिवाजी मार्ग,

लखनऊ

मार्च १९६३

संशोधित मूल्य
पांच रुपया

प्रकाशक —
विप्लव कार्यालय
ल ख न ऊ

पुस्तक के प्रकाशन और अनुवाद के सर्वाधिकार लेखक द्वारा स्वरक्षित हैं।

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Acc. No. 46483
Date 2-2-74
SIMLA

H
813.3
Y26 P

Library IIAS, Shimla
H 813.3 Y 26 P
00046483

मुद्रक :—
साथी प्रेस
ल ख न ऊ

समर्पण

तुम्हारी यह कहानी
तुम्हीं को अर्पित !

यशपाल

परिचय

कहानी घटना और घटना के पात्रों का परिचय कराती है इसलिये स्वयं कहानी का परिचय क्या ? दूर देश और अतीतकाल की कहानी हो तो उसके लिये कुछ संकेत या निर्देश की आवश्यकता हो भी सकती है। पार्टी-कामरेड की कहानी आज की ही कहानी है, पाठक के चारों ओर मौजूद परिस्थितियों की कहानी। अपने सिर के केशों के सम्बन्ध में कौतूहल क्या, वह तो कट कर सामने ही गिरेंगे। पाठक की परिस्थितियों की कहानी लिखना पाठक को दर्पण दिखाने जैसा ही है। यदि दर्पण में दिखाई देने वाले अपने रूप के सम्बन्ध में हमें शंका हो तो उसके दो कारण हो सकते हैं। दर्पण खराब हो सकता है। ऐसी अवस्था में दर्पण बनाने वाला ही दोषी है परन्तु बहुधा हम अपने आप को वास्तविक से बहुत अधिक रूपवान समझते हैं। ऐसा व्यक्ति शायद ही मिले जिसे अपना रूप ठीक-ठीक याद हो। कम से कम अपने चेहरे का दोष तो दर्पण में देखे बिना जानना सम्भव नहीं इसीलिये अपनी ही परिस्थितियों की कहानी लिखने की विशेष प्रवृत्ति हुई।

अपने ही समय की बात पर मतभेद बहुत उग्र हो सकता है। इस कहानी के सम्बन्ध में ऐसा होने से कोई आश्चर्य नहीं; क्योंकि मत-भेद, मत-संघर्ष की परिस्थितियों के सामने ही यह दर्पण रखा जा रहा है। इस दर्पण में और दिखाई क्या देगा ?

किसी भी समय के चित्र में उस समय की बात होगी ही। बन्दर के चित्र में पूंछ न हो और हाथी के चित्र में सूंड़ न हो तो वह चित्र कैसा ? ऐसे ही आज के संघर्षकाल के चित्र में संघर्ष की बात होगी और इस संघर्ष के पात्र भी उस में होंगे। यहाँ तक शायद किसी आलोचक को आपत्ति न हो। आपत्ति होती है आलोचक को प्रचार की गन्ध आने पर। प्रश्न है, बन्दर को बन्दर, हाथी को हाथी और गधे को गधा कहना प्रचार है या नहीं ? बन्दर के लिये यह कहना कि वह चंचल और धूर्त होता है, हाथी के लिये कहना कि भारी और विशाल होता है और गधे को बेसमझ कहना प्रचार है या नहीं ?

कुछ लोग इसे प्रचार कहेंगे परन्तु यदि वास्तविक बात न कही जाय तो क्या बन्दर, हाथी और गधे का वास्तविक परिचय या वर्णन हो सकेगा ? जिन लोगों की कहानी लेखक लिखता है, उनके विचारों और व्यवहार का वर्णन करना उसका वास्तविक परिचय है, प्रचार नहीं। इसके बिना चित्र पूरा न होगा और चित्र भी यथा-सम्भव एकांगी न हो तभी अच्छा है। वर्णन और चित्रण यदि प्रचार है तो संसार का सम्पूर्ण साहित्य ही प्रचार है और आज का लेखक उससे कैसे बच सकता है।

पक्षपात की सफाई दे सकना कठिन है। अपने चारों ओर कुछ हमें ठीक और अच्छा जंचता है और कुछ गलत और बुरा। जो हमें ठीक जंचता है, उसे ठीक या अच्छा कैसे न कहा जाय ? जो गलत जंचता है, उसे गलत या बुरा कैसे न कहा जाय ? न कहा जाय तो ठीक का अनुमोदन और गलत के सुधार का प्रयत्न कैसे हो ?

परिस्थितियों के इन सभी संघर्षों की एक झलक पार्टी-कामरेड में है, द्वेष की भावना नहीं। जैसा बन पड़ा वैसा दर्पण है। देखिये तो, और न देखिये तो……! और देख कर जैसा जंचे……!

यशपाल

२४—६—४६

गीता

पुत्तूलाल नौसारी और पदमलाल भावरिया की मित्रता अब नाम को ही रह गयी थी। मित्रता की जगह अब दोनों के दिलों में होड़ ने ले ली थी। पुत्तूलाल के हाथ में पैसा उतना न था परन्तु उसे अपनी दिलेरी का अभिमान था। बात पड़ जाये तो पैसा फेंकने में पीछे हटने वाला भी नहीं। ऐसे ही ताव पर आकर उसने मदनपुरा की अपनी चाल (हवेली) बेच डाली परन्तु 'बेटा' पुलिस वालों को भी नाकों चने चबवा दिये। आखिर 'भिण्डी बाजार' के दारोगा साहब ने उस से हाथ मिला कर दोस्ती कर ली। दो-चार 'आदमी' उसके साथ सदा ही बने रहते। अशफाक पंजाबी, सुकुल और बांडेकर का इलाके भर में खूब नाम था। ये लोग अवसर देख कभी नौसारी के और कभी भावरिया के साथ हो लेते।

उस दिन दोपहर बाद नौसारी एक 'कोंकणी' छोकरी की खोज में हार्न-बाई रोड पर जा रहा था। सुकुल साथ में था। राह में भावरिया और पंजाबी मिल गये। बातचीत चलने लगी। सुकुल ने बात के उपसर्ग में गाली जोड़ कर कहा, "···अजीब बला है। यों हमने भी बहुत देखी हैं। पर यह मछली चारा चाट जाती है और कांटा नहीं निगलती·····चकमा दे जाती है।"

"हमारे लैक (लायक) काम हो तो हुकुम करना सेठ !" अपनी ढीली आस्तीनें समेटते हुये अशफाक पंजाबी बोला।

"देखो, कहां जाती है !" आत्मविश्वास की एक श्वास ले, भीड़ में दूर देखते हुये नौसारी ने उत्तर दिया।

भावरिया भी साथ हो लिया, कुछ दिल्लगी रहेगी और जरूरत पड़ने पर सहायता दे वह नौसारी को नीचा दिखा सकेगा।

'कोकणी' छोकरी 'विसर रेस्तोरां' में प्रायः आती थी। वे लोग वहीं जाकर बैठे। वह छोकरी तो दिखाई नहीं दी परन्तु साथ की मेज पर दो आदमियों के साथ एक और लड़की आकर बैठ गयी। खूब खुल-खुल कर बात कर रही थी, कभी अंग्रेजी में और कभी गुजराती में। हंसती तो पतले होठों में श्वेत दांत ऐसे जान पड़ते कि गुलाबी मखमली मटर की फली फटकर मोती झलक आये हों। आंखें भी छुरे के फले जैसी लम्बी-लम्बी नोकदार, खूब उजली। माथे पर त्योरी चढ़ा कर देखती तो ऐसा लगता, नजर सीने में गड़ा देगी। एक अजीब सा चुलबुलापन। लाल गेहुंआ रंग, पतला-पतला, प्यारा लचीला-सा वदन।

भावरिया की आंखें लड़की पर टिकी देख सुकुल ने चुटकी ली, "सेठ, चीज तो जोर की है!"

"हमारा सेठ माल पछाणता है भाई।" अशफाक ने आस्तीनों पर हाथ फेर कर सेठ की खुशामद की, "कोई सिनेमा वाली है; क्यों सेठ?"

पुत्तूलाल भी उधर देख चुका था, "वाह रे खान की पहचान!" उस ने मुस्कराकर कहा, "कालिज की लड़की है।"

सुकुल ने भावरिया को उकसाया, "कहो सेठ, पसन्द है; बुरी भी क्या है? ....क्यों?"

"कालिज की लड़की......वह खुद खिलाड़ी है" पुत्तूलाल ने टोका, "उड़ कर बादल में चिन्दी लगा आये!......अपना कान ढूंढ़ते फिरोगे पंडित?"

भावरिया जानता था, बात उसे ही सुना कर कही गई थी। उसने उत्तर दिया, "ऐसी भी क्या कहते हो लाला, हम भी बम्बई में रहते हैं!"

अशफाक ने आस्तीन चढ़ा कर समर्थन किया, "हमारे सेठ को क्या समझते हो लाला?"

"तो आजमा देखो भाई!" पुत्तूलाल ने होंठ बिचका दिये।

लड़की अपने बड़े बटुये में से कुछ पुस्तकें निकाल साथ आये दोनों आदमियों को दिखा रही थी। उसी में उसका ध्यान लगा था। पुस्तकों को उलट-पलट उसके साथियों ने ले लिया और जेब से दाम निकाल लड़की के आगे रख दिये।

सुकुल ने जेब से चिल्लर (चेंज) निकाल मेज पर बजाया और गर्दन ऊंची कर दबी जबान में आवाज कसी, "हम भी खरीदते हैं भाई!"

लड़की ने सुना। घूम कर देखा, एक नजर से भांपा और उपेक्षा से मुख मोड़ चाय के प्याले से घूंट भर कर अपने साथियों से बात करने लगी। कुछ

देर बाद वे लोग उठ कर चल दिये । जाते समय लड़की ने एक बार घूम कर इन लोगों की ओर देखा ।

सुकुल ठहाके से हंस कर बोला, "है भाई, है ! मछली कांटा निगलेगी ।"

"सेठ को पहचान गई ।" पुत्तूलाल ने चुटकी ली ।

सुकुल बेपरवाही से बोला, "अरे, तो क्या है, किताब ही तो बेचती है । ....दस-पन्द्रह खरीद ही डालेंगे !"

पुत्तूलाल ने मेज के नीचे पांव हिलाते हुये उत्तर दिया, "औरत की नजर पहचानी जाती है बाबू ! यहां इसी में बिगड़े बैठे हैं ।"

भावरिया को यह तानेबाजी अच्छी न लगी, पर कुछ कह न सका । नौसारी आयु और अनुभव में बड़ा था । भावरिया उसे भैया सम्बोधन करता था । नाराजगी जाहिर न करने के लिये उसके साथ बने रहना जरूरी था । वह बदल कर बात करने लगा । पुत्तूलाल का खयाल था 'कोंकणी' छोकरी शायद 'कैपिटल' में मिले, इसलिये उठने पर वे लोग घूमते-घामते उस ओर चल दिये ।

पदमलाल भावरिया ने चारों के लिये टिकट खरीद लिये । सिनेमा शुरू होने में अभी कुछ समय था । वे लोग ड्योढ़ी में खड़े हो गये । मतलब था आने-जाने वालों पर नजर डालना । शनिवार के दिन फिल्म में काम करने वाली छोकरियां प्रायः बन-ठन कर आती हैं । और भी कई मौसमी पंछी नजर आ जाते हैं । ये लोग कभी कांचमढ़ी आलमारियों में लगी तसवीरों की ओर देख लेते और कभी भीड़ में चलती-फिरती तसवीरों की ओर ।

"अरे !" अशफाक ने भावरिया के कन्धे पर हाथ रखा । चारों की दृष्टि उस ओर गई । रेस्तोरां में जो लड़की चाय पीती हुई दिखाई दी थी, सिनेमा के सामने एक दूसरे नौजवान लड़के के साथ सड़क की पटरी पर अखबार बेच रही थी । वह आते-जाते लोगों के सामने अखबार बढ़ा कर कहती, "प्लीज, रीड 'पीपल्स एज' !" और कभी गुजराती में कहती, "'जनयुग' पढ़िये !" उसका साथी भी उससे अधिक ऊँचे स्वर में पुकार-पुकार कर और अखबार दिखा कर बिक्री कर रहा था ।

"क्यों भाई पंडित, अखबार खरीदोगे ?" पुत्तूलाल ने सुकुल को सम्बोधन कर पदमलाल को ताना दिया, "कहते थे न ?"

"जैसे सेठ कहें !" सुकुल ने भावरिया की ओर देख कर मुस्करा दिया ।

भावरिया चुपचाप खड़ा देखता रहा। लड़की आग्रह से अखबार वेचे जा रही थी। हाथ में लिया अखबार बिक जाने पर पैसे बटुये में डाल, दूसरी बांह के नीचे से दूसरा अखबार लेकर फिर दिखाने लगती। भावरिया ने तिरछी नजर से पुत्तूलाल की तरफ देखा और आगे बढ़ गया। दस रुपये का नोट अखबार वेचने वाली की ओर बढ़ा उसने कहा, "दीजिये तो एक ठो!"

लड़की ने गाहक की ओर ध्यान न दे अखबार देकर नोट ले लिया और शेष रुपये वापस करने के लिए, अखबार दूसरी बांह के नीचे संभाल, बटुआ खोल टटोलने लगी। नौ रुपये और चौदह आने जल्दी नहीं मिल रहे थे।

"जाने भी दीजिए, हो जाएगा।" भावरिया ने उपेक्षा से कहा। अब लड़की ने भावरिया की ओर देखा और कुछ झेंप गई। भावरिया अखबार को समेटता हुआ, पुत्तूलाल को चुनौती की दृष्टि से देखता लौट आया।

"मानते हैं सेठ!" सुकुल मूंछों पर ताव देकर बोला।

इतने में लड़की अपने अखबार वेचने वाले साथी से पैसे ले पीछे-पीछे आ पहुंची। भावरिया को सम्बोधन कर वह बोली, "सुनिए, देखिए, यह लीजिए नौ रुपये चौदह आने।"

अब भावरिया के झेंपने की बारी थी परन्तु मित्रों के सामने वह ठिठका नहीं, "क्या होगा," उस ने उपेक्षा से कहा, "आप की नजर है।"

अखबार बेचने के लिए पुकारने के श्रम से लड़की का चेहरा गुलाबी हो रहा था, वह झेंप से लाल हो गया। उस ने दृष्टि बटुए के भीतर झुका ली। एक रसीद की कापी और पेंसिल निकालकर बोली, "तो आप नौ रुपये चौदह आने के लिए पार्टी की रसीद ले लीजिए! ····क्या नाम लिखूं?"

"क्या होगा, रहने दीजिए, फिर हो जाएगा।" भावरिया ने टालने के लिए उत्तर दिया।

"नहीं, ऐसा तो कायदा नहीं है।" लड़की ने अपनी साफ, बड़ी-बड़ी आंखें भावरिया के चेहरे पर गड़ाकर उत्तर दिया।

"अच्छा लिख लीजिए, पदमलाल भावरिया।"

लड़की ने 'थैंक्यू' कहकर भावरिया को रसीद थमा दी। वह पटरी पर लौट गई और पुकार-पुकार कर अखबार बेचने लगी।

सुकुल विद्रूप से होंठ बिचकाकर बोला, "सेठ, बस कागज का ही पुर्जा हाथ लगा क्या?" पुत्तूलाल ने मुस्कराकर सहयोग दिया, "गांठ के पैसे गए सो अलग,

और ऊपर से··बना गई घाते में !"

"देखा जाएगा।" पुत्तूलाल की चुनौती स्वीकार करने के लिए भावरिया ने उत्तर दिया।

मूला मोदी ने भावर से बम्बई में आकर फोरास रोड के इलाके में दुकान लगाई थी। तब बम्बई ऐसा न था जैसा आज है। फोरास रोड ही न था। आस-पास सिरकी के पालों और खपरैल की झोंपड़ियों में मजदूरों की बस्ती थी। यही लोग मोदी मूला भावरिया के गाहक थे। सौदा प्रायः उधार बिकता था; सौदे पर वाजिब मुनाफा और उधार पर वाजिब सूद। स्वभाव में नम्रता और स्नान-पूजा में नियम होने से मूला भगत कहलाने लगे।

ज्यों-ज्यों बम्बई का विस्तार सेठानी के फूलते शरीर की तरह बढ़ने लगा, उस का आंचल (सबर्ब) सिमट-सिमट कर उस के शरीर पर चढ़ता गया। फोरास रोड के इलाके के साथ ही मूला भगत की स्थिति बदलती गई। फोरास रोड का बाजार जमते-जमते मूला भगत की चार चालें (हवेलियां) खड़ी हो गईं। भगवान की दया से सब कुछ था परन्तु उन की दी सम्पत्ति का वारिस न था। पहले तीन लड़कियां ही हुईं, फिर लक्ष्मीनारायणजी की दया से ढलती उम्र में एक लड़का हुआ।

पुत्र के जन्म पर भगतजी ने अपने अहाते के बीचोंबीच लक्ष्मीनारायणजी के मन्दिर की नींव डाल दी। चार चालों की इमारत से बचे ईंट-चूने से छोटा-मोटा मन्दिर अनायास ही बन जा सकता था, परन्तु भगतजी ने भगवान का स्थान अपनी श्रद्धा और भक्ति के अनुरूप भव्य बनवाया। भगवान का आसन और मन्दिर का फर्श संगमरमर का बनवाया और परिक्रमा के स्थान की दीवारों पर चूनागाची का पलस्तर लगवाकर चित्रकारी करवाई। भगतजी का आधा दिन इस मन्दिर के सामने तख्त पर बैठे सुमरनी जपने में बीत जाता। दुकान में कारोबार देखते या बातचीत करते हुए भी गौमुखी में छिपा हाथ सुमरनी फेरता रहता।

भगतजी स्वयं मामूली बही-खाता लिखने की विद्या से अधिक पढ़े-लिखे न थे। जरूरत भी न थी। परन्तु अपने पुत्र पदमलाल को योग्य बनाने के लिए उन्हों ने सरकारी अंग्रेजी स्कूल में भरती करा दिया था। शीघ्र ही उस नास्तिक विद्या से भगतजी को विरक्ति भी हो गई।

एक दिन पदमलाल की शिकायत पहुंची कि स्कूल के दूसरे लड़कों के साथ मिलकर उस ने किसी बाग से केले चुराए थे । भगतजी ने पुत्र को समीप बैठाकर उपदेश दिया कि चोरी महापाप है और फिर मंदिर के पुजारी पंडितजी से पुराण वंचवाकर चोरी के अपराध का दण्ड सुनवाया कि चोरी करने से मनुष्य नरक में जाता है । यम के गण उसे बार-बार सूली पर चढ़ाते हैं । बारह वर्ष के बालक पदमलाल ने रोमांचित शरीर से वह कथा सुनी और पुजारीजी के बताए नियम से अनेक बार 'विष्णु सहस्रनाम' का पाठ कर प्रायश्चित किया ।

बहुत दिन नहीं बीते थे कि फिर एक दिन भगतजी ने मुनीम से सुना कि पदमलाल छिप-छिपकर सिगरेट पीता है । पूछने पर वह पिता की नाराजी और मार के डर से इनकार कर गया । उसे सिगरेट पीने का प्रलोभन इसलिए हुआ था कि मना की जाने वाली इस चीज को जो लोग पीते हैं, वे किसी से डरते नहीं—उस में क्या आनन्द है, वह उस कौतूहल को दमन न कर सका ।

पुजारीजी ने पदमलाल को गरुड़ पुराण से नशा करने के अपराध के दण्ड की कथा सुनाई । उसे गोमूत्र चखाकर प्रायश्चित कराया गया । 'विष्णु सहस्रनाम' का जाप करने के लिए उसे नित्य सायं-प्रातः मंदिर में बिठा दिया जाता । जप करते समय वह सोचता रहता—उस ने वह काम किया है जिस से उस के पिता और दूसरे लोग डरते हैं । नरक में यम के गण खौलता हुआ सीसा उस के मुख में डालेंगे । अनेक बार सोच-सोच कर उस ने मन में निश्चय किया—अब ऐसा होना ही है तो वह क्या करे !

घर में पिता का भय, मन में भगवान का भय और स्कूल में मास्टर के बेंत का भय···पदमलाल को जीवन असह्य जान पड़ने लगा । उसे सान्त्वना ऐसे लोगों की संगति से मिलती जो भय की चिंता न कर मन की उमंग से चलते थे, हर दांव पर बाजी लगाने के लिए तैयार रहते थे । स्कूल से वह प्राय गायब हो जहां-तहां घूमा करता । परीक्षा में पास होने की न उसे चिंता थी और न कोई आवश्यकता ही जान पड़ती । भगतजी ने स्कूल की शिक्षा को न धर्म के लिए और न व्यवसाय के लिए ही विशेष उपयोगी समझा । नवीं श्रेणी से पुत्र का स्कूल छुड़ा दिया । उसे दुकान की गद्दी पर बैठने का आदेश हुआ कि व्यवसाय की शिक्षा पाए । नश्वर संसार की यथेष्ट माया बटोर लेने के पश्चात् भगतजी ने जाना कि अन्त में सत्य केवल एक परलोक ही है । पुत्र के लिए संसार की माया संचय कर देने के साथ उन्हों ने उस के परलोक की भी चिन्ता

की। पदमलाल की रुचि पाप से हटाकर धर्म की ओर करने के लिए भगतजी ने लक्ष्मीनारायणजी के सिंहासन की परिक्रमा के स्थान में दीवारों पर स्वर्ग-नरक में मिलने वाले पुण्य और पाप के परिणामों के चित्र अंकित करवा दिए।

पदमलाल का मन्दिर में पूजा के लिए प्रातः-संध्या जाना आवश्यक था। परिक्रमा के समय वह दीवारों पर बने चित्रों में देखता कि विष्णु के गण पुण्यात्माओं को पालकियों में बिठाकर उन पर चंवर डुलाते हुए स्वर्गधाम ले जा रहे हैं। स्वर्ग की अप्सराएं देवताओं और धर्मात्माओं को अमृत के पात्र अर्पण कर उन्हें रिझाने के लिए उन के सामने नृत्य कर रही हैं। समीप ही वह पाप के फल नरक के दृश्य देखता। यम के गणों के माथे पर सींग उगे हैं और उन के मुख से हाथ-भर लंबी जिह्वा लटक रही है। वे चोरी करने वाले पापी को सूली पर चढ़ा रहे हैं। जुआ खेलने वाले को ऊखल में डालकर कूट रहे हैं। शराब और दूसरे नशे पीने वालों के मुख में खौलता हुआ सीसा उंडेल रहे हैं। परस्त्री-गमन करने वाले को आरे से चीर रहे हैं। किसी दूसरे अपराधी को भट्ठी में झोंक रहे हैं।

इन भयंकर दृश्यों को देख पदमलाल का मन दहल जाता। कुछ मास तक वह ऐसे रहा जैसे बिल्ली को देखकर कबूतर सहम जाता है। पुजारीजी ने पदमलाल को उपदेश दिया था कि कठोर तपस्या से मनुष्य की देह मिलती है और पापों के फल से मनुष्य चौरासी लाख योनियों में दुख भोगता है। कुछ दिन इस आतंक की अवस्था में उसने घर से निकलना छोड़ दिया। उसे सब ओर पाप दिखाई देता था और धर्म था केवल भय में! कुछ दिन में धर्म का यह आतंक निर्बल हो पदमलाल के मन से ऐसे उड़ने लगा जैसे कच्चा रंग धूप में फीका पड़ जाता है। जिस ओर भी उसका मन आकर्षित होता, उसी ओर पाप का भय था, परन्तु सम्पूर्ण संसार उसी ओर बहा जा रहा था। अपने मन में पाप के प्रति बैठे भय से उसे ग्लानि होने लगी। 'देखा जायगा!' उसने मन में निश्चय किया। समाज की निन्दा भी उसे एक प्रकार का भय ही जान पड़ा। इस भय को ठुकराने के लिये निन्दा पाने वालों के प्रति वह अपमान अनुभव करने लगा।

भगतजी ने पदमलाल का विवाह खूब धूमधाम से किया था। बेटे के विवाह के पश्चात् उन्हें यत्न से कमाए परलोक की ओर शीघ्र ही चले जाने की इच्छा न थी पर चल ही देना पड़ा। पिता का भय सिर से उठ जाने के

बाद पदमलाल को भय और चिन्ता से चिढ़ हो गई। तीन हजार रुपया माहवार की आमदनी रखने वाले उच्छृङ्खल व्यक्ति के लिए पाप में सहायक बनने वालों की कमी न थी। नशे उसने सभी चखे। किसी से पीछे न रहने और न दबने का उसे गर्व था। भाग्य के सम्मुख भी सीना तान कर परास्त न होने के अभिमान में वह जुए के अखाड़े में भी आगे रहता। पुरुष के लिए उन्माद और सामर्थ्य की चरम साधना है नारी! उसमें बंधन और सीमा क्या?

भगतजी की प्रवृत्ति संचय की ओर थी। उन्होंने इस लोक के लिए माया और परलोक के लिए पुण्य दोनों का ही संचय यथेष्ट किया था। इस संचय से उन्हें सुख होता और उसी में वे अपनी शक्ति अनुभव करते थे। स्वयं मारकीन के धोती-कुरते से शरीर ढक और एक मुट्ठी मोटा चावल खाकर भी चार चालों की सम्पत्ति और बाजार में फैली लाखों रुपए की सम्पत्ति का स्वामित्व उन्हें संतोष देता था। पैसे को उपयोग में लाने के लिए उसे हाथ से दे देने की अपेक्षा पैसे की शक्ति को अनुभव करते रहना ही उनके लिए सुख का कारण था। पदमलाल उस पैसे के उपयोग से सुख का अनुभव करता था। और यह उपयोग केवल निर्वाह-मात्र के लिए बूंद-बूंद के रूप में नहीं, एक धारा के रूप में वह देखना चाहता था, जो रुकती नहीं, बाधाओं को गिरा देती है। पदमलाल के अधिकार में आ उसकी सम्पत्ति का बढ़ना रुक गया। उसकी सम्पत्ति और व्यवसाय जितना कमा सकते थे, उतना वह खर्च कर देता। अवसर पड़ने पर उससे आगे बढ़ जाने में भी उसे संकोच न होता।

बाधा उसे सह्य न थी। निर्बाध और निर्भय हो वह समाज के लिए भय का कारण बन गया। यहां तक कि भारत सरकार की सर्वशक्तिमान, प्रतिनिधि पुलिस का भी साहस न था कि पदमलाल को गाजर-मूली की भांति उखाड़ फेंक देती।

एक दिन गीता के साथ कालेज में पढ़ने वाली एक लड़की बहुत बढ़िया जम्पर पहन कर आई थी। उस कपड़े पर गीता का मन आ गया। मां से बहुत जिद करके कालेज जाते समय वह पांच रुपये लेकर गई कि उस लड़की के साथ जाकर जम्पर का कपड़ा खरीदेगी। कालेज में उस दिन कुछ लोग आए थे और लड़के-लड़कियों से हड़ताल के कारण भूखे मरते मजदूरों की सहायता के लिए चंदा मांग रहे थे। उन्होंने मालिकों के जुल्म से मजदूरों के हड़ताल करने और

मजदूरों की दयनीय अवस्था की कहानी सुनाई। बहुत-से लड़के-लड़कियों ने थोड़ा-बहुत दिया। गीता का मन मजदूरों की व्यथा सुनकर पिघल गया। उसने मां से पाए पांचों रुपये दान देकर रसीद ले ली। बढ़िया जम्पर वह न पहन सकी परन्तु उसे खेद न हुआ। फिर जम्पर की बात भी मन में न आई।

गीता उस घटना के बाद कालेज में राजनीतिक बातें करने वाले लोगों से मिलने-जुलने और उनकी बातें सुनने लगी। अब तक गीता कालेज की पुस्तक इसलिए पढ़ती थी कि परीक्षा में अच्छे नम्बर पाकर पास हो सके या कभी कोई कहानी-उपन्यास हाथ लगा तो विनोद के लिए पढ़ लिया। इस नई संगति से जानने की इच्छा पैदा हुई, कहां क्या हो रहा है, क्यों हो रहा है, क्या होना चाहिए ? वह अनुभव करने लगी कि वह बहुत-सी ऐसी बातें जान रही थी जो दूसरे लोग नहीं जानते थे। यह संतोष बढ़िया जम्पर या अच्छा गहना पहनने से कम न था। वह चिन्ता से माथे पर हाथ रख कर अपने साथियों से बहस करने लगती—'भारत इतना बड़ा देश है, यहां की जनसंख्या इतनी अधिक है; फिर वह छोटे-से देश इंगलैंड के अधीन क्यों है ? सब पदार्थ और धन श्रम से ही पैदा होते हैं, फिर समाज में श्रम करने वालों की ही अवस्था सब से बुरी क्यों है ? मजदूरों को पदार्थों के बनाने की मजदूरी बहुत कम मिलती है और बाजार में उस वस्तु का दाम काफी अधिक रहता है। यह अन्तर ही मालिक का मुनाफा और मजदूर का शोषण है। मुनाफा कमाने के लिए ही पूंजीपति व्यवसाय और मजदूरों पर अधिकार जमाता है और फिर व्यवसाय का क्षेत्र बढ़ाने के लिए दूसरे देशों पर अधिकार, अर्थात् साम्राज्यवाद……!' जानने के संतोष से आया मानसिक परिवर्तन गीता के व्यवहार में भी प्रकट होने लगा। वह अपनी आयु से अधिक गम्भीरता और अधिकार से बात करने लगी। संकोच और लज्जा का स्थान आत्मविश्वास और साहस ने ले लिया। वह अपने-आपको सुन्दर लड़की न समझ एक व्यक्ति समझने लगी।

आयु बढ़ने से लड़के अपनी रक्षा और चिन्ता स्वयं करने योग्य हो जाते हैं। लड़कियों के सम्बन्ध में धारणा इसके विरुद्ध होती है। यौवन में कदम रखने पर उनके लिए रक्षा और पहरेदारी की जरूरत अधिक समझी जाती है परन्तु उन्नीस-बीस वर्ष की अवस्था में गीता का व्यवहार दूसरा ही था। पहले वह देशसेविका (कांग्रेस की स्वयंसेविका) बनी, फिर कम्युनिस्टों के प्रभाव में आकर कांग्रेस के जलसों और सिनेमा के सामने पार्टी का अखबार बेचने लगी।

बाद पदमलाल को भय और चिन्ता से चिढ़ हो गई। तीन हजार रुपया माहवार की आमदनी रखने वाले उच्छृङ्खल व्यक्ति के लिए पाप में सहायक बनने वालों की कमी न थी। नशे उसने सभी चखे। किसी से पीछे न रहने और न दबने का उसे गर्व था। भाग्य के सम्मुख भी सीना तान कर परास्त न होने के अभिमान में वह जुए के अखाड़े में भी आगे रहता। पुरुष के लिए उन्माद और सामर्थ्य की चरम साधना है नारी! उसमें बंधन और सीमा क्या?

भगतजी की प्रवृत्ति संचय की ओर थी। उन्होंने इस लोक के लिए माया और परलोक के लिए पुण्य दोनों का ही संचय यथेष्ट किया था। इस संचय से उन्हें सुख होता और उसी में वे अपनी शक्ति अनुभव करते थे। स्वयं मारकीन के धोती-कुरते से शरीर ढक और एक मुट्ठी मोटा चावल खाकर भी चार चालों की सम्पत्ति और बाजार में फैली लाखों रुपए की सम्पत्ति का स्वामित्व उन्हें संतोष देता था। पैसे को उपयोग में लाने के लिए उसे हाथ से दे देने की अपेक्षा पैसे की शक्ति को अनुभव करते रहना ही उनके लिए सुख का कारण था। पदमलाल उस पैसे के उपयोग से सुख का अनुभव करता था। और यह उपयोग केवल निर्वाह-मात्र के लिए बूंद-बूंद के रूप में नहीं, एक धारा के रूप में वह देखना चाहता था, जो रुकती नहीं, बाधाओं को गिरा देती है। पदमलाल के अधिकार में आ उसकी सम्पत्ति का बढ़ना रुक गया। उसकी सम्पत्ति और व्यवसाय जितना कमा सकते थे, उतना वह खर्च कर देता। अवसर पड़ने पर उससे आगे बढ़ जाने में भी उसे संकोच न होता।

बाधा उसे सह्य न थी। निर्बाध और निर्भय हो वह समाज के लिए भय का कारण बन गया। यहां तक कि भारत सरकार की सर्वशक्तिमान, प्रतिनिधि पुलिस का भी साहस न था कि पदमलाल को गाजर-मूली की भांति उखाड़ फेंक देती।

एक दिन गीता के साथ कालेज में पढ़ने वाली एक लड़की बहुत बढ़िया जम्पर पहन कर आई थी। उस कपड़े पर गीता का मन आ गया। मां से बहुत जिद करके कालेज जाते समय वह पांच रुपये लेकर गई कि उस लड़की के साथ जाकर जम्पर का कपड़ा खरीदेगी। कालेज में उस दिन कुछ लोग आए थे और लड़के-लड़कियों से हड़ताल के कारण भूखे मरते मजदूरों की सहायता के लिए चंदा मांग रहे थे। उन्होंने मालिकों के जुल्म से मजदूरों के हड़ताल करने और

मजदूरों की दयनीथ अवस्था की कहानी सुनाई। बहुत-से लड़के-लड़कियों ने थोड़ा-बहुत दिया। गीता का मन मजदूरों की व्यथा सुनकर पिघल गया। उसने मां से पाए पांचों रुपये दान देकर रसीद ले ली। बढ़िया जम्पर वह न पहन सकी परन्तु उसे खेद न हुआ। फिर जम्पर की बात भी मन में न आई।

गीता उस घटना के बाद कालेज में राजनीतिक बातें करने वाले लोगों से मिलने-जुलने और उनकी बातें सुनने लगी। अब तक गीता कालेज की पुस्तक इसलिए पढ़ती थी कि परीक्षा में अच्छे नम्बर पाकर पास हो सके या कभी कोई कहानी-उपन्यास हाथ लगा तो विनोद के लिए पढ़ लिया। इस नई संगति से जानने की इच्छा पैदा हुई, कहां क्या हो रहा है, क्यों हो रहा है, क्या होना चाहिए? वह अनुभव करने लगी कि वह बहुत-सी ऐसी बातें जान रही थी जो दूसरे लोग नहीं जानते थे। यह संतोष बढ़िया जम्पर या अच्छा गहना पहनने से कम न था। वह चिन्ता से माथे पर हाथ रख कर अपने साथियों से बहस करने लगती—'भारत इतना बड़ा देश है, यहां की जनसंख्या इतनी अधिक है; फिर वह छोटे-से देश इंगलैंड के अधीन क्यों है? सब पदार्थ और धन श्रम से ही पैदा होते हैं, फिर समाज में श्रम करने वालों की ही अवस्था सब से बुरी क्यों है? मजदूरों को पदार्थों के बनाने की मजदूरी बहुत कम मिलती है और बाजार में उस वस्तु का दाम काफी अधिक रहता है। यह अन्तर ही मालिक का मुनाफा और मजदूर का शोषण है। मुनाफा कमाने के लिए ही पूंजीपति व्यवसाय और मजदूरों पर अधिकार जमाता है और फिर व्यवसाय का क्षेत्र बढ़ाने के लिए दूसरे देशों पर अधिकार, अर्थात् साम्राज्यवाद……!' जानने के संतोष से आया मानसिक परिवर्तन गीता के व्यवहार में भी प्रकट होने लगा। वह अपनी आयु से अधिक गम्भीरता और अधिकार से बात करने लगी। संकोच और लज्जा का स्थान आत्मविश्वास और साहस ने ले लिया। वह अपने-आपको सुन्दर लड़की न समझ एक व्यक्ति समझने लगी।

आयु बढ़ने से लड़के अपनी रक्षा और चिन्ता स्वयं करने योग्य हो जाते हैं। लड़कियों के सम्बन्ध में धारणा इसके विरुद्ध होती है। यौवन में कदम रखने पर उनके लिए रक्षा और पहरेदारी की जरूरत अधिक समझी जाती है परन्तु उन्नीस-बीस वर्ष की अवस्था में गीता का व्यवहार दूसरा ही था। पहले वह देशसेविका (कांग्रेस की स्वयंसेविका) बनी, फिर कम्युनिस्टों के प्रभाव में आकर कांग्रेस के जलसों और सिनेमा के सामने पार्टी का अखबार बेचने लगी।

भीड़-भड़क्के में उसने कई बार मजाक और बोली-ठोली सुनी। मन में क्रोध भी आया और हंसी भी आई। उपाय भी था केवल उपेक्षा। सोचा, जो लोग अनजान और मूर्ख हैं, उनकी टुचकारियों से परास्त हो जाय ? जिसे देश को स्वतन्त्र कराने और संसार से पूंजीवाद और साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकने के काम में सहयोग देना हो, वह भला ऐसे लोगों से परास्त हो जाए ?

कामरेड लोगों ने अपने काम में गीता की सहानुभूति देखकर एक पर एक फंदा उस पर डालना आरंभ किया। पहले उसे चुपके-चुपके पार्टी का साहित्य बेचने को कहा—इतनी बड़ी सरकार जिस पार्टी को कुचल डालने के लिये परेशान थी उसकी सहायता के लिए कुछ कर सकने का संतोप गीता के लिए साधारण वस्तु न थी। फिर उन्होंने उससे अखबार बिकवाया और अब पार्टी के लिए चन्दा इकट्ठा करने के लिए उसके पीछे पड़े थे।

"भाई, यह भीख मांगने का काम हमसे नहीं होता !" संकोच और बेबसी से गीता ने कहा।

मेघनाथ अपनी खद्दर की पतलून की जेब में बायां हाथ धंसाकर और दायें हाथ से माथे पर लटक आए केशों को समेटते हुए बोल उठा, "यह बूर्जुआ स्नॉबरी (भद्र-श्रेणी का अहंकार) है। जब पार्टी के लिए नीड है (उद्देश्य के लिए आवश्यकता है) तो इसमें किसी की पर्सनल इंसल्ट या व्यक्तिगत अपमान का सवाल क्या ? आई कैन गो विद यू (मैं तुम्हारे साथ चलने के लिए तैयार हूं)।" गीता झेंप गई।

गिरगांव में पार्टी की शाखा 'गोल्ड वर्कर्स यूनियन' का सेक्रेटरी मजहर पेंसिल से कागज पर कुछ लिख रहा था। मेघनाथ की बात उसके कान में पड़ी। उससे सन्तुष्ट न हो कागज एक ओर रख वह अंग्रेजी में बोला, "देखो कामरेड, देश की जनता की स्वतंत्रता, उसके लिये आत्मनिर्णय का अधिकार यह सब क्या तुम्हारे लिये दिल-बहलावे का ही काम है ? मन चाहा फुर्सत हुई, कर लिया; न हुई न सही ! पार्टी है क्या ? मेरा और तुम्हारा संगठित रूप से कर्तव्य को पहचान कर उसके लिये प्रयत्न करना ही पार्टी का अस्तित्व है। ऐसी अवस्था में पार्टी के काम को पसन्द करना या न करना, उससे संकोच या अपमान अनुभव करने का अर्थ क्या ? तुम्हारी व्यक्तिगत पसन्द और जनहित में विरोध है ! इस का अर्थ केवल यह है कि तुम्हारी समझ या पसन्द गलत है। समझती हो ?"

मजहर का स्वर आवेश से ऊंचा हो गया। पेंसिल उठाकर उस ने कहा,

"सही राजनीतिक मार्ग को केवल स्वयं समझ लेना ही काफी नहीं। जनता को समझाना भी जरूरी है। राष्ट्रीय समस्या एक व्यक्ति की समझ और प्रयत्न से हल नहीं हो सकती। यदि ऐसा सम्भव होता तो महात्मा गांधी मुझ से और तुम से बहुत बड़े हैं, उन के उपवास से स्वराज्य मिल गया होता। समझती हो? आज पार्टी के लिए अग्नि-परीक्षा का समय है। ब्रिटिश साम्राज्यशाही के दमन का मुकाबला करना आसान था। आज उस से भी विकट स्थिति सामने है। हम जनता के अविश्वास और भ्रम की उपेक्षा नहीं कर सकते। उस के लिए ही तो हमारा प्रयत्न और जीवन है। समझती हो? आज कांग्रेस की पूंजीवादी नेताशाही हम से चिढ़ी हुई है।

"उन्हों ने देख लिया कि १९४२ में हमारी चेतावनी की उपेक्षा करके जिस कार्यक्रम को उन्हों ने अपनाया था, वह असफल हुआ। वे अपनी नीति और कार्यक्रम की असम्बद्धताओं और असफलताओं की ओर से जनता का ध्यान हटाने के लिए हमें गद्दार कहकर जनता को हमारे विरुद्ध उभार रहे हैं। वे कल तक जेल में बैठे जिस आन्दोलन की जिम्मेवारी लेने से इन्कार कर रहे थे, आज जनता को फुसलाने के लिए वे उसी आन्दोलन को बड़े-बड़े नामों से पुकार रहे हैं। अपनी अदूरदर्शिता से असफल हुए आन्दोलन की सफलता का कारण वे हमारी गद्दारी बता रहे हैं। यदि १९४२ में हमने साहस और जीवट से काम लिया था तो आज उस से अधिक साहस और जीवट की आवश्यकता है। ऐसे समय किसी भी प्रकार की उपेक्षा और शिथिलता जनता के प्रति विश्वासघात है। समझी?" मजहर ने हाथ की पेंसिल गीता की नाक के सम्मुख कर दी। गीता संकुचित-सी निरुत्तर और निश्चल बैठी रही। पार्टी के चन्दे की रसीद-कापी मांग उस ने बटुए में रख ली।

गीता चलने के लिए उठी तो मेघनाथ ने उसे टोक दिया, "एक मिनट······ ठहरो मैं भी चलता हूं।"

"मुझे एक दूसरी जगह जाना है।" गीता ने उत्तर दिया और चल दी।

गीता को मेघनाथ का चिपकना भला न लगता था। बातें सब वह भी वैसी ही करता था—मास्सफोर्स प्रोलिटेरियट, पैट्रियोटिक ड्यूटी, सेल्फ-डिटर्मिनेशन, ऐंटी-इम्पिरियलिस्ट, आर्गेनाइज्ड वर्किंग-क्लास एंड पेजेण्ट्री—जैसे मजहर, श्रीनिवास, रंगा और यूनियन के दूसरे कामरेड करते थे परन्तु उस के चेहरे पर स्वयं ली हुई जिम्मेदारी और गरूर की गम्भीरता में गीता को बनावट जान

पड़ती। कुछ ऐसा अनुभव होता कि वह बेमतलब ही उस के निकट आने की चेष्टा करता है। उस के चेहरे पर बरसाती मेंढक जैसे पीलेपन और व्यवहार की नजाकत से गीता को खीझ-सी उठती थी। इस के विपरीत श्रीनिवास की बात में तर्क तो नहीं केवल धमकी रहती थी, हर बात में रूखापन। वैसे ही पद्मा मालेकर भी थी। चेहरा और कपड़े स्त्रियों के लेकिन व्यवहार बिलकुल मर्दों जैसा। ऐसा ही बहुत कुछ कटु और मधुर गीता को पार्टी के दायरे में मिलता था। इस सब को छोड़ देना भी गीता के लिए सम्भव न था। इस सीमा से बाहर वह अपना व्यक्तित्व, और कुछ कर पाने का संतोष कहां अनुभव कर सकती थी ?

गीता साथियों के तर्क से परास्त होकर और कर्तव्य मान कर परिचितों में पार्टी के लिए चन्दा मांगने गई। कहीं दो घण्टे बहस करने के बाद दो रुपये मिलते और अनेक जगह लोग टालने के लिए अप्रासंगिक बातों पर बहस करने लगते। वह उन का अभिप्राय समझकर स्वयं संकुचित हो जाती। आखिर जबर-दस्ती किसी से कैसे रुपया छीन ले ? वह मन में सोचने लगी, न जाने दूसरे साथी कैसे रुपया मांग लाते हैं। इस से तो अच्छा हो उस की ड्यूटी लेबर-फ्रंट (मजदूर-संगठन) पर लग जाए ! दिसम्बर के आरम्भ से असेम्बली की मजदूर सीट के लिए पार्टी की ओर से चुनाव का काम आरम्भ हो गया था। मजदूर मोर्चे पर काम अधिक था। कई बार उसे वहां जाना भी पड़ा। उस ने मजहर से अपनी इच्छा प्रकट की और वह मजदूर मोर्चे पर जाने भी लगी।

गीता दिन-भर घर से उड़ी रहकर पार्टी का साहित्य बेचती और चन्दा मांगती। वह रिसर्च-स्कालर थी, इसलिए कालेज जाना केवल नाम को था। जगह-जगह उसे अनेक प्रकार का व्यवहार मिलता, अनेक प्रकार के उत्तर मिलते। वह निराशा और खिन्नता का जी-जान से सामना कर रही थी। प्रति शनिवार दोपहर के बाद गीता पार्टी के दफ्तर जाती थी। उस दिन पार्टी का साप्ताहिक पत्र 'जनयुग' केन्द्रीय दफ्तर से छपकर आता था। पिछले सप्ताह की कापियों का हिसाब देकर, नई कापियां लेती और चन्दा भी जो कुछ मिला होता दे आती। चन्दे का हिसाब था मजहर के हाथ में और अखबार का हिसाब मेघनाथ रखता था।

"कामरेड, इस दफे 'जनयुग' की नौ कापियां कम बिकीं, क्या बात है ?"

मुस्कराकर मेघनाथ ने पूछा। उस का मुस्कराना गीता को भला न लगता था इसलिए उस ओर देखे विना उत्तर दिया, "भाई, बड़ा झंझट है। ये नौ कापियां देने के लिए फोर्ट का चक्कर लगाना पड़ता है। अठारह आने मिलते हैं और हमारी जेब से आठ आने निकल जाते हैं।"

"लेकिन···" मेघनाथ उत्तर देना चाहता था परन्तु मजहर जो समीप बैठा कागजों पर सिर झुकाए था, बोल उठा, "व्हाट (क्या) ? यह बनिये का बिजनेस है क्या ? नौ जगह पार्टी का मैसेज पहुंचता है, उस का कुछ मूल्य नहीं; क्या बात किया करती हो कामरेड ?····" वह गीता की चन्दे की कापी पलट कर हिसाब गिन रहा था, "ये नौ रुपये चौदह आने कैसे ?"

"दस रुपये का नोट था," गीता ने उत्तर दिया, "एक कापी अखबार की बेची थी। चेंज पूरा नहीं निकला। भले आदमी ने नौ रुपये चौदह आने की रसीद ले ली।"

मजहर उस रसीद को ध्यान से देख रहा था। हाथ में थमी पेंसिल से सिर खुजाकर बोला, "पदमलाल भावरिया···ये···ये तो बड़े हजरत हैं! कहां मिल गया तुम्हें ? कैसे दे दिया इसने ?"

गीता ने थकावट से फर्श पर बांह टेककर उत्तर दिया, "होंगे! शायद मजाक ही करने आए थे। चेंज नहीं था तो कहने लगे, रहने दीजिए, आप की नजर है। हमने रसीद काट दी।"

मजहर, रंगा और दूसरे साथी जोर से हंस दिए परन्तु मेघनाथ ने गम्भीरता से कहा, "ऐसे नहीं लेना चाहिए। इस से पार्टी के बारे में लोगों का क्या ख्याल होगा ?"

"साले को चप्पल से नहीं मारा ?" श्रीनिवास ने पूछा;

"ऊंह, बाजार में तमाशा बनने से क्या फायदा ? बम्बई ऐसे शौकीनों से भरा पड़ा है।" गीता नेउपेक्षा से उत्तर दिया।

"बड़े हजरत हैं ये! ······पदम भावरिया मशहूर गुण्डा है, लखपति गुंडा!" मजहर ने कहा, "स्कूल में हम लोगों के साथ पढ़ता था। बाप इन के भगतजी मशहूर थे। बेटा गुण्डागीरी में नाम कमा रहे हैं। इस से बचकर रहना। खराब आदमी है। जो न कर जाए वही गनीमत है!"

गीता चुप सुन रही थी। रंगा बोल उठा, "यह क्या ? उस से कांटेक्ट बनाओ जी! ··पार्टी का सिम्पेथाइजर बनाओ। इस के जरिये है। पार्टी की

INSTITUTE OF ASIA
Acc. No. 46783
Date........

सहायता भी कर सकता है।"

"धत्!" गीता ने मुंह बनाकर कहा।

"धत् क्या?" रंगा का स्वर ऊंचा हो गया, "जिस बात से पार्टी को सहायता हो उस में धत् क्या? गर्ल्स कैन मेक कांटेक्टस ईजीली (लड़कियों के लिए परिचय या सम्बन्ध बनाना ज्यादा आसान है)।"

"वाह जी!" गीता का स्वर तीखा हो गया, "लड़की का कुछ सेल्फ-रिस्पेक्ट (आत्मसम्मान) भी तो होता है।"

रंगा ने विरोध में हाथ उठाया, "दिस इज बूर्जुआ एण्ड कैपिटेलिस्ट कंस्पेशन आफ मोरेलिटी (यह केवल पूंजीवाद और मध्यवर्ग की आचार-धारणा है)।"

"तो क्या लड़कियां पार्टी के लिए अपने-आप को बेचती फिरें?" चिढ़कर गीता ने अंग्रेजी में पूछा।

अनीमा ने भी अंग्रेजी में ही विरोध किया, "परिचय बढ़ाना या मित्रता करना अपने-आप को बेचना नहीं है।"

"जरूर है," गीता ने अखबारों की गड्डी पर हाथ मारकर अंग्रेजी में कहा, "जरूर है! यदि आप परिचित और मित्र से फायदा उठाएं तो यह जरूर अपने-आप को बेचना ही है, और कुछ नहीं तो अपनी संगति का मूल्य वसूल करना है। इस में आत्मसम्मान क्या है?"

मजहर से न रहा गया। उस ने भी अंग्रेजी में ही कहा, "आत्मसम्मान···!" एक मजदूर कामरेड, जो पार्टी का मराठी अखबार अपने पड़ोस में बेचता था, इस अंग्रेजी से उकता गया। हाथ के अखबार फर्श पर पटक वह क्रोध में चिल्ला उठा, "क्या देश का स्वराज लेगा तुम लोग! तुम्हारा तो दिमाग मांझे इंगरेजी, जबान इंगरेजी, हर बात इंगरेजी!" उस ने अभियोग के भाव से मजहर की ओर घूमकर देखा।

मजहर ने मजदूर कामरेड की पीठ पर हाथ रख उत्तर दिया, "इसमें नाराज होने की क्या बात है कामरेड? दस जगह का आदमी इकट्ठा होता है, एक-दूसरे की भाषा भी नहीं जानता तो क्या होगा? अंग्रेज ने अपने मतलब से सब हिन्दुस्तान को अंग्रेजी में बांधकर एक कर दिया। हम भी उससे अपना मतलब निकालते हैं। देखो भाई, कांग्रेस में भी तो अंग्रेजी चलता है लेकिन तुमारा जैसा साथी रोज-रोज चपत चलाएगा तो सबको अकल हो जाएगा। चुप रहेगा तो कुछ नहीं होगा।"

मजदूर कामरेड को संतुष्ट कर मजहर ने अनीमा और गीता की ओर देखा, "सेल्फ-रेस्पेक्ट या आत्मसम्मान क्या है ? खुद की नजर से इज्जत कि दूसरे के सामने बड़ा होने का घमण्ड ?" वह गुजराती में बोलने लगा, "यदि तुम्हें निश्चय है कि अनुचित काम नहीं कर रही हो तो दूसरों की राय से मतलब ? प्राय: प्रश्न तो रहता है दूसरों की नजर में गिर जाने का। लोग तुम्हें गद्दार कहते हैं तो फिर क्या अपना सही रास्ता छोड़ दोगी ? पूंजीवाद में आचार कुछ नहीं; उसका आधार केवल धन का सम्मान है···।"

मजदूर कामरेड ध्यान से सुन रहा था। बात काटकर मराठी में कहने लगा, "पूंजीवाद में तो पैसे का सम्मान है। ये कितनी मेहतरानियां, कितनी मावली स्त्रियां घुटने से ऊपर धोती का कांछा कसे खुले बदन सड़क साफ करती हैं, मन-मन बोझ टोकरी में ढोती हैं। किसी की आंख में नहीं खटकता, किसी को लज्जा नहीं मालूम होती ! किसी सेठानी की धोती बालिश्त-भर उठ जाए तो बम्बई में आग लग जाए ! तुम अखबार वेचती हो, कांग्रेस के लोग बात बनाते हैं ! सब कुंजड़ियां तरकारी वेचती हैं, किसीके पेट में दर्द नहीं होता, क्यों ?······"

उसे हाथ के संकेत से चुप कराकर मजहर ने शांति से कहा, "हमें इस विषमता का आधार-भूत सिद्धांत समझना चाहिए। सदाचार की भी एक डाय-लेक्टिक्स होती है······।"

गीता ने समझा, अब यह एक घण्टे तक व्याख्यान देगा। झट से बटुआ और अखबार संभाल उठते हुए उसने कहा, "मुझे बहुत देर हो गई। मां से जल्दी लौटने को कह कर आई थी······!"

रास्ते-भर गीता पार्टी दफ्तर में हुए तर्क को अपनी कल्पना में साकार रूप दे, जीवन की घटनाओं के रूप में सोचती रही। घर लौटी तो इतनी उद्विग्न थी कि थकावट जान पड़ी। वह अपने बिस्तर पर लेट फिर कल्पना में उसी तर्क के क्रियात्मक रूप पर उधेड़-बुन करने लगी। छोटा भाई शामू जीने पर धमधम करता आया और फर्श पर जूते पटकता रसोई में पहुंच मां से खाना मांगने लगा। गीता को कुछ मालूम न हुआ। मां ने जीमने के लिए पुकारा। मस्तिष्क विचारों की उद्विग्नता से बेचैन था, मन उठने को न हुआ। उसने कह दिया, "भूख नहीं है।"

जवानी में लड़कियों को भूख न लगने या तबीयत कुछ खराब होने की

शिकायत प्रायः ही होती है परन्तु गीता को ऐसा न होता था । इक्कीस बरस की आयु हो जाने पर भी वह अपने छोटे भाई शामू के साथ 'छोटा गणेश वाड़ी' से पैदल परेल और दादर तक जाने का दम भरती थी । गीता की मां को इस बात का गर्व भी कम न था । बिरादरी में जब कभी उनकी लड़की के इक्कीस बरस तक कुंआरी रहने की चुगली घूम-फिरकर उनके कान तक पहुंचती तो वे उपेक्षा के गर्व से कह देतीं, "भाई, एक ही हाथ की पांच उंगलियां भी एक-सी नहीं होतीं । ठसके हुए बर्तन की तरह सभी की खबरदारी नहीं की जाती···।"

गीता के मुख से 'भूख नहीं' सुन मां के स्वर में चिंता का पुट आ गया, "क्या ? सांझ को जाड़े में फिरी होगी ? कितनी बार तो कह चुकी हूं, सुबह-सांझ की सर्दी से जरा बचकर रहो लेकिन यह तो नगर-नाउन है । शहर-भर की परिक्रमा कर स्वराज्य का अलख जगाए बिना इसे चैन कहां !······क्या हुआ है सिर में······?"

"तुम्हें तो योंही सुपने आने लगते हैं ।······एक जगह गई थी, वहां लोगों ने बहुत कुछ खिला दिया ।" गीता ने उत्तर दिया ।

"हां, हां अकेली मिठाई खाओ ! अच्छा है और तबीयत खराब हो···" शामू बोल उठा ।

मां ने बनावटी क्रोध में थप्पड़ उठा डांट दिया, "खबरदार, गधा कहीं का ! मारूंगी !"

"हां, हां, हमको पैसा नहीं देती हो । बैन को छिपा-छिपाकर देती हो । तभी तो वह सहेलियों के साथ होटलों में दावतें खाती है । हम क्या सौत के बेटे हैं ?"

श्यामू दिखावे का मान करने लगा । गीता जान बचाए चुप लेटी रही । शामू लड़ता रहा, "हां, हम सिनेमा जाएं तो पांच आने में, और बैन को सवा रुपया मिलता है । कमाकर तो हमीं खिलाएंगे । यह तो चल देगी सब कुछ समेटकर······।"

गीता चुप रही । किसी और दिन इस तरह की बात का जवाब दिए बिना न रहती थी और भाई-बहन का झगड़ा होता । आज उसके मन में समा रही थीं, मजहर और रंगा से हुए तर्क की सजीव कल्पनाएं । लड़की या स्त्री का आत्मसम्मान क्या ? सम्मान अपनी दृष्टि में या दूसरों की दृष्टि में गिर जाने का भय ?

अखवार में पढ़ी एक बात उसे याद आ रही थी, जर्मनी में लड़कियों और स्त्रियों ने अपने चुम्बन वेच-वेच कर युद्ध के समय देश की सहायता के लिए रुपया इकट्ठा किया था और जापान की कई स्त्रियों ने वेश्यावृत्ति द्वारा देश की सहायता के लिए धन कमाया था। हम तो ऐसे काम को किसी भी भावना से नहीं सह सकते। क्या यह स्वयं देश और समाज का पतन नहीं है? समाजवादी रूस में क्या ऐसी बात सहन की जा सकेगी—कभी नहीं! परन्तु इस देश में बिना जाने-बूझे पुरुष को पति-रूप से स्वीकार कर लेना क्या स्त्री का आत्मसम्मान है?

कोई स्त्री विवश हो वेश्या बनती है, कोई विवश हो पतिव्रता···। भावरिया गुण्डे ने क्या नौ रुपये चौदह आने उसका मोल दिया था? जैसे कापिला मोजीवाला बनवारी के साथ सिनेमा जाने से इसलिए इनकार न कर सकी कि बनवारी ने उसके भाई की सहायता की थी।······सैलिंग वन्स कम्पनी (अपनी संगति का मूल्य वसूल करना)? पास वैठकर दिल बहलाना, मुस्कराकर खुश करना; हाथ मिलाकर दिल बहलाना या कमर में हाथ डालने देना? प्रयोजन वही है। क्या है स्त्री भी! उसका मूल्य पुरुष को संतोष देने में ही है। यदि अपने संतोष के लिए वह कुछ करे तो मैं उसे बुरा न कहूंगी··· ···अपने संतोष की बात मन में आने पर सहसा मेघनाथ और दूसरे कामरेड दृष्टि के सामने आ गए और फिर उनके वीच गुण्डा भावरिया······खतरनाक! जो चाहे कर गुजरे!

ऐसा मालूम हुआ जैसे बरसाती मेढकों के समूह पर चील आ पड़ी हो।···· भावरिया जो चाहे कर गुजरे! जान पड़ा इस दैत्य का पंजा उस के अपने सम्पूर्ण शरीर से भी बड़ा है और वह उस में छटपटा रही है···"किलक्लिल्लरी बौम!" उस के कान के समीप मुंह कर शामू जोर से चिल्ला दिया।

साधारणतः इस हरकत का उत्तर होता कि गीता एक धौल शामू की पीठ पर जमाती। वह कुछ और उपद्रव करता; परन्तु मन की इस अवस्था में खीज से ऊंहूं कर वह निश्चल रह गई। शामू निरुत्साहित हो दूसरी ओर चला गया और सिनेमा की एक तर्ज गुनगुनाने लगा, "तुम्हीं ने मुझ को प्रेम सिखाया, सोए हुए हृदय को जगाया। तुमी हो रूप-सिंगार बालम!"

गीता बिजली के चकाचौंध प्रकाश से आंखों को बचाने के लिए बांह की ओट किए लेटी रही। उस मानसिक क्षोभ में शामू का गाना जाने क्यों मीठी थपकी जैसा लगा और मन ने यह भी कहा कि यह धोखा है। वह स्त्री और

शिकायत प्रायः ही होती है परन्तु गीता को ऐसा न होता था। इक्कीस वरस की आयु हो जाने पर भी वह अपने छोटे भाई शामू के साथ 'छोटा गणेश वाड़ी' से पैदल परेल और दादर तक जाने का दम भरती थी। गीता की मां को इस बात का गर्व भी कम न था। विरादरी में जब कभी उनकी लड़की के इक्कीस बरस तक कुंआरी रहने की चुगली घूम-फिरकर उनके कान तक पहुंचती तो वे उपेक्षा के गर्व से कह देतीं, "भाई, एक ही हाथ की पांच उंगलियां भी एक-सी नहीं होतीं। ठसके हुए बर्तन की तरह सभी की खबरदारी नहीं की जाती···।"

गीता के मुख से 'भूख नहीं' सुन मां के स्वर में चिंता का पुट आ गया, "क्या ? सांझ को जाड़े में फिरी होगी ? कितनी बार तो कह चुकी हूं, सुबह-सांझ की सर्दी से जरा बचकर रहो लेकिन यह तो नगर-नाउन है। शहर-भर की परिक्रमा कर स्वराज्य का अलख जगाए बिना इसे चैन कहां !······क्या हुआ है सिर में······?"

"तुम्हें तो योंही सुपने आने लगते हैं।······एक जगह गई थी, वहां लोगों ने बहुत कुछ खिला दिया।" गीता ने उत्तर दिया।

"हां, हां अकेली मिठाई खाओ ! अच्छा है और तबीयत खराब हो···" शामू बोल उठा।

मां ने बनावटी क्रोध में थप्पड़ उठा डांट दिया, "खबरदार, गधा कहीं का ! मारूंगी !"

"हां, हां, हमको पैसा नहीं देती हो। बैन को छिपा-छिपाकर देती हो। तभी तो वह सहेलियों के साथ होटलों में दावतें खाती है। हम क्या सौत के बेटे हैं ?"

श्यामू दिखावे का मान करने लगा। गीता जान बचाए चुप लेटी रही। शामू लड़ता रहा, "हां, हम सिनेमा जाएं तो पांच आने में, और बैन को सवा रुपया मिलता है। कमाकर तो हमीं खिलाएंगे। यह तो चल देगी सब कुछ समेटकर······।"

गीता चुप रही। किसी और दिन इस तरह की बात का जवाब दिए बिना न रहती थी और भाई-बहन का झगड़ा होता। आज उसके मन में समा रही थीं, मजहर और रंगा से हुए तर्क की सजीव कल्पनाएं। लड़की या स्त्री का आत्मसम्मान क्या ? सम्मान अपनी दृष्टि में या दूसरों की दृष्टि में गिर जाने का भय ?

अखबार में पढ़ी एक बात उसे याद आ रही थी, जर्मनी में लड़कियों और स्त्रियों ने अपने चुम्बन बेच-बेच कर युद्ध के समय देश की सहायता के लिए रुपया इकट्ठा किया था और जापान की कई स्त्रियों ने वेश्यावृत्ति द्वारा देश की सहायता के लिए धन कमाया था। हम तो ऐसे काम को किसी भी भावना से नहीं सह सकते। क्या यह स्वयं देश और समाज का पतन नहीं है? समाजवादी रूस में क्या ऐसी बात सहन की जा सकेगी—कभी नहीं! परन्तु इस देश में बिना जाने-बूझे पुरुष को पति-रूप से स्वीकार कर लेना क्या स्त्री का आत्म-सम्मान है?

कोई स्त्री विवश हो वेश्या बनती है, कोई विवश हो पतिव्रता···। भावरिया गुण्डे ने क्या नौ रुपये चौदह आने उसका मोल दिया था? जैसे कापिला मोजीवाला बनवारी के साथ सिनेमा जाने से इसलिए इनकार न कर सकी कि बनवारी ने उसके भाई की सहायता की थी।······सैलिंग वन्स कम्पनी (अपनी संगति का मूल्य वसूल करना)? पास बैठकर दिल बहलाना, मुस्कराकर खुश करना; हाथ मिलाकर दिल बहलाना या कमर में हाथ डालने देना? प्रयोजन वही है। क्या है स्त्री भी! उसका मूल्य पुरुष को संतोष देने में ही है। यदि अपने संतोष के लिए वह कुछ करे तो मैं उसे बुरा न कहूंगी······अपने संतोष की बात मन में आने पर सहसा मेघनाथ और दूसरे कामरेड दृष्टि के सामने आ गए और फिर उनके बीच गुण्डा भावरिया······खतरनाक! जो चाहे कर गुजरे!

ऐसा मालूम हुआ जैसे बरसाती मेढकों के समूह पर चील आ पड़ी हो।···· भावरिया जो चाहे कर गुजरे! जान पड़ा इस दैत्य का पंजा उस के अपने सम्पूर्ण शरीर से भी बड़ा है और वह उस में छटपटा रही है···"किलकिलल्लरी बौम!" उस के कान के समीप मुंह कर शामू जोर से चिल्ला दिया।

साधारणतः इस हरकत का उत्तर होता कि गीता एक धौल शामू की पीठ पर जमाती। वह कुछ और उपद्रव करता; परन्तु मन की इस अवस्था में खीज से ऊंहूं कर वह निश्चल रह गई। शामू निरुत्साहित हो दूसरी ओर चला गया और सिनेमा की एक तर्ज गुनगुनाने लगा, "तुम्हीं ने मुझ को प्रेम सिखाया, सोए हुए हृदय को जगाया। तुमी हो रूप-सिंगार बालम!"

गीता बिजली के चकाचौंध प्रकाश से आंखों को बचाने के लिए बांह की ओट किए लेटी रही। उस मानसिक क्षोभ में शामू का गाना जाने क्यों मीठी थपकी जैसा लगा और मन ने यह भी कहा कि यह धोखा है। वह स्त्री और

पुरुष की बात सोच रही थी; पुरुष के चाहने की, उस के संतोष की और स्त्री की कातरता और बेबसी की। बालम के रूप-सिंगार होने की और खूंखार होने की। स्त्री बेबस और कातर क्यों……और क्यों वह इसे सहे जाती है……?

चुनाव का आवेश शहर-भर में फैल रहा था। कांग्रेस के चोटी के लीडरों को बम्बई में बुलाकर स्थान-स्थान पर उन के व्याख्यान कराए जा रहे थे। मुस्लिम क्षेत्र के वोटों के लिए कांग्रेस की लीग से टक्कर थी परन्तु कांग्रेस के नेता लीग से अधिक क्रोध प्रकट कर रहे थे कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति, क्योंकि कम्युनिस्ट लीग की पाकिस्तान की मांग के सिद्धान्त का समर्थन १९४२ से कर रहे थे। कम्युनिस्टों को देशद्रोही, गद्दार और मुस्लिम-लीग के पिट्ठू कहा जाता। चौपाटी के मैदान में होने वाले इन व्याख्यानों से उत्तेजित जनता कम्युनिस्टों को गालियां देती हुई जाती। उत्तेजित जनता चौपाटी के समीप सैण्डहर्स्ट रोड पर कम्युनिस्ट पार्टी के केन्द्रीय दफ्तर पर कई बार ईंट-पत्थरों से हमला कर चुकी थी।

इन परिस्थितियों में गीता भी मन ही मन उत्तेजित हो जाती। कम्युनिस्टों की स्थिति बम्बई के भद्र श्रेणी के इलाकों की अपेक्षा मजदूर क्षेत्रों में मजबूत थी। वहां उन्हें पिटने का डर न था। गीता मन में ग्लानि अनुभव करने लगी—ऐसी अवस्था में शहर का काम छोड़, मजदूर-क्षेत्र में छिपने की कोशिश करना कायरता नहीं तो क्या है ?

तारीख २३ जनवरी को ट्राम और बस की हड़ताल के कारण वह परेल न जा सकी थी। २४ को सुबह ही उस ने समाचार पत्र में कम्युनिस्ट पार्टी के केन्द्रीय दफ्तर पर दंगे का संक्षिप्त समाचार पढ़ा। उसी समय उठ कर वह सैंड-हर्स्ट रोड की ओर चल दी। जो कुछ उस ने पढ़ा था, उस से बहुत अधिक देखा—मुख्य दरवाजे के एक ओर राशन की और दूसरी ओर पार्टी की पुस्तकों की दुकानें जला दी गई थीं। तीसरी मंजिल तक सब जगह आग के चिन्ह थे। खिड़कियों के कांच टूटकर, वे दांत-टूटे मुख की भांति विरूप लग रही थीं। दीवारों पर जगह-जगह आग की कालिख थी और कई जगह आग बुझाने के इंजन के पम्पों से वह कालिख दीवारों पर बह गई थी और जान पड़ता था, मार खाकर मकान फूट-फूटकर रो दिया हो।

गीता ने सुना, साठ साथी बुरी तरह जख्मी हुए थे। किसी की जबड़े की हड्डी टूटी थी, किसी का माथा फटा था और कई लोगों के हाथ-पांव टूट गए

थे। ज्यादा नुकसान प्रेस में हुआ था। उस ने प्रेस में देखा —बड़ी-बड़ी मशीनें टूटी पड़ी थीं। सुना, एक लाख का नुक़सान हुआ था। गीता के मन ने कहा— कितने श्रम से मांगा हुआ रुपया ! मन का आवेश वश में रखने के लिए वह बोल न पाई और होंठ दबाए लौट आई। मन उस का प्रतिहिंसा से जल रहा था ···ये खद्दर के सफेद-सफेद कपड़े पहन कर अहिंसा का उपदेश देने वाले बगुला भगत ! ······पार्टी को चाहिए, अपने मजदूर साथियों की टोलियां ले इन सब के गंजे सिर फुड़वा दे और इन के महलों और दफ्तरों में आग लगवा दे !

दूसरे दिन संध्या वह पार्टी मेम्बरों और सहानुभूति रखने वालों की सभा में परेल गई। सभा में घटना का वर्णन ब्योरे से सुनाया गया। कई साथी उसी की भांति प्रतिहिंसा की आग से जल रहे थे। उन्हों ने खड़े होकर कम्युनिस्टों को गद्दार कहने वाले कांग्रेसी नेताओं पर इस घटना की जिम्मेदारी दे उन्हें भला-बुरा कहा और भविष्य में बदला लेने के कार्यक्रम पर जोर दिया। गीता ने उन का समर्थन किया।

प्रान्तीय कमेटी के तीन मेम्बर भी उपस्थित थे। कामरेड हारे ने अपने ढीले चश्मे को संभाल कर अंग्रेगी में कहा, "मार-पीट से बदला लेने की बात सोचना मूर्खता है। यदि हम ऐसा करेंगे तो शरारत करने वालों की और अंग्रेज सरकार की मंशा पूरी करेंगे। जिस भीड़ ने पार्टी पर हमला किया, उस में सभी तरह के आदमी थे। कौन कह सकता है इस अवसर से लाभ उठाने के लिए मजदूर श्रेणी के विरोधियों ने ही इस उत्पात को विकट रूप न दिया हो ? हमें खुद जाहिल नहीं बनना, जाहिलों की आंख खोलनी है।"

उंगली उठा कर हारे ने पूछा, "अगर हम बदला लेंगे तो क्या होगा ? होगा यह कि कांग्रेस वाले हम से बदला लेंगे और हम फिर उन से बदला लेंगे। अंग्रेजों की पुलिस हम लोगों में शांति स्थापित कराने आएगी। पुलिस से कांग्रेस और हम दोनों ही मार खाएंगे ! यही चाहते हो तुम ?······तुम्हें अंग्रेजों की पुलिस पर कांग्रेस से ज्यादा विश्वास है ?आज कांग्रेस और लीग बेवकूफी करके अंग्रेजों को पंच बना रहे हैं, वही बात हम करें ? कांग्रेस है क्या ? कल हम-तुम कांग्रेस के मेम्बर थे। हमारे मेम्बरी के प्रतिज्ञा पत्र में कांग्रेस मेम्बर होना जरूरी शर्त थी। जितने कांग्रेस मेम्बर हमने बनाए हैं, किसी दूसरी कांग्रेस पार्टी ने नहीं बनाए। हम कांग्रेस को समझा सकते हैं, उसे तोड़ नहीं सकते····।"

गीता और उस की तरह सोचने वाले कामरेडों पर ठण्डा पानी पड़ गया।

प्रान्तीय सेक्रेटरी ने उठकर अपने वक्तव्य में प्रेस को फिर जल्दी से जल्दी ठीक करने के लिए फण्ड के लिए अपील की। कितने ही साथी मेम्बरों ने अपना एक-एक मास का पूरा वेतन दे दिया। कई मजदूरों ने महीने-भर की मजदूरी देने का वायदा किया और कई साथियों ने अपने पास से रकमें दीं। गीता के पास रुपया न था। उस ने गले से लाकेट उतार कर दे दिया। दूसरी लड़की ने चूड़ियां दे दीं। पद्मा मालेकर ने अपना एकमात्र शेष जेवर, सुहाग की कण्ठी उतार दी।

सेक्रेटरी को संतोष नहीं हुआ। उस ने कहा, "यह सब आप का अपना रुपया है। यह दे देना कोई बात नहीं। यह बताइए, आप जनता से मांग कर क्या लाएंगे। जनता को कैसे समझाएंगे कि यह आपस में सिर फोड़ने की नीति स्वतन्त्रता और देश-भक्ति का मार्ग नहीं, गुलामी और देश-द्रोह का मार्ग है। पार्टी के प्रति जनता का भ्रम आप कैसे दूर करेंगे····?"

साथियों ने रकमें बोलनी शुरू कीं। गीता ने दो सौ रुपया इकट्ठा करने के प्रण के साथ भविष्य में सम्पूर्ण समय पार्टी के काम में देने का वायदा किया। एक घण्टे में साढ़े छः हजार। प्रान्तीय सेक्रेटरी ने सूची पढ़कर सुनाई और फिर गम्भीरता से कहा, "साढ़े छः हजार रुपया कुछ भी नहीं है परन्तु मुझे सन्तोष है कि इस तीन सौ की भीड़ में अधिकांश मजदूर, विद्यार्थी और पूरा समय पार्टी को देने वाले लोग हैं, जिन के पास आमदनी का कोई साधन नहीं है। यहां सम्भवतः दो-चार को छोड़ कर कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो तीन सौ रुपया माहवार भी कमाता हो। फिर भी हम साढ़े छः हजार वायदों और नकद के रूप में इकट्ठा कर सके हैं यह हमारे साथियों के दृढ़ निश्चय का प्रमाण है···।"

सेक्रेटरी ने गीता का लाकेट, अनीमा की चूड़ियां, मोजीवाला के कान के कांटे और पद्मा की कण्ठी हाथ में लेकर पूछा, "गर्ल्स कामरेड्स, ये गहने आपने दिए हैं। आप घर जाकर क्या उत्तर देंगी?"

अनीमा ने उत्तर दिया, "कह दूंगी, खो गए।"

गीता ने उत्तर दिया, "मैं कह दूंगी पार्टी को दे दिया है। जो होगा देखा जाएगा।"

मोजीवाला ने भी गीता का समर्थन किया।

सेक्रेटरी ने अनीमा की चूड़ियां लौटाने के लिए उस की ओर बढ़ा दीं, "अगर तुम्हें घर में सच बोलने का साहस नहीं है, तो ये चूड़ियां हम नहीं

लेंगे।" अनीमा का चेहरा लाल हो गया। उस ने खड़ी होकर कहा, "मैं घर में ठीक बात कह दूंगी।" और बैठ गई।

सब साथी खड़े हो गए और मुट्ठियां तान कर अनेक प्रकार के पुरुष और कोमल स्वरों के योग से, कम्युनिस्टों का अन्तर्राष्ट्रीय गीत गाया :

उठ जाग ऐ भूखे बन्दी, अब खींचो लाल तलवार।
कब तक सहोगे भाई, जालिम का अत्याचार॥
तुम्हारे रक्त से रंजित क्रन्दन, अब दस दिश लाया रंग।
ये सौ बरस के बन्धन, एक साथ करेंगे भंग॥
यह अन्तिम जंग है, जिस को जीतेंगे हम एक साथ।
गाओ इंटर - नेशनल, अब स्वतन्त्रता का गान॥

भावरिया पुत्तूलाल, अशफाक पंजाबी, रेवती और सुकुल को अपनी मोटर में लेकर घुड़दौड़ से लौट रहा था। भावरिया ने दांव जीता था इसलिए 'विरेंशीरोल' बार में रुक कर उन लोगों ने एक-एक पेग ह्विस्की ली। उस जगह की चुप्पी और कायदा इन लोगों को भाया नहीं। "यार, यह भी क्या जगह है! ऐसा मालूम होता है जैसे हस्पताल में आ गए हों। न बातचीत न हू-हबक!" पुत्तूलाल बोला।

"हां लाला," पंजाबी ने समर्थन किया, "शराब क्या है, जैसे दवाई पी रहे हों। सेठ, अपने को तो ठर में ही मजा आता है।" आस्तीनें चढ़ाते हुए उसने कहा, "और असली चीज तो है, गांव की खिंची हुई·······क्यों पण्डित? क्या कहने!" भवें टेढ़ी कर उसने सुकुल को सम्बोधन किया।

रेवती को चौपाटी के समीप काम था, इसलिए वे लोग उधर ही चले। प्रसंग था कि भावरिया की जीत मनाने के लिए क्या शुगल हो।

"यारो, फिल्म ही देख डालो!" पंजाबी ने प्रस्ताव किया।

"अमा यार छोड़ो भी!" सुकुल ने टोक दिया।

"मुजरा देखा जाए।" भावरिया ने सुझाया।

"हूं, क्या बाजारू छोकरी?···उतरी हुई जूती! सेठ सब जगह सस्ता देखता है।" पुत्तूलाल बोल उठा, "उस दिन दस रुपया में कालिज की छोकरी मांगता था!··· क्यों पण्डित?" सुकुल से समर्थन पाने के लिए उसने उसकी ओर हाथ बढ़ाया।

भावरिया को बात लग गई । अपनी छंटी हुई मूंछें सहलाकर बोला, "हम दस सौ देते हैं···लाओ, तुम कालिज़ की छोकरी ! बहुत छोकरी लिया है तुमने कालिज की, क्यों ?" पंजाबी ने भावरिया का साथ दिया, "भाई ऐसा न कहो लाला, रुपया खर्च करने में हमारा सेठ किस से पीछे है ?"

"सो तो है भाई ।" सुकुल ने पुत्तूलाल से हाथ मिलाने के बाद पंजाबी का भी समर्थन किया ।

पुत्तूलाल ने भावरिया की खिन्नता का विचार न कर पंजाबी को जवाब दिया, "हम हाथ डालेंगे तो छोकरी कभी निकल नहीं सकती । हम दस रुपया में सौदा नहीं करते मियां ।···शौक फोकट में नहीं होता !"

उस दिन रेस में भावरिया साढ़े तीन हजार जीता था और पुत्तूलाल दो हजार हार आया था । अशफाक और सुकुल का भावरिया की खुशामद करना उसे पसन्द न आया, "हमें भी रेवती भैया के साथ चौपाटी पर उतार दो !" उसने भावरिया की ओर देखे बिना कहा । पंजाबी और सुकुल को साथ लेने के लिए उसने प्रलोभन दिया, "मोमिन के यहां दो पेटी 'रियासती' आई है । क्यों भाई सुकुल, क्यों मियां······चलते हो ?"

भावरिया भी पुत्तूलाल की चिरौरी करने को तैयार न हुआ, "जहां कहो उतार दें ।···चौराहे पर ?" नाके पर आ उसने गाड़ी धीमी कर दी । गाड़ी थमने से पहले पुत्तूलाल ने उंगली से 'बस स्टैण्ड' की ओर भावरिया को दिखा कर कहा, "सेठ, वह खड़ी है सामने !···बस की इन्तजार में । तुम्हारे भाग्य से । जाओ, हो तो जोर आजमा लो ।····न हो सके, हमसे कहना । साली को घर से उठवा कर मंगा देंगे । दोस्त का दिल तो रखेंगे ।" सब लोग पुत्तूलाल के साथ ही उतर गए । भावरिया इस हेठी से होंठ चबाकर रह गया ।

भावरिया ने सामने देखा, बगल में बटुआ दबाए गीता गाड़ी की प्रतीक्षा में बस के अड्डे पर खड़ी थी । चौपाटी के समुद्र पर उतरते सूर्य की किरणें उसके चेहरे पर पड़ उसके गेहुंआ रंग को भड़का रही थीं । समुद्र की चंचल और वेगवान तरंगों की संगति से उच्छृङ्खल हो गई वायु उसकी साड़ी को छीनने के प्रयत्न में शरीर से और सटाकर लिपटाए दे रही थी । इससे शरीर की आकृति की रेखाएं अधिक स्पष्ट हो रही थीं । भावरिया ने पल-भर गहरे सोच में उसकी ओर देखा । औरत की ऐसी मजाल तो न थी कि उसे धत्ता बता जाए; परन्तु गीता ने उस दिन झपाटे से रसीद काट उसे झेंपा दिया था और उसके साथी

भी जाने इस लड़की को क्या समझते हैं।

भावरिया ने मोटर घुमा ली और बस स्टैण्ड पर फुटपाथ के साथ गीता के सामने खड़ी कर दी। खिड़की से झुककर उसने गीता को सम्बोधन किया, "नमस्ते, कहां जाएंगी ?...बस में तो देर होगी। गाड़ी है उधर ही जा रहे हैं... आइये पहुंचा दें।"

गीता ने पहचाना और सकपका गई परन्तु आशंका प्रकट न कर उसने उत्तर दिया, "अभी आ जाएगी बस।...जल्दी नहीं है। आप क्यों तकलीफ करेंगे।"

"नहीं, कुछ तकलीफ नहीं है। उधर ही जा रहे हैं। आपको बस की प्रतीक्षा में देखा।" भावरिया ने गाड़ी का दरवाजा खोल दिया।

असमंजस्य में गीता की आंखों के सामने सड़क और चौपाटी का मैदान समुद्र की लहरों की भांति चंचल हो गया। भावरिया के व्यवहार में कुचेष्टा का कोई संकेत नहीं था। गीता इनकार करे तो किस बात पर ? भय कैसे दिखाए ? "बहुत मेहरबानी है, धन्यवाद !" वह गाड़ी में बैठ गई।

दोनों एक साथ आगे की सीटों पर बैठे थे। दोनों चुप। गीता अब भी सोच रही थी, 'क्यों बैठ गई......आखिर कोई क्या कर लेगा ?' उस के सोचते-सोचते गाड़ी चर्चगेट पर पहुँच गई। भावरिया ने गाड़ी धीमी कर पूछा, "कहां जाइएगा ?"

"जहां चाहे रोक दीजिये। मुझे उधर 'कैपिटल' के पीछे दो एक जगह जाना है। आगे पैदल चली जाऊंगी। कुछ जल्दी नहीं है।" गीता ने उत्तर दिया।

"आज आप अखबार नहीं साथ लाईं ? आप का अखबार बहुत अच्छा था।" भवरिया का चेहरा बिलकुल शान्त और गम्भीर था।

"आप को अच्छा लगा ?" उत्साह से गीता ने उस की ओर देखा, "पढ़िएगा तो दूंगी आप को।"

"कहां पहुंचा दूं ?"

"हमारा मकान तो उधर दूर है फोरास रोड की तरफ। ऐसे ही फिर मिलिएगा तो ले लेंगे। आप को जल्दी नहीं है तो एक प्याला चाय पी लें, यहीं 'पुरोहित' में ? फिर जहां कहिए, गाड़ी में पहुंचा देंगे।"

गीता कह चुकी थी जल्दी नहीं है। इनकार कैसे करती ? उस ने अनुमति

प्रकट की । 'पुरोहित' रेस्तोरां के सामने गाड़ी रोक भावरिया दाहिने दरवाजे से उतरा और गीता के लिए बायां दरवाजा खोल दिया । इस शिष्टता से गीता क्या भय दिखाती ? परन्तु मजहर की बात निरन्तर मन में थी कि भावरिया खतरनाक गुण्डा है । गीता अपना बटुआ बगल में दबाए भावरिया के साथ-साथ चल दी ।

सफेद वेस्ट और पतलून पहने, काली नेकटाई लगाए बाय ने आकर सलाम किया । "प्राइवेट ।" भावरिया ने बाय को उत्तर दिया । उस नई जगह में वह शब्द सुन गीता को कुछ आशंका-सी हुई । उस ने आस-पास नजर दौड़ाई, चारों ओर कुर्सियों पर भले और अमीर व्यापारी बैठे थे । जीने पर लिखा था—'फार फेमिलीज' (परिवारों के लिए) । बाय के पीछे-पीछे वे ऊपर गए, भावरिया एक कोने की मेज की ओर बढ़ा । बाय ने पर्दा खींच दिया । पर्दे के दूसरी ओर ही और भलेमानस भी बैठे थे । अन्तर या दूरी केवल पर्दे की थी ।

कुछ नमकीन और मीठा आया और चांदी की चायदानी में चाय । यों बम्बई में हर चौथी दूकान रेस्तोरां और होटल है । गुजराती, मराठी विश्रामगृहों में और ईरानी रेस्तोरां में गीता ने पचासों दफे चाय पी थी । वहां के कोलाहल, ठोस मजबूत प्याली और कढ़ी हुई गाढ़ी चाय से वह परिचित थी । वहां साथियों से गप्प लगाती या बहस करती हुई वह घण्टे-भर निश्चित बैठी रहती लेकिन अमीर आदमियों के इस होटल की शान्ति में उसे विश्राम न मिल रहा था । स्वयं भावरिया ही उसे उस स्थान पर बेमौका जान पड़ रहा था ।

भावरिया चुप और गम्भीर था । कारण चाहे उस स्थान का कायदा हो या यह नई संगति । स्त्रियों के सम्बन्ध में उस का ज्ञान और अनुभव कम न था परन्तु यह कुछ नये ढंग की लड़की जान पड़ी । उस ने अब तक चालाक स्त्रियां देखी थीं । लुभाने के लिए पहले संकोच और भय दिखाने वाली । जिन की संगति एक सौदा थी और वे उस का अधिक से अधिक मूल्य चाहती थीं । उसे गीता कुछ दूसरे ढंग की जान पड़ी । बांह उठा कर सड़क पर अखबार बेचने वाली, परन्तु ओछा काम करने की दीनता उस में न थी । स्त्री का वैसा संकोच और कातरता जो पुरुष को उस के पुरुषत्व की याद दिलाती है, वह भी नहीं थी । चेहरे पर ऐसा सौन्दर्य भी नहीं कि तस्वीर उतार ले परन्तु देखने को मन जरूर चाहता था । भावरिया मन ही मन दूसरी स्त्रियों से उस की तुलना कर मानसिक दांव-पेच में उलझा हुआ चुप था ।

भावरिया को चुप देख कर गीता ही बोली, "आप का मकान कहां है ? · · आप के यहां क्या रोजगार है" आदि-आदि ।

भावरिया ने भी पूछा, "आप का मकान कहां है ?"

"छोटा गणेश बाड़ी में ।"

"आप कालेज में पढ़ती हैं ?"

"जी हां, और राजनीतिक काम भी करती हूं ।"

"कैसा काम ?"

"जैसे कांग्रेस का काम होता है," अपने उत्तर को स्पष्ट अनुभव न कर उस ने कहा, "हमारे अखबार में जैसी बातें हैं ।"

"कांग्रेस में भावाजी भी बहुत बड़े आदमी हैं । उन के यहां मिलों की एजेंसी है और मूंगफली का बहुत बड़ा काम है । हमारे मिलने वाले हैं ।"

गीता भावाजी के नाम से परिचित थी । अपनी बात स्पष्ट करने के लिए उस ने कहा, "मैं कम्युनिस्ट पार्टी में काम करती हूं ।"

"आजकल भले घरों की बहुत लड़कियां हस्पताल में, दफ्तर में, फौज में काम करती हैं ।" भावरिया ने जानकारी दिखाने के लिए कहा, "आज बहुत लड़कियां रेस देखने आई थीं । आप भी रेस में जाती हैं ?"

"नहीं, कभी नहीं गई ।" मन की हंसी रोक गीता ने उत्तर दिया ।

"रेस में बहुत बड़े-बड़े साहब और मेम लोग आते हैं ।" भावरिया को एक प्रसंग मिल गया और वह उत्साह से सुनाने लगा, " 'ग्रीन प्रिंस' घोड़ा बहुत अच्छा है, 'गायकवाड़' भी अच्छा दौड़ता है । रेस का टोट उसे प्रायः मालूम रहता है । आज उस ने 'सालवी' पर दो विन लगाए थे । साढ़े तीन हजार जीता । ऐसे ही होता है, कभी जीता कभी हारा लेकिन टोट अच्छा मालूम होने से कम हारता है ।"

गीता सिर हिला कर 'हूं-हूं' करती जा रही थी । जैसे कभी शामू जबर्दस्ती उसे अपने फुटबाल के मैच की बात सुनाने लगे और वह बेमन से सुनती जाए । मन से गुण्डे भावरिया का भय उड़ता जा रहा था ।

गीता ने होटल से निकल कर कहा, "अब पैदल ही चली जाऊंगी । दूर नहीं जाना है ।" परन्तु भावरिया ने गाड़ी का दरवाजा खोल पहुंचा देने की इच्छा प्रकट की । गीता फिर बैठ गई ।

"मुझे 'कैपिटल' सिनेमा के पीछे उतार दीजिए ।" गीता ने कहा ।

"आप सिनेमा देखती हैं ?" भावरिया ने पूछा ।

"बहुत कम ! ऐसे ही······कभी !"

इस उत्तर से बात बढ़ाने के लिए भावरिया ने कहा, "अच्छा तो अखबार आप का कैसे मिलेगा ?"

"आप का घर तो बहुत दूर है । डाक से भिजवा देंगे ।······आप का पता लिख लूं ?" गीता ने उस की ओर देखा ।

भावरिया गाड़ी चला रहा था, इसलिए दृष्टि सड़क पर जमाए ही उस ने उत्तर दिया, "डाक से क्या, यहीं कहीं मिलिएगा तब ले लेंगे ! इधर आते ही रहते हैं । यहीं 'पुरोहित' में आइए । चाय पिएंगे और अखबार ले लेंगे ।"

"एक अखबार के लिए इतना खर्च कीजिएगा ?" दो छोटी-छोटी पुस्तकें अपने बटुए से निकाल उस ने भावरिया की ओर बढ़ा दीं, "अभी इन्हें पढ़िए ।"

किताबें ले भावरिया ने उत्तर दिया, "वह चिन्ता न कीजिए । आप को खर्च नहीं पड़ेगा । आप का भी तो कांग्रेस का काम है । कांग्रेस को भी तो चन्दा देना होता है । भावाजी ने हम से कहा, 'तुम्हारे बाजार के जिम्मे पांच हजार है ।' हम ने करवा दिया । यह तो अच्छा ही काम है ।"

गीता ने अगले सोमवार अखबार लेकर संध्या छः बजे 'पुरोहित' में आने की बात मान ली ।

गीता ने सोमवार तक कितनी ही बार भावरिया के विषय में सोचा, वह 'पुरोहित' में उसे अखबार देने और उस के साथ चाय पीने जाए या नहीं । उस के आतंक की जैसी बात थी वैसा व्यवहार नहीं देखा । गुंडे के प्रति घृणा एक सन्देह में बदल गई । यह आदमी क्या इतना उपद्रव करता होगा····क्या सभी से उपद्रव करता होगा ? देखने में तो गम्भीर है और कुछ बातें कैसी बच्चों जैसी करता है ! कुछ लोगों में उस का बहुत प्रभाव होगा··।

वह अपने साथियों से उसकी तुलना करने लगी । उसके साथियों को अपनी विद्या-बुद्धि का भरोसा है । अन्तर्राष्ट्रीय दांव-पेच की बातें करते हैं । जनता को संगठित करके ब्रिटिश साम्राज्यशाही से शक्ति छीन लेने की बातें करते हैं । उनके पीले-पीले चेहरे, रूखी जुल्फें; उन दुर्बल शरीरों से वे कितनी बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, लेकिन गली-बाजार में उन्हें कोई पीट दे तो सिवाय एक वक्तव्य दे सकने के और कुछ नहीं कर सकते परन्तु इस भावरिया के लिये सुना है कि

वीस-पचास आदमियों को जब चाहे पीट दे या पिटवा दे। यों संगठन की बात वह कुछ नहीं जानता। एक प्रकार का मानवी-पशु है। यदि इसे कोई भले काम की ओर लगा सके तो इस की शक्ति उस काम में भी लग सकती है। आखिर है तो मनुष्य ही। अच्छा क्या और बुरा क्या? मजदूर ही क्या सब अच्छे हैं?····ताड़ी पीते हैं, जुआ खेलते हैं और क्या नहीं करते? परन्तु क्या उनके सच्चरित्र बन जाने तक उनकी उपेक्षा की जा सकती है?

सोमवार के दिन गीता तीसरे पहर से 'धोबी तालाब' के आसपास अपने परिचितों के यहां अखबार की कापियां और पार्टी का साहित्य वेचती फिर रही थी और मन में निरन्तर भावरिया का ध्यान था। मन में एक चुभन भी थी, जैसे तीन बरस पहले तक साथ में पढ़ने वाली लड़कियों से बातें सुन कर लड़कों के विषय में हुआ करती थी। जब से कम्युनिस्टों के चक्कर में पड़ी, वह बात जाती रही थी। मेघनाथ के व्यवहार से एक खीझ-सी अवश्य उठती थी परन्तु आशंका के लिये कोई कारण न था।

उसने कलाई पर घड़ी देखी। छः बजने को थे। सोचा, जब कहा है तो इस बार जाना ही चाहिये और वह 'पुरोहित' की ओर चल दी। दूर से ही उसने भावरिया की गाड़ी पहचानी। दोनों एक साथ पुरानी जगह जाकर बैठे। गीता ने ही बात आरम्भ की, "आपने वे पुस्तकें पढ़ीं?"

"अभी तो नहीं" भावरिया ने उत्तर दिया, "इधर बहुत काम रहा।" और भावरिया फिर पहले की तरह चुप रह गया। दोनों के चुप रहने से असुविधा सी अनुभव हो रही थी। गीता भी सोच रही थी—क्या बात करे? कम्युनिस्टों के स्टडी-सर्कल में उसने सीखा था कि प्रत्येक व्यक्ति से उसके मतलब की बात करके उसका विश्वास पाने की चेष्टा करनी चाहिये। समस्यायें सभी घूम-फिर कर आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था की ओर आ जाती हैं। कोई मिट्टी के तेल और चीनी की कठिनाई के कारण स्वराज्य की चिन्ता करता है और कोई स्वराज्य के उपाय से वेकारी की समस्या हल करना चाहता है। यह याद करके कि भावरिया के यहां गल्ले का और मकान किराये पर देने का व्यवसाय होता है, उसने प्रसंग चलाना चाहा कि सरकार मकानों और गल्ले का कन्ट्रोल कर रही है परन्तु इससे जनता की असुविधा दूर नहीं हो रही।

"आपको मकान और गल्ले की तकलीफ है?" भावरिया ने आग्रह से पूछ कर कहा, "इन्तजाम हो जायेगा।"

"नहीं, अपनी बात नहीं कह रही हूं।" गीता ने उत्तर दिया, "सभी लोगों को तकलीफ है। गल्ले के व्यापारी से ही खरीद कर सरकार कन्ट्रोल और राशनिंग करेगी तो चोरबाजार जरूर चलेगा..."

"ये कम्युनिस्ट लोग राशनिंग और कन्ट्रोल में सरकार की मदद कर रहे हैं तो स्वराज कैसे होगा ?" भावरिया ने बीच में टोका।

"कम्युनिस्ट सरकार की मदद तो नहीं करते, अपने आदमियों को भूखों मरने से बचाना चाहते हैं।" गीता ने उत्तर दिया और मन में सोचा कि गल्ले के व्यापारी को राशनिंग और कन्ट्रोल की बात कैसे अच्छी लगे। उसने बात बदली, "कम्युनिस्ट तो अंग्रेजों को हिन्दुस्तान से तुरन्त निकाल देना चाहते हैं, इसीलिये तो कहते हैं कि मुस्लिम लीग और कांग्रेस का समझौता हो जाये और सब मिल कर अंग्रेजों को निकाल दें और अपनी देसी सरकार हो ?"

सन्तुष्ट न हो कर भावरिया ने प्रश्न किया, "सुनते हैं, कम्युनिस्ट अंग्रेजों और मुसलमानों से मिल कर कांग्रेस से लड़ते हैं। कहते हैं, आधा हिन्दुस्तान मुसलमानों को दे दो ! ...ऐसे कहीं हो सकता है !"

हंस कर गीता ने समझाया, "नहीं, ऐसा नहीं कहते कम्युनिस्ट। हम तो कहते हैं, जहां मुसलमानों की बस्ती ज्यादा है वहां उन्हें अपनी राय से चलने दो। किसी को जबरन पकड़े रहने से एकता थोड़े ही होती है ? मुसलमानों को अपना भला-बुरा करने दो। वे अपनी इच्छा से अपना नफा देख कर आप से खुद मिलेंगे, तभी एकता होगी। उन्हें जबरन पकड़ कर रखोगे तो तुमसे लड़ते रहेंगे और वक्त पर धोखा दे जायेंगे। बस यही है पाकिस्तान !" गीता ने बहुत धीमे-धीमे सोच कर पाकिस्तान और आत्मनिर्णय के अधिकार के कठिन शब्दों की राजनीति भावरिया को समझानी चाही पर वह सन्तुष्ट न हुआ। "ऐसे कहीं होता है !" उसने अविश्वास से कहा।

"तो फिर कैसे होगा ?" गीता ने उसकी आंखों में देखा।

"मुसलमान बिना मार खाये सीधे नहीं होंगे !" अपनी मूंछ पर हाथ रख नजर छत की ओर उठा उसने क्रोध प्रकट किया।

"तो फिर एकता कैसे होगी ?...स्वराज्य कैसे मिलेगा ?" गीता ने पूछा।

"एकता हो कैसे सकती है ?" भावरिया ने आपत्ति की, "हिन्दू पूरब की ओर मुख कर भजन करता है, मुसलमान पच्छिम की ओर मुंह करके नमाज पढ़ता है। हिन्दू सीधे तवे पर रोटी सेंकता है, मुसलमान उलटे तवे पर !"

ऐसी राजनीति पर कठिनता से हंसी दबा, गीता ने मस्तिष्क पर जोर देकर सोचा, ऐसे आदमी को क्या युक्ति दे। "तो भगवान ने क्या हिन्दू और मुसलमानों को आपस में लड़ने के लिए ही बनाया है ?" उसने पूछा।

"अरे भगवान की बात भगवान जानें।" एक लम्बी सांस ले भावरिया ने उत्तर दिया, "और जैसा 'वे' चाहेंगे होगा। हमारे-आपके किए क्या होता है ?"

"तो कांग्रेस सब मेहनत यों ही कर रही है ?" गीता ने उसके मस्तिष्क को उकसाने के लिए प्रश्न किया।

"और क्या जी; अपना-अपना रोजगार है। कोई ऐसे खाता है, कोई वैसे खाता है।" भावरिया ने बात टाल दी। ऐसी बातें उसने कभी की न थीं।

"तो फिर चलें !" गीता ने एक अखबार उसकी ओर बढ़ाकर पूछा, "पढ़िएगा न; बहुत-सी बातें मालूम होंगी।"

"हां, हां।" भावरिया ने अखबार ले लिया। गीता सोच रही थी पिछली पुस्तकों और अखबारों के दाम मांगे या नहीं। मन में यह भी खयाल था—नौ रुपये चौदह आने दे चुका है, परन्तु उसकी तो रसीद वह दे चुकी थी। भावरिया ने पूछ लिया, आज किताब वेचने किधर जाइएगा ?"

"कहीं नहीं, अब घर लौटूंगी।"

"फुर्सत है तो थोड़ा घूमकर चलें ?" भावरिया ने प्रस्ताव किया।

"कहां ?" कुछ आशंका से गीता ने उसकी ओर देखा।

"ऐसे ही इधर मैरीन-ड्राइव आर चौपाटी तक, फिर आपको घर पर उतार देंगे।"

इन निरापद स्थानों का नाम सुन गीता को अपनी आशंका के प्रति झेंप अनुभव हुई। मर्द के साथ से ही भय लगे, ऐसी वह न थी। कितनी ही बार पार्टी के इक्के-दुक्के साथियों के साथ नौ-दस बजे रात में परेल और मदनपुरा से लौट चुकी थी। "चलिए।" उसने अनुमति दे दी।

बहुत धीमे गाड़ी चलाता हुआ भावरिया चौपाटी तक पहुंचा। समुद्र-तल से उठते वाष्प में सूर्य अपना तेज खोकर धूमिल हो रहा था और लज्जा से सागर के नीले आंचल में छिप जाना चाहता था। समुद्र के ऊपर से आती शीतल फरफराती वायु ताजगी दे रही थी। चंचल लहरों पर फेन नाच रहा था। दोनों बिलकुल चुप थे। गीता को बहुत शान्त और विश्राम अनुभव हो रहा था। चौपाटी के चौराहे के समीप पहुंच भावरिया ने कहा, "अभी दिन है, कहिए तो

गिरगाम को घूमें, नहीं तो मालाबार हिल के ऊपर होकर आ जाएं !"

गिरगांव बाजार के पीछे घनी बस्ती में संध्या समय सभी मकानों में रसोइयों से धुआं, मसालों और रांधने की गन्ध उठने लगती थी। गीता का मन घर लौटकर ऐसे दमघोंट वातावरण में बन्द हो जाने को न हुआ। उसने मालाबार के ऊपर से ही आने के लिए हामी भर ली।

भावरिया मालाबार-हिल का चक्कर लगाकर फिर चौपाटी पर उतर आया। अब सब ओर बिजली का प्रकाश चौंधिया रहा था। फिर उसने पूछा कि इधर बाहर-बाहर ही चलें। "हां, हाँ।" गीता ने अनुमति दे दी।

चर्चगेट से फोर्ट की राह वे लोग बढ़ रहे थे। भीड़ के कारण गाड़ी बहुत धीमी चल रही थी। एक दुकान के सामने भावरिया ने गाड़ी रोक दी। "क्या हुआ ?" देखने के लिए गीता ने गर्दन ऊंची की। भावरिया ने उसकी ओर देखकर कहा, "ज्यूलरी की यह बहुत अच्छी दुकान है। बहुत अच्छे डिजाइन की चीजें हैं। एक-आध चीज देखिए तो···"

गीता के चेहरे पर सुर्खी दौड़ गई, "जी नहीं।"

"क्या हर्ज है ?"

"जी नहीं।" दृढ़ता से गीता ने उत्तर दिया।

"अच्छा देखिए तो !" भावरिया के इस आग्रह पर गीता की इच्छा कड़वा उत्तर दे देने की हुई, परन्तु भावरिया की ओर से कोई कुसंकेत न देख अपने-आपको दबा गई, "ज्यूलरी मैं पहनती नहीं। क्यों व्यर्थ पैसा फेंकिएगा ?"

"नहीं, पैसा फेंकना नहीं है। आप लेंगी तो हमें खुशी होगी।" भावरिया की बात से गीता ने चाहा कि कह दे, 'वाह जी, तुम्हारी खुशी से हमें मतलब !' परन्तु भावरिया बोल उठा, "आपने किताब और अखबार हमको दिया तो हमने लिया कि नहीं ?···अपनी जान-पहचान में सब लोग लेते-देते हैं।"

गीता चुप रह गई और उसे याद आया––आग से पार्टी के प्रेस को हुआ नुकसान पूरा करने के लिए उसने दो सौ रुपया इकट्ठा करने का वायदा किया था। अभी हुआ था केवल पचपन। बोली, ऐसा है तो आप रुपया दे दीजिए।··· हमारी पार्टी को जरूरत है।"

"जैसे आपको खुशी हो !"

"अच्छा, दो सौ रुपया दीजिए !" अधिकार के स्वर में गीता ने मुस्कराकर आग्रह किया।

"आप जैसा कहें। आपका हक है। चाहे जैसे करें।" कोट के भीतर के पाकेट में हाथ डाल भावरिया ने नोट निकाले और सौ-सौ के दो नोट गीता की ओर बढ़ा दिए। गीता नोटों को हाथ में थामे रही। रक्त में एक तेजी अनुभव हो रही थी जैसे गाड़ी से ऊपर उठ हवा में उड़ जाए।

गीता के बताए रास्ते से गाड़ी लाकर भावरिया ने उसके मकान के नीचे खड़ी कर दी। गीता गाड़ी से उतरी। नोट अब भी उसके हाथ में थे। नोट मुट्ठी में थामे ही उसने नमस्कार कर धन्यवाद दिया।

"मां को हमारा नमस्कार कहिए।" भावरिया ने कहा और पूछा, "अब फिर कब मिलियेगा ?······ बृहस्पत के दिन आइए !"

"अच्छा !" गीता ने फिर नमस्कार किया और जीना चढ़ गई। जीना चढ़ते समय हाथ में थमे नोटों की उत्तेजना से गीता चाहती थी उछलकर ऊपर पहुंच जाए।

"आ गई ?" मां का बड़बड़ाना सुनाई दिया, "क्या ढंग है बाबा ! दोपहर में घर से निकली और रात में लौटी। लड़की है कि सिपाही ! आजकल रोज ही दंगा और मार चलती है। और लड़का अभी तक भी नहीं लौटा······ !"

अपने मन के उत्साह में डूबी गीता कुछ समझ नहीं पाई और उत्तर दिया, "हां मां !"

हाथ के पसीने से नोट सीज-से गए थे। ऐसी जगह कहां रखे जहां शामू या मां की नजर न पड़े ? पूछेंगे तो क्या उत्तर देगी ? सुबह पार्टी के दफ्तर में जाकर मजहर भाई को देकर बताएगी—जिस गुण्डे से उसने इतना डराया था, यह नोट उसी पर विजय का प्रमाण थे। नोट उसने जम्पर के भीतर खोंस लिए और झूठ-मूठ चिल्लाकर मां से भूख लगने की शिकायत की।

"बड़ा अचरज है जो भूख लगी है ! ······ सुबह का खाया है और बारह कोस घूम आई। क्या हवा पर जीना चाहती है ?" मां ने क्रोध दिखाया। गीता का मन वात्सल्य के इस क्रोध से उमग उठा। भोजन के स्वाद की ओर उसका ध्यान न था परन्तु उसने खाने के स्वाद की बहुत प्रशंसा की। मन में उसके केवल एक ख्याल था, 'मां क्या जाने पार्टी के लिए उसने आज कितना बड़ा काम किया है !'

शामू आया तो गीता ने उसे स्वयं छेड़ा, "खबरदार, आज शोर किया तो······मुझे पढ़ना है।"

शरारत के इस निमंत्रण को शामू भला कैसे अनसुना कर देता ? बहिन का सिर दोनों हाथों में थाम, उसके कान से मुंह लगाकर वह चिल्लाया, "किल-किलल्लरी बौम !" धमाचौकड़ी हुई । शामू ने बहिन के दोनों हाथ अपने मर्दाने हाथों में काबू कर चुनौती दी, "अब······?"

गीता सचमुच घबरा रही थी, 'हाय, अगर नोट कहीं गले से खिसककर बाहर आ जायं ?' वह झुंझला उठी ।

मां को धमकाना पड़ा, "मैं दोनों को ही पीटूंगी । दोनों ही पागल हैं······ तू गीता इतनी बड़ी हुई, और यह गधा बड़ी बहिन पर हाथ उठाता है······शरम नहीं आती ?"

"बैन तो पहले छेड़ती है ।" शामू ने विरोध किया ।

गीता मुंह फुलाकर लेट गई ताकि नोट अपनी जगह सुरक्षित रहें ।

पदमलाल भावरिया ने दो सौ रुपये जेब से निकालकर दिए थे और गीता ने पाए थे । गीता अपनी इस विजय से किलक उठी थी, परन्तु भावरिया ने इसे अपनी सफलता समझा ।

गीता को उसके घर पहुंचाने के बहाने उसका मकान देखकर भावरिया ने गाड़ी घुमा ली । भीड़ से बचने के लिए गलियों से होता हुआ वह लेमिंगटन रोड पर आया और तेजी से माटुंगा की ओर चल दिया । वह जानता था—पुत्तूलाल, रेवती, उवेद सब माटुंगा-क्लब में जुटे होंगे । अपनी विजय की घोषणा करने के लिए उसका मन छटपटा रहा था ।

भावरिया को मालूम था, उवेद ने सिनेमावाली पठानन को बुलाया है । परन्तु वहां पहुंचकर देखा तो पुत्तूलाल 'कोंकणी' छोकरी को भी लेकर पहुंचा था । वह लड़की कुछ संकुचित-सी उसी के समीप बैठी थी । पहला पेग एक सांस में खींचकर पुत्तूलाल को सुनाने के लिए भावरिया ने अशफाक पंजाबी को सम्बोधन किया, "पंजाबी दोस्त, आज तो उस अखबारवाली को बियाना पुजवा दिया ।······कहो दोस्त !" उसने पंजाबी की ओर हाथ बढ़ा दिया ।

"मेरी कसम !······सच कहना सेठ !" प्रशंसा और विस्मय में आंखें फैला पंजाबी ने भावरिया का बढ़ा हुआ हाथ अपने हाथों में दबाकर पूछा, "उतर आई छतरी पर कबूतरी ? मान गए भई सेठ को !" उसने सुकुल की ओर देखा, "लेकिन है भाई कैंडे की; चुगेगी बहुत !"

"अरे भाई तो हम क्या कहते हैं ! हम तो जब जान कोई यहां ले आए; चार दोस्त देख लें, क्यों पण्डित ?······क्यों सेठ !" पुत्तूलाल ने पहले रेवाचन्द की ओर फिर मुकुल की ओर समर्थन के लिए हाथ बढ़ाया।

"भाई, लाला कहते तो ठीक हैं।" रेवाचन्द ने पुत्तू का हाथ थामे ही आंख फैलाकर कहा, "हाथ कंगन को आरसी क्या ?······अब देखो बेगम साहिबा खान साहब की बदौलत मौजूद हैं !" उसने पठानन की ओर संकेत किया, "खान जाने कितनी खुसामद से लाए हैं। भाई, हमें तो यह अपने तलुए धोकर गिलास में दे दें तो भिस्की से बढ़ कर है······क्यों पण्डित ?" और वह ठहठहाकर हंस दिया।

पठानन उबेदखां के कहने से भावरिया को एक पेग अपने हाथ से देने के लिये उठी थी। रेवाचन्द की बात पर संकोच प्रकट करने के लिए उसने दोहरी होकर कहा, "हाय, ऐसा मजाक न करो लाला !"

"अरे तो हम कुछ और कह रहे हैं। और भी फूल खिलें चमन में तो और बहार हो ! क्यों सेठ ?" हंसी से तोंद हिलाते हुए रेवाचन्द ने भावरिया को सम्बोधित किया।

"हां तो क्या ? कोई घरवाली है जो सेठ अटारी में मूंद कर रखेंगे !" मुकुल बोला।

"रही !" दूसरा पेग समाप्त कर भावरिया ने चुनौती स्वीकार कर ली।

पार्टी के दफ्तर में मंगलवार रिपोर्टिंग का दिन था। सब फ्रंटों (मोर्चों) के कामरेड अपने-अपने क्षेत्र से चुनाव की तैयारी के काम की रिपोर्ट देने आते थे। उस काम में समय बहुत लग जाता था। सभी कामरेड लम्बा-चौड़ा किस्सा सुनाते थे। गीता ने सोचा, जरा जल्दी जाए तो ठीक होगा। वह पार्टी दफ्तर पहुंची तब भी कई कामरेड—रंगा, श्रीनिवास, मेघनाथ, पद्मा मालेकर और माया पवानी बैठे थे। मजहर एक कोने में कागज-पेंसिल लिए कुछ लिख रहा था।

शेष लोगों को न सुनाने के अभिप्राय से गीता ने धीमे स्वर में मजहर से बात कर, तहाए हुए नोट उसके हाथ में दे दिए। गर्दन उठा और आगे लटक आई रूखी लट पेंसिल से समेट मजहर बोला, "बहुत बड़ी बात की तुमने ! उसे पार्टी का सिम्पेथाइजर (सहायक) बना लिया क्या ?"

"आहिस्ता, आहिस्ता हो जाएगा।" हाथ की पुस्तक के पन्ने फरफराकर

गीता ने उत्तर दिया, "अभी तो यह रुपया दिया है उसने ।"

"रसीद दे दी तुमने ?" मजहर ने गीता की आंखों में देखा ।

"नहीं, अभी नहीं दी । उसने मुझे पर्सनली (व्यक्तिगत) दिया है ।" गीता के चेहरे पर लाली झलक आई ।

"क्या मतलब ?" मजहर के भवों के सिकुड़न गहरे हो गए ।

"एजे फ्रेंड (मित्र के तौर पर) ।" पुस्तक के पन्ने फरफराते हुए गीता के मुख की लाली और बढ़ गई क्योंकि मजहर का स्वर ऊंचा हो जाने से और साथियों के कान भी इस बातचीत की ओर आकृष्ट हो गए थे ।

नोटों को हाथ में वैसे ही थामे और पेंसिल से कान खुजलाते हुए मजहर बोला, "यू मस्ट बी केयरफुल (तुम्हें सावधानी से चलना चाहिए) । पार्टी से उसे सहानुभूति है तो एक बात । पर्सनली रुपया लेना तो ठीक नहीं......वह आदमी अच्छा नहीं है ।"

"यू नीडंट बौदर अबाउट दैट (उसकी तुम चिंता न करो) । मैं उसे अब समझ गई हूं ।" स्वर ऊंचा कर गीता बोली परन्तु दृष्टि दूसरे साथियों की ओर न उठा सकी ।

"नहीं, नहीं," मजहर ने और ऊंचे स्वर में चेतावनी दी, "पार्टी की स्थिति पर हर एक बात का असर पड़ता है । पार्टी के लिए रुपया कैसे आता है । यह बात ध्यान देने की है । भावरिया मामूली आदमी नहीं है ।"

"भावरिया क्या भोला बच्चा है," श्रीनिवास ने गर्दन उठाकर पूछा, "जो उसे कामरेड ने ठग लिया । महात्मा गांधी की कांग्रेस को हजारों आदमी रुपया देते हैं, क्या सब गांधीजी और कांग्रेस के सिद्धांतों को समझ कर रुपया देते हैं ?"

"रुपया तो सब तरह के आदमियों से लेना होता है ।" पद्मा मालेकर ने श्रीनिवास का समर्थन किया, "केवल पार्टी के मेम्बर कितना दे सकते हैं ।"

"तो आरगेनाइजेशन को देते हैं; कांशियसली (वे समझ-बूझ कर संस्था को देते हैं) ।" मेघनाथ ने बीच में टोका, "पर्सनली तो नहीं । ऐसे रुपया लेने से पार्टी के मेम्बर की पोजीशन आकवर्ड हो (स्थिति उलझन में पड़) सकती है ।"

बात बढ़ने से पहले गीता ने संकोच अनुभव किया था, परन्तु अब वह निस्संकोच बोली, "पोजीशन आकवर्ड कैसे हो सकती है, जब मैं कह देती हूं कि मुझे रुपया पार्टी के लिए चाहिए ।"

"दैन इट्स डिफरेण्ट मैटर, क्वाइट डिफरेण्ट मैटर (तो बात ही दूसरी

है), फिर उसे रसीद दे दो !" चिंता से मुक्ति की श्वास ले मजहर ने कहा, "तुम पर विश्वास करके वह पार्टी को सहायता देता है तो तुम्हारी पार्टी को देता है । उसमें कुछ आकवर्ड नहीं !"

"हां तो मैं रसीद दे दूंगी ।" गीता ने ऊंचे स्वर में उत्तर दिया, "मेरे पर्सनली रुपया लेने का मतलब ही क्या ?"

"अजी उससे रुपया लेने में हर्ज हीं क्या है ? हमें यही समझ में नहीं आता ।" सबसे ऊंचे स्वर में रंगा बोला, "ऐसे बेईमानों से रुपया लेना चाहिए । मार-मार कर रुपया लेना चाहिए । वह रुपया उस साले का है ? दूसरों का रुपया उसने चुराकर रखा है । वह छीनने का तो हमारा हक होना चाहिए ।"

"लेना चाहिए, यह ठीक कहा," मेघनाथ ने हाथ उठाकर एतराज किया, "परन्तु पार्टी की स्थिति और रुपया लेने के तरीके पर भी तो विचार करना होगा या ऐसे ही, जहां से चाहा उठा लिया । तब तो हम रुपया इकट्ठा करने के प्रयत्न में ही मिट भी जा सकते हैं ।"

"क्या खामखाह फिलासफी झाड़ रहे हो जी !" श्रीनिवास ने टोका, "क्या हो गया तरीके में ? कामरेड ने डकैती कर ली है क्या ? भावरिया पुलिस में रिपोर्ट करके जेल भिजवा देगा ?"

मेघनाथ का पीला चेहरा उत्तेजित हो गया । उसने हाथ उठाकर आपत्ति की, "इस बारे में आप पार्टी की इंस्ट्रक्शन (हिदायतें) देखिए । केन्द्रीय दफ्तर इस बात की रिपोर्ट चाहता है कि किस श्रेणी के आदमियों से कितना-कितना रुपया लिया गया, रुपया देने वालों का पार्टी के प्रति क्या रुख है, उनकी क्या भावना है । इसका स्पष्ट अर्थ है कि रुपया सोच-समझ कर लेना चाहिए । फर्ज कीजिए कहीं से रुपया लेकर किसी झंझट में फंस जाए । रुपया लेने-देने में इन्टेंशन (इरादे) का भी सवाल होता है । सेल्फिश मोटिव (स्वार्थ की भावना) हो सकता है । मैं ऐसे रुपये को पोलिटिकली इम्मोरल मनी (राजनीतिक दृष्टि से अनुचित रुपया) समझता हूं ।" माया पवानी स्टूडेण्ट-फ्रंट पर काम करती थी । इस बहस से झेंप दिखाने के लिए उसने इन्कार में हाथ हिलाया, "भाई, आई कांट डू आल दिस (मुझसे यह सब नहीं हो सकता) !"

"दिस इज नानसेन्स (यह बकवास है) !" खीझकर मजहर ने टोका, "जब कामरेड ने कहा कि पार्टी को रुपया चाहिए और रुपया लाकर सबके सामने रख दिया तो इसमें इम्मोरल क्या हो सकता है ? सिर्फ सेल्फिशनेस इम्मोरल है ।"

माया सहम गई परन्तु मेघनाथ ने विरोध किया, "नहीं, नहीं, मेरा मतलब यह बिलकुल नहीं है···।"

"पत्थर है तुम्हारा मतलब !" ऊंचे स्वर में रंगा भड़क उठा, "किसी कामरेड के बारे में ऐसी बात कहने का तुम्हें क्या हक है जी ? तुम्हें इसका जवाब देना होगा !"

मेघनाथ ने सफाई दी, "यह बिलकुल उलटा मतलब निकाल रहे हो तुम ! गीता की मैं उतनी ही रिस्पेक्ट (आदर-विश्वास) करता हूं, जितनी कोई दूसरा कामरेड । इन्टेंशन से मेरा मतलब भावरिया से है । अगर कांग्रेस वालों को मालूम हो जाए कि हमारे एक कामरेड ने भावरिया से रुपया लिया है तो क्या कहेंगे ?"

श्रीनिवास अब तक क्रोध में घूर रहा था । ठोड़ी उठा कर बोला, "ऐसी-तैसी कहने वालों की ! ······कांग्रेस वाले किस से रुपया लेते हैं ?···"

"भावरिया कांग्रेस को भी तो देता है । भावाजी उस से लेते हैं ।" गीता बोल उठी ।

"अरे एक भावरिया···"श्रीनिवास कहता गया, "कांग्रेस विदेशी माल का बायकाट करती है और विदेशी माल के व्यापार से रुपया चन्दे में लेती है ! यह जो कांग्रेस के इलेक्शन-फण्ड में बम्बई, अहमदाबाद, कानपुर से लाखों की रकमें चढ़ी हैं, यह ब्लैक मार्केट की कमाई है कि नहीं ? बंगाल का दुर्भिक्ष पैदा करने वालों का रुपया है या नहीं ? कांग्रेस ने 'वार' का बायकाट किया और 'वार' की सप्लाई करने वालों का बायकाट नहीं किया, क्योंकि वहां से लाखों रुपया जो मिल रहा था । यह सब इम्मोरल मनी नहीं हुआ ? कांग्रेस वाले कहेंगे ! बड़े आए हैं कहने वाले !"

इस बीच में चार कामरेड और आ चुके थे । श्रीनिवास को टोककर मजहर ने कहा, "अब इस फिजूल बहस को बन्द करो जी ! रिपोर्टिंग शुरू करो । गीता, तुम अपने रुपये की रसीद दे देना और कुछ पार्टी लिटरेचर भी देना, समझीं !··· हां तो अब आगे रिपोर्टिंग शुरू हो ।"

"लिटरेचर मैंने पहले भी दिया है ।" गीता ने कहा, "और रसीद-कापी नहीं थी, इसलिए नहीं दे सकी ।"

श्रीनिवास ने चमड़ा बनाने वाले मजदूरों में काम की रिपोर्ट दी । तीन घंटे तक रिपोर्टिंग होती रही । सब कामरेड बारी-बारी से अपने-अपने काम की रिपोर्ट

दे रहे थे और दूसरे कामरेड उसमें सुधार के उपाय बता रहे थे। गीता सुनती रही परन्तु उसका ध्यान बार-बार भावरिया के सम्बन्ध में हुई बहस की ओर चला जाता और कभी भावरिया से हुई बातें याद आने लगतीं। कल्पना में वह सोचती रही, किस प्रकार वह उस व्यक्ति के दृष्टिकोण को बदल सकती है।

पिछले बृहस्पतिवार भावरिया को 'जनयुग' देने गीता 'पुरोहित' में गई तो सबसे पहले उसने दो सौ रुपये की रसीद उसके सामने रखकर कहा, "यह है आपके रुपये की रसीद।"

"वाह ! यह क्या कहती हैं आप !" भावरिया ने रसीद की ओर से दृष्टि हटाकर कहा, "आपसे रसीद का सवाल ? आपके हाथ में दिया इसी में तसल्ली है। आप जो चाहें करें। आपकी खुशी में हमारी खुशी है।" उसने रसीद को मरोड़ दिया।

चाय पीते-पीते गीता ने कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी की नीति में अन्तर बताने का यत्न किया तो भावरिया ने कहा, "मैं सब समझता हूं। जहां दो बर्तन होते हैं, खटकते, ही हैं। भाइयों-भाइयों में झगड़ा होता है तो और लोगों को क्या ? ऐसे ही कांग्रेसियों में झगड़ा हो गया है। एक तरफ तिरंगे झण्डे वाले हैं, दूसरी तरफ लाल बावटा (लाल झण्डा)। लाल बावटा वालों की सफेदपोश शरीफ आदमियों में नहीं चलती, इसलिए वे मजदूरों को साथ लेते हैं। कांग्रेस में सब बड़े-बड़े आदमी हैं, इसलिए आम लोग उन्हीं की तरफ जाते हैं।"

गीता ने यही उचित समझा कि पहले भावरिया को छोटी-छोटी पुस्तकें पढ़ने को दे। उसके मन में जिज्ञासा पैदा हो जाने पर फिर बात करे। उसने उसे कम्युनिस्ट पार्टी का चुनाव घोषणा-पत्र पढ़ने को दिया। उस दिन भी सूर्यास्त के समय समुद्र-दल से आती फरफराती वायु में भावरिया गीता को मोटर में 'बैंकवे' की ओर ले गया। मोटर में दोनों पहले की ही भांति चुप रहे। 'पुरोहित' में चाय पीते समय और मोटर में भी कई बार गीता को अल्कोहल (शराब) की गन्ध जान पड़ी। सन्देह हुआ कि भावरिया ने शायद शराब पी है। इस विचार से भावरिया के गुंडे होने का ध्यान आ गया परन्तु उसके व्यवहार में उच्छृङ्खलता या उद्दंडता बिलकुल नहीं जान पड़ी।

सोचा—हो सकता है इसे आदत हो। आदमी जैसी संगति और वातावरण में रहता है, वैसी ही आदतें पड़ जाती हैं। अपने कई कामरेड किस तरह सिगरेट

गीता ने उत्तर दिया, "अभी तो यह रुपया दिया है उसने ।"

"रसीद दे दी तुमने ?" मजहर ने गीता की आंखों में देखा ।

"नहीं, अभी नहीं दी । उसने मुझे पर्सनली (व्यक्तिगत) दिया है ।" गीता के चेहरे पर लाली झलक आई ।

"क्या मतलब ?" मजहर के भवों के सिकुड़न गहरे हो गए ।

"एजे फ्रेंड (मित्र के तौर पर) ।" पुस्तक के पन्ने फरफराते हुए गीता के मुख की लाली और बढ़ गई क्योंकि मजहर का स्वर ऊंचा हो जाने से और साथियों के कान भी इस बातचीत की ओर आकृष्ट हो गए थे ।

नोटों को हाथ में वैसे ही थामे और पेंसिल से कान खुजलाते हुए मजहर बोला, "यू मस्ट वी केयरफुल (तुम्हें सावधानी से चलना चाहिए) । पार्टी से उसे सहानुभूति है तो एक वात । पर्सनली रुपया लेना तो ठीक नहीं……वह आदमी अच्छा नहीं है ।"

"यू नीडंट वोदर अबाउट दैट (उसकी तुम चिंता न करो) । मैं उसे अब समझ गई हूं ।" स्वर ऊंचा कर गीता वोली परन्तु दृष्टि दूसरे साथियों की ओर न उठा सकी ।

"नहीं, नहीं," मजहर ने और ऊंचे स्वर में चेतावनी दी, "पार्टी की स्थिति पर हर एक बात का असर पड़ता है । पार्टी के लिए रुपया कैसे आता है । यह बात ध्यान देने की है । भावरिया मामूली आदमी नहीं है ।"

"भावरिया क्या भोला बच्चा है," श्रीनिवास ने गर्दन उठाकर पूछा, "जो उसे कामरेड ने ठग लिया । महात्मा गांधी की कांग्रेस को हजारों आदमी रुपया देते हैं, क्या सब गांधीजी और कांग्रेस के सिद्धांतों को समझ कर रुपया देते हैं ?"

"रुपया तो सब तरह के आदमियों से लेना होता है ।" पद्मा मालेकर ने श्रीनिवास का समर्थन किया, "केवल पार्टी के मेम्बर कितना दे सकते हैं ।"

"तो आरगेनाइजेशन को देते हैं; कांशियसली (वे समझ-बूझ कर संस्था को देते हैं) ।" मेघनाथ ने बीच में टोका, "पर्सनली तो नहीं । ऐसे रुपया लेने से पार्टी के मेम्बर की पोजीशन आकवर्ड हो (स्थिति उलझन में पड़) सकती है ।"

बात बढ़ने से पहले गीता ने संकोच अनुभव किया था, परन्तु अब वह निस्संकोच बोली, "पोजीशन आकवर्ड कैसे हो सकती है, जब मैं कह देती हूं कि मुझे रुपया पार्टी के लिए चाहिए ।"

"दैन इट्स डिफरेण्ट मैटर, क्वाइट डिफरेण्ट मैटर (तो बात ही दूसरी

है), फिर उसे रसीद दे दो !" चिंता से मुक्ति की श्वास ले मजहर ने कहा, "तुम पर विश्वास करके वह पार्टी को सहायता देता है तो तुम्हारी पार्टी को देता है। उसमें कुछ आकवर्ड नहीं !"

"हां तो मैं रसीद दे दूंगी।" गीता ने ऊंचे स्वर में उत्तर दिया, "मेरे पर्सनली रुपया लेने का मतलब ही क्या ?"

"अजी उससे रुपया लेने में हर्ज हीं क्या है ? हमें यही समझ में नहीं आता।" सबसे ऊंचे स्वर में रंगा बोला, "ऐसे बेईमानों से रुपया लेना चाहिए। मार-मार कर रुपया लेना चाहिए। वह रुपया उस साले का है ? दूसरों का रुपया उसने चुराकर रखा है। वह छीनने का तो हमारा हक होना चाहिए।"

"लेना चाहिए, यह ठीक कहा," मेघनाथ ने हाथ उठाकर एतराज किया, "परन्तु पार्टी की स्थिति और रुपया लेने के तरीके पर भी तो विचार करना होगा या ऐसे ही, जहां से चाहा उठा लिया। तब तो हम रुपया इकट्ठा करने के प्रयत्न में ही मिट भी जा सकते हैं।"

"क्या खामखाह फिलासफी झाड़ रहे हो जी !" श्रीनिवास ने टोका, "क्या हो गया तरीके में ? कामरेड ने डकैती कर ली है क्या ? भावरिया पुलिस में रिपोर्ट करके जेल भिजवा देगा ?"

मेघनाथ का पीला चेहरा उत्तेजित हो गया। उसने हाथ उठाकर आपत्ति की, "इस बारे में आप पार्टी की इंस्ट्रक्शन (हिदायतें) देखिए। केन्द्रीय दफ्तर इस बात की रिपोर्ट चाहता है कि किस श्रेणी के आदमियों से कितना-कितना रुपया लिया गया, रुपया देने वालों का पार्टी के प्रति क्या रुख है, उनकी क्या भावना है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि रुपया सोच-समझ कर लेना चाहिए। फर्ज कीजिए कहीं से रुपया लेकर किसी झंझट में फंस जाए। रुपया लेने-देने में इन्टेंशन (इरादे) का भी सवाल होता है। सेल्फिश मोटिव (स्वार्थ की भावना) हो सकता है। मैं ऐसे रुपये को पोलिटिकली इम्मोरल मनी (राज-नीतिक दृष्टि से अनुचित रुपया) समझता हूं।" माया पवानी स्टूडेण्ट-फ्रंट पर काम करती थी। इस बहस से झेंप दिखाने के लिए उसने इन्कार में हाथ हिलाया, "भाई, आई कांट डू आल दिस (मुझसे यह सब नहीं हो सकता) !"

"दिस इज नानसेन्स (यह बकवास है) !" खीझकर मजहर ने टोका, "जब कामरेड ने कहा कि पार्टी को रुपया चाहिए और रुपया लाकर सबके सामने रख दिया तो इसमें इम्मोरल क्या हो सकता है ? सिर्फ सेल्फिशनेस इम्मोरल है।"

माया सहम गई परन्तु मेघनाथ ने विरोध किया, "नहीं, नहीं, मेरा मतलब यह बिलकुल नहीं है···।"

"पत्थर है तुम्हारा मतलब !" ऊंचे स्वर में रंगा भड़क उठा, "किसी कामरेड के बारे में ऐसी बात कहने का तुम्हें क्या हक है जी ? तुम्हें इसका जवाब देना होगा !"

मेघनाथ ने सफाई दी, "यह बिलकुल उलटा मतलब निकाल रहे हो तुम ! गीता की मैं उतनी ही रिस्पेक्ट (आदर-विश्वास) करता हूं, जितनी कोई दूसरा कामरेड । इन्टेंशन से मेरा मतलब भावरिया से है । अगर कांग्रेस वालों को मालूम हो जाए कि हमारे एक कामरेड ने भावरिया से रुपया लिया है तो क्या कहेंगे ?"

श्रीनिवास अब तक क्रोध में घूर रहा था । ठोड़ी उठा कर बोला, "ऐसी-तैसी कहने वालों की !······कांग्रेस वाले किस से रुपया लेते हैं ?···"

"भावरिया कांग्रेस को भी तो देता है । भावाजी उस से लेते हैं ।" गीता बोल उठी ।

"अरे एक भावरिया···"श्रीनिवास कहता गया, "कांग्रेस विदेशी माल का बायकाट करती है और विदेशी माल के व्यापार से रुपया चन्दे में लेती है ! यह जो कांग्रेस के इलेक्शन-फण्ड में बम्बई, अहमदाबाद, कानपुर से लाखों की रकमें चढ़ी हैं, यह ब्लैक मार्केट की कमाई है कि नहीं ? बंगाल का दुर्भिक्ष पैदा करने वालों का रुपया है या नहीं ? कांग्रेस ने 'वार' का बायकाट किया और 'वार' की सप्लाई करने वालों का बायकाट नहीं किया, क्योंकि वहां से लाखों रुपया जो मिल रहा था । यह सब इम्मोरल मनी नहीं हुआ ? कांग्रेस वाले कहेंगे ! बड़े आए हैं कहने वाले !"

इस बीच में चार कामरेड और आ चुके थे । श्रीनिवास को टोककर मजहर ने कहा, "अब इस फिजूल बहस को बन्द करो जी ! रिपोर्टिंग शुरू करो । गीता, तुम अपने रुपये की रसीद दे देना और कुछ पार्टी लिटरेचर भी देना, समझीं !··· हां तो अब आगे रिपोर्टिंग शुरू हो ।"

"लिटरेचर मैंने पहले भी दिया है ।" गीता ने कहा, "और रसीद-कापी नहीं थी, इसलिए नहीं दे सकी ।"

श्रीनिवास ने चमड़ा बनाने वाले मजदूरों में काम की रिपोर्ट दी । तीन घंटे तक रिपोर्टिंग होती रही । सब कामरेड बारी-बारी से अपने-अपने काम की रिपोर्ट

दे रहे थे और दूसरे कामरेड उसमें सुधार के उपाय बता रहे थे। गीता सुनती रही परन्तु उसका ध्यान बार-बार भावरिया के सम्बन्ध में हुई बहस की ओर चला जाता और कभी भावरिया से हुई बातें याद आने लगतीं। कल्पना में वह सोचती रही, किस प्रकार वह उस व्यक्ति के दृष्टिकोण को बदल सकती है।

पिछले बृहस्पतिवार भावरिया को 'जनयुग' देने गीता 'पुरोहित' में गई तो सबसे पहले उसने दो सौ रुपये की रसीद उसके सामने रखकर कहा, "यह है आपके रुपये की रसीद।"

"वाह ! यह क्या कहती हैं आप !" भावरिया ने रसीद की ओर से दृष्टि हटाकर कहा, "आपसे रसीद का सवाल ? आपके हाथ में दिया इसी में तसल्ली है। आप जो चाहें करें। आपकी खुशी में हमारी खुशी है।" उसने रसीद को मरोड़ दिया।

चाय पीते-पीते गीता ने कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी की नीति में अन्तर बताने का यत्न किया तो भावरिया ने कहा, "मैं सब समझता हूं। जहां दो बर्तन होते हैं, खटकते, ही हैं। भाइयों-भाइयों में झगड़ा होता है तो और लोगों को क्या ? ऐसे ही कांग्रेसियों में झगड़ा हो गया है। एक तरफ तिरंगे झण्डे वाले हैं, दूसरी तरफ लाल बावटा (लाल झण्डा)। लाल बावटा वालों की सफेदपोश शरीफ आदमियों में नहीं चलती, इसलिए वे मजदूरों को साथ लेते हैं। कांग्रेस में सब बड़े-बड़े आदमी हैं, इसलिए आम लोग उन्हीं की तरफ जाते हैं।"

गीता ने यही उचित समझा कि पहले भावरिया को छोटी-छोटी पुस्तकें पढ़ने को दे। उसके मन में जिज्ञासा पैदा हो जाने पर फिर बात करे। उसने उसे कम्युनिस्ट पार्टी का चुनाव घोषणा-पत्र पढ़ने को दिया। उस दिन भी सूर्यास्त के समय समुद्र-दल से आती फरफराती वायु में भावरिया गीता को मोटर में 'बैंकवे' की ओर ले गया। मोटर में दोनों पहले की ही भांति चुप रहे। 'पुरोहित' में चाय पीते समय और मोटर में भी कई बार गीता को अल्कोहल (शराब) की गन्ध जान पड़ी। सन्देह हुआ कि भावरिया ने शायद शराब पी है। इस विचार से भावरिया के गुंडे होने का ध्यान आ गया परन्तु उसके व्यवहार में उच्छृङ्खलता या उद्दंडता बिलकुल नहीं जान पड़ी।

सोचा— हो सकता है इसे आदत हो। आदमी जैसी संगति और वातावरण में रहता है, वैसी ही आदतें पड़ जाती हैं। अपने कई कामरेड किस तरह सिगरेट

फूंकते हैं । चाचा को भांग की कैसी आदत है ! वे उसे भगवान का प्रसाद मानकर उसका दोष दूर कर लेते हैं । लेकिन वह अभी इसे मना करे तो किस अधिकार से ? 'मैट्रो' सिनेमा के सामने से लौटते समय भावरिया ने पूछा, "जल्दी न हो तो सिनेमा देखें ?"

"नहीं, आज नहीं, मां से कहकर नहीं आई, देर हो जायगी ।" गीता ने उत्तर दिया और सोचने लगी—'ऐसा तो नहीं जान पड़ता कि किसी विशेष प्रयोजन से बात कही हो ?···देखा जाएगा ।'

दूसरे सोमवार को जब वह भावरिया को 'जनयुग' देने और उससे राजनीतिक बात बढ़ाने के उद्देश्य से चली तो घर में कह गई, "शायद आज सिनेमा जाऊं मां, बहुत दिन हो गए । नौ बजे तक लौटूंगी ।" उसने पांच रुपये मां से मांग लिए ।

भावरिया शायद आज फिर सिनेमा जाने के लिए कहे । इस सम्भावना में अपने बटुए में पांच रुपये रख लेने से गीता को सन्तोष था, सिनेमा का टिकट वह स्वयं खरीदेगी । उस के लड़की होने से ही मर्द उस के लिए टिकट क्यों खरीदे ? यदि खर्च का बोझ उठाना मर्द की जिम्मेदारी है तो मर्द से ऐसी सहायता पाने का मूल्य चुकाना स्त्री की भी जिम्मेदारी हो जाएगी ।······वह यदि सिनेमा जाएगी तो किसी दूसरे को खुश करने के लिए नहीं अपने सन्तोष के लिए ।

भावरिया तीन बार चाय के पैसे दे चुका है । वह उस की मोटर में सैर कर चुकी है । भावरिया के सन्तोष के लिए या अपने ? ऐसे ही व्यवहार के कारण समाज में स्त्री को दबना पड़ता है और फिर 'पुरोहित' की ओर जाती हुई वह सोचने लगी—'आज किस प्रसंग पर वह बात करे कि भावरिया के मन में समस्याओं के लिए जिज्ञासा पैदा हो···क्यों वह गुण्डा बना रहे ? गुण्डेपन से उसे सन्तोष शायद इसीलिए होता है कि कोई दूसरी बात वह जानता ही नहीं ।····कितनी लड़कियां ऐसी हैं जिन्हें लिपस्टिक लगा कर सिनेमा जा सकने में ही जीवन की सफलता जान पड़ती है । उन्हों ने अपने व्यक्तित्व का अनुभव करने का सन्तोष कभी पाया नहीं, वे दूसरे का खिलौना बनने में ही सफलता समझती हैं । भावरिया में साहस है । जो कुछ जानता है वही तो करेगा ? कम से कम कमीना नहीं है ।···और बिना जाने तो कोई भी कुछ नहीं सकता । सभी के जीवन में परिवर्तन आता है···।'

गीता ने 'जनयुग' भावरिया को देते हुए कहा, "इसे पढ़िएगा···असेम्बली

के चुनाव के कारण कितनी धांधली मच रही है !"

भावरिया को कुछ कहने का अवसर देने के लिए वह चाय का एक घूंट लेने के लिए रुकी। भावरिया ने भी कुछ उत्तर न दे, चाय का प्याला उठा लिया। गीता को अल्कोहल की गन्ध का संदेह हुआ। उस ने यह भी देखा कि पहले की तरह साधारण सिगरेट न पीकर भावरिया एक मोटा सिगार पी रहा था जिस से धुएं के गहरे-गहरे बादल उस के मुख से निकल रहे थे। आस-पास सिगार के धुएं की गंध रच गई थी। गीता ने सोचा -- शायद अल्कोहल की गन्ध दबाने के लिए भावरिया ज्यादा सिगार पी रहा है। भावरिया बहुत गम्भीर और चुप जान पड़ा। शायद शराब पीने के कारण स्वयं संकोच अनुभव कर रहा है परन्तु आदत से मजबूर हो जाता है। बुरा बनने या समझने की इच्छा किसी को भी नहीं होती। गीता ने एक सहानुभूति-सी अनुभव की। भावरिया उस के व्यवहार में सन्देह देख लज्जा या संकोच अनुभव करे, इसलिए फिर अपनी बात कहने लगी, "चुनाव का कैसा झगड़ा चल रहा है और सब लोग अपने को सही समझते हैं !····दूसरों का भला करने के लिए, उन का सिर फोड़ने के लिए तैयार हैं, कांग्रेस लीग का, लीग कांग्रेस का और दोनों गिरनी कामगार यूनियन का !"

एक लम्बा कश खींच भावरिया बोला, "आप लोग तो कांग्रेस के खिलाफ हैं।"

"नहीं तो, हम लोग न कांग्रेस के खिलाफ हैं न लीग के। हम तो कहते हैं, सब लोग अपना ऐसा आदमी चुनें, जिस पर उन्हें विश्वास हो। कांग्रेस स्वराज्य इसलिए ही तो मांगती है कि हिन्दुस्तानियों को हक होना चाहिए कि जिसे उन की सभा चुने, वही उन का मेम्बर हो। कांग्रेस ने किसानों-मजदूरों की सभा को तो पूछा नहीं कि तुम किसे चाहते हो, अपनी राय का आदमी ऊपर से लाद दिया। जैसे अंग्रेज जिसे चाहे लाट या अफसर बना कर भेज देते हैं। कांग्रेस वैसा करती तो कम्युनिस्ट पार्टी उस का मुकाबला क्यों करती ?···यही बात लीग और पाकिस्तान के बारे में है।"

भावरिया को उत्तर देने का अवसर देने के लिए गीता ने फिर चाय का प्याला उठा होठों से लगा कर उस की ओर देखा।

एक लम्बा कश सिगार से खींच, भावरिया ने हाथ हिला दिया, "अजी झगड़ा तो होता ही है। क्या है···भाई-भाई में ऐसा झगड़ा होता है !···यह तो क्या है···"

भावरिया की ओर से जिज्ञासा का कोई संकेत न पाकर भी गीता बोलती गई, "कम्युनिस्ट पार्टी बहुत जगह कांग्रेस के आदमियों का और बहुत-सी जगह लीग के आदमियों का समर्थन कर रही है। वह तो दोनों को ही अपनी-अपनी जगह मानती है। इस के अलावा किसानों और मजदूरों की सभाओं का हक मानती है। एकता तो सब के सन्तुष्ट होने से ही हो सकती है। किसी को दबा देने से थोड़े ही एकता होती है ?"

भावरिया सिगार का धुआं सीने में रोक कर कुर्सी पर संभला और उस ने हाथ की मुट्ठी बांध ली, "ऐसा नहीं हो सकता। एक आदमी ऐसा हो कि सब को ठीक कर दे, तभी कुछ हो सकता है।"

"वह कैसे ?" गीता ने उकसाया।

"अब यह आप ही लोग जानें !" खिड़की से बाहर की ओर देख भावरिया ने कहा, "जरा घूमने चलें ? क्या राय है आप की ?"

भावरिया ने सिनेमा जाने का प्रस्ताव नहीं दोहराया। भावरिया के लिए टिकट खरीद कर मर्द से बराबरी का व्यवहार दिखाने का अरमान गीता के मन में घुट कर रह गया। उस ने अनुमति दी और उस के साथ नीचे उतर गई।

मोटर में दोनों चुपचाप बैठे समुद्र के किनारे-किनारे चौपाटी की ओर जा रहे थे। भावरिया की दृष्टि सड़क पर थी। जाने क्या सोचता, अधमुंदी आंखों और सधे हुए हाथों से वह गाड़ी चलाए जा रहा था। गीता भी ताजी हवा से ताजगी पाकर मस्तिष्क में गाड़ी चलाए जा रही थी। सोचा, सिनेमा के लिए इस ने फिर नहीं कहा। संगति और परिस्थितियों के कारण यह आदमी गुण्डा या बदमाश हो, चाहे कितनी ही बुरी आदतें हों, लेकिन आत्मसम्मान है इस में। सिनेमा के लिए एक बार मना कर दिया तो फिर नहीं कहा।

"आज उधर दूसरी तरफ चलें ?" सामने नजर किए ही भावरिया ने पूछा। गीता के मुख से 'हां' सुन कर उस ने मोटर महालक्ष्मी के मन्दिर की ओर घुमा दी। 'नेपियर-सी-फेस' रोड पर समुद्र के किनारे-किनारे वे दादर की ओर जा रहे थे। शिवाजी-पार्क से मोटर माटुंगा घूम गई और घने कुंजों से घिरे बंगलों के बीच से जाती एक सड़क पर से गुजर रही थी। सड़क के ऊपर छाए हुए वृक्षों के कारण समय से पूर्व ही कुछ अंधेरा हो रहा था।

"थोड़ी देर के लिए यहां चलें !" एक बंगले में मोटर घुमाते हुए भावरिया ने कहा।

"कहां ?" गीता के पूछ सकने के पहले ही, दो मोटरों के साथ भावरिया की भी मोटर रुक गई।

"ऐसे, अपने ही लोग हैं। आइए दो मिनट को !" भावरिया ने मोटर का इंजन रोक दिया।

गीता असमंजस में सोच रही थी—क्या अपने किसी सम्बन्धी से मिलने आया है; मैं मोटर में प्रतीक्षा करूं ? परन्तु भावरिया ने गाड़ी से उतर उस के लिए दरवाजा खोल दिया।

"मैं तो यहां के लोगों से परिचित नहीं हूं; किसी को जानती नहीं !" संकोच से कहते हुए गीता मोटर से उतर गई।

"देखने से जान जाइएगा।" आगे बढ़ते हुए भावरिया ने आश्वासन दिया।

वर्दी पहने एक नौकर ने बरामदे में बढ़ कर सलाम किया और दरवाजे का पर्दा उठा दिया।

"इधर आइए !" कमरे में दाखिल हो बाईं ओर के दरवाजे की ओर मुड़ते हुए भावरिया ने मार्ग दिखाया। गीता अनजान स्थान से सहमती हुई चली जा रही थी। इस कमरे का पर्दा उठा। गीता को आगे कर उस के पीछे भावरिया कमरे में आया।

कमरे की दीवारों के साथ चारों ओर काउच लगे हुए थे, बीच में कालीन बिछा था। एक कोने में वर्दी पहने एक नौकर खड़ा था। गीता को दिखाई दिया—वेहूदा या मतवाले से छः-सात आदमी और बीच में एक औरत बैठी थी। पहले ही श्वास में शराब की तीखी गंध मस्तिष्क में भर गई। गीता धक् से रह गई। वह कुछ समझ या निश्चय कर पाए, इतने में कोई पुकार उठा, "वाह, भाई वाह, सेठ हमारा जीत गया ! मान गए, भाई मान गए ! कहो लाला ?......अब कहो !"

दूसरा आदमी काउच से उठा। भावरिया के गले में बांह डाल उस ने अपने हाथ का गिलास भावरिया के मुख से लगा दिया। भावरिया हाथ से रोकने का इशारा करता हुआ कुछ कहने के प्रयत्न में गिलास के भीतर बुड़बुड़ा गया। वह आदमी बहुत वेहूदा ढंग से कहता गया, "हाय रे कुर्बान जाऊं, बात रख ली मेरे सेठ ने !"

गीता का माथा घूम गया, जान पड़ा कि उस के पांव तले धरती फट गई थी...समुद्र के ज्वार की प्रबल झाग से उफनाती लहरों ने सहसा उसे भंवर में

खींच लिया । उस ने सुना, "हटो भाई, हटो, बाई को बैठने दो !" फिर किसी ने उसे ही सम्बोधन किया, "बैठो, बाई बैठो···अरे ओ छोकरा ! एक गिलास में खूब ठण्डा करके बाई के वास्ते लाओ !"

जबरदस्ती मुख से लगा दिया गया गिलास समाप्त कर भावरिया ने गीता की ओर देखा । वह कुछ कहना ही चाहता था कि गीता ने धीमी परन्तु अत्यन्त दृढ़ आवाज में कहा, "इधर आइए !" और वह जिस राह आई थी उसी राह लौट पड़ी । बीच का कमरा लांघ वह बरामदे में जाकर रुकी । भावरिया विस्मित-सा उस के पीछे-पीछे लौटा ।

गीता की आंखों में मोटे-मोटे आंसू भर आए थे । क्रोध से लाल आंखें भावरिया की आंखों में डाल, आंसुओं से रुंधे गले से झुंझलाकर उस ने कहा, "किस लिए आप मुझे यहां लाए;····· यह किसी भले आदमी के लायक जगह है ?······मैं तो आप को ऐसा नहीं समझती थी ।" रुलाई का वेग रोकने के लिए गीता ने होंठ दांतों से काट लिए, परन्तु आंसुओं की धाराएं गालों पर बह गई और आंसू अब भी पलकों पर छलक रहे थे ।

"लौटिए अभी !" साड़ी का आंचल मुट्ठी में भींचते हुए गीता ने अनिवार्य स्वर में आज्ञा दी, "यह आपको शोभा देता है ?" और दांतों से होंठ दबाए वह गाड़ी की ओर चल दी । कुछ जड़-सा, कुछ किंकर्तव्यविमूढ़-सा खड़ा भावरिया गीता की ओर देखता रहा और फिर लम्बे कदम बढ़ा, गाड़ी में बैठ गया । उसने गाड़ी तुरन्त चला दी । भीतर के लोग तमाशा देखने के लिए बाहर आए तब तक गाड़ी बंगले से निकल गई थी ।

मोटर काफी तेज चाल से लौट रही थी । रास्ते-भर दोनों ही अत्यन्त विक्षिप्त थे । आघात के कारण उत्पन्न हुई उत्तेजना में अपने-आपको वश में रखने के लिए भावरिया होंठ और दांत भींचे था, उसकी भवें पलकों पर झुक आई थीं । उसी अवस्था में संध्या समय की भीड़ में से गाड़ी को तेजी से निकालते हुए, उसने छोटा गणेश बाड़ी में गीता के मकान के नीचे ला खड़ा कर दिया ।

गीता मुख से कुछ बोली नहीं, नमस्कार नहीं किया । चुपचाप गाड़ी से उतर जीना चढ़ गई ।

गीता को उसके मकान पर पहुंचा देने के बाद भावरिया के लिए माटुंगा-क्लब लौट जाना सम्भव न था । अपने साथियों के सामने अपमानित होने की

ज्वाला से उसका रक्त खौल रहा था। उस गरमी का भाप सिर में चढ़ मस्तिष्क घुंधला हो रहा था। उन लोगों के सामने वह किस मुंह से जाता? उसके कानों में पंजाबी और रेवती की किलकारियां अब भी गूंज रही थीं और ऐसा घोर अपमान करने वाली के प्रति वह कुछ कर भी न सका। क्रोध से गुलाबी आंसुओं से छलछलाई आंखों से गालों पर बहती मोटी धार; गीता का वह चेहरा बार-बार उसकी आंखों के सामने आ जाता।

स्त्री को रोते उसने पहले भी देखा था। शिकायत से रोते और रोकर प्रतिहिंसा से गाली देते भी देखा था। स्वयं उसकी अपनी ही स्त्री कई बार सिर नोचकर उसके सामने रोई थी और अब निराश होकर बेपरवाह हो चुकी थी। स्त्रियों के ऐसे व्यवहार को उसने केवल छल समझा था। गीता वैसे दिखाकर नहीं रोई। वह रोना नहीं, विवशता थी लेकिन भावरिया के साथ भी धोखा हुआ था।

भावरिया अपने मकान में लौटकर लेट गया। संध्या के आठ बजे मकान पर लेटे रहना उसके लिए असाधारण घटना थी। वह ऐसे समय, केवल दो दफा बीमारी की हालत में घर पर लेटा रहा था। अकेले लेट रहना उसे सोचने के लिए मजबूर कर रहा था। सोचना—किसी उपाय के विषय में विचार नहीं, जिसे करने की उमंग हो। सोच था, पश्चात्ताप के रूप में या अपनी विवशता का। वह सोच रहा था कि उसका कितना अपमान हुआ! अपमान के प्रतिकार में वह जान की बाजी लगाए बिना न रहता परन्तु गीता ने अपमान किया इस ढंग से कि वह विवश थी। 'यह आपको शोभा देता है?······मैं आपको ऐसा नहीं समझती थी······।' बार-बार ये शब्द उसकी स्मृति में घूम जाते थे।

सहसा ऐसा जान पड़ा, उमड़ा हुआ मेघ छंट कर उजली चांदनी छिटक आई। इन शब्दों में धमकी और गाली नहीं थी। आदर और विश्वास था। इस प्रकार कभी किसी ने उसे सम्बोधन नहीं किया था। गीता ने इज्जतदार भला आदमी समझा था, इसलिए विश्वास कर जहां कहीं साथ जाने के लिए तैयार थी······ गीता का यह विश्वास बना रहता तो अच्छा था या पुत्तूलाल से शर्त जीत लेना अच्छा था? उसने गीता की नजरों में आदर और विश्वास खो दिया······एक वेदना-सी अनुभव हुई। पहला आघात मस्तिष्क पर हुआ था। अब विचार के बाद हृदय पर चोट लगी। वह और भी शिथिल हो गया।

भावरिया और भी गहरे विचार में डूब गया। काम तो वह नित्य ही करता

रहता था। वह काम न कर पाने की असफलता से ही उसका अपमान हुआ था; अब दुख उस असफलता का न था। दुःख था—क्यों उसने वैसा करने का प्रयत्न किया ? वैसा वह सदा से करता आया था।······वैसे काम करने के लिए उसे पहले भी रोका गया था। यह काम अच्छा नहीं, यह वह सदा से जानता था और जानकर भी करता रहा। पिता ने उसे धर्मात्मा बनाने के लिए कौन प्रयत्न नहीं किया ? पाप के परिणाम में मिलने वाली यातनाओं की कहानियां दिमाग में घूमने लगीं। अपने मन्दिर में परिक्रमा के स्थान में बने नरक की यातनाओं के चित्र उसकी आंखों के सामने घूमने लगे। इन यातनाओं का भय भी उसे उन सब पापों से बचा न सका······आज ही उसे इसके लिए पश्चात्ताप हुआ।

पाप और बुरे काम के लिए पश्चात्ताप से मन खिन्न हो जाने पर उस संध्या कहीं जा सकना उसके लिए सम्भव न रहा और अभ्यास के विरुद्ध घर में लेटे रहने से भी विकलता हो रही थी। लेटे रहने की थकावट से अनुभव हो रहा था जैसे रोग-शैय्या पर पड़े उसे कई मास बीत गए परन्तु घड़ी में केवल साढ़े ग्यारह ही बजा था। वह उठकर मन्दिर की ओर चला। मन्दिर की सीढ़ी चढ़ते समम पुजारीजी की कोठड़ी से सुल्फे की मीठी-सी और मादक गंध आई। ठाकुर जी का अन्तिम भोग लगने को अभी शेष था।

भावरिया परिक्रमा के स्थान में जा स्वर्ग-नरक के चित्रों को देखने लगा। स्वर्ग के चित्रों में स्वर्ण के सिंहासन पर बैठे देवताओं और पुण्यात्माओं को अप्सराएं अमृत अर्पण कर रही थीं। उसकी स्मृति में बीसियों ऐसे अवसरों के चित्र फिर गए जब इस संसार की अप्सराओं ने उसे बिल्लौरी गिलासों में मद अर्पण किया था। जीवन-भर भय से दबे रहकर, धार्मिक जीवन की तपस्या से मिलने वाले सुखों को वह कुछ रुपये खर्च कर पा चुका था। उन सुखों के लिए उसे कुछ प्रलोभन न हुआ।

आगे बढ़कर वह नरक की महायातनाओं के चित्रों के सामने जा खड़ा हुआ—माथे पर सींग उगे, हाथ-भर लम्बी जीभ लटकाए यम के गणों द्वारा पापियों का ऊखल में डाल कर कूटे जाना; खौलते तेल की कढ़ाई में डुबकी देना, गला हुआ सीसा मुख में डाला जाना और आरे से चीरा जाना···इन सब परिणामों और भयों को वह आरम्भ से ही जानता था, परन्तु वे सब भय उसे पाप से दूर न रख सके। इन सब भयों से निराश होकर ही उसने इस जन्म में अधिक

से अधिक सुख पा लेने का यत्न किया। वह कहां तक भयभीत रहता ? भय उसे पाप से दूर न रख सका।······परन्तु आज उसे पाप से ग्लानि हुई ! दण्ड के भय से नहीं केवल आदर पाने की इच्छा से···गीता के शब्द उसे याद आने लगे—'मैं तो आपको ऐसा नहीं समझती थी···क्या यह आपको शोभा देता है ?' ······जैसे भीख मांगना मुझे शोभा नहीं देता पर दण्ड के भय से नहीं, केवल आत्मसम्मान के विचार से खड़े-खड़े वह सोचता रहा, यदि ऐसा ही विचार आरम्भ से होता, ये सब बुरे काम क्यों किए होते ! परन्तु वैसे कभी सोचा नहीं; किसी ने उस तरह सुझाया भी नहीं।

उसी समय भीतर से भगवान की अन्तिम आरती की घण्टी सुनाई दी। अचानक उसे ध्यान आया—निरंतर भगवान की पूजा उस के मन्दिर में होती रही और भगवान ने इतना भी नहीं सुझाया जैसा आज इस लड़की ने !···इस के साथ ही याद आया, जब गीता ने एकता से अंग्रेजों के खिलाफ लड़ कर स्वराज्य लेने की बात कही थी, तब उस ने कहा था – भगवान की इच्छा बिना कुछ नहीं हो सकता। तब गीता हंस दी थी।······शायद वह भगवान से नहीं डरती ! ······ उन्हें नहीं मानती !······केवल अपने साहस और इज्जत के ख्याल से ही जो उचित समझती है, करती है।

भावरिया को ख्याल आया कि पुजारी जी आरती के बाद मन्दिर में ताला लगा देंगे कि रात में कोई भगवान को हानि न पहुंचाए। भगवान के साथ बन्द होकर रात बिताने की इच्छा न थी। भावरिया मन्दिर से निकल फिर अपने कमरे में आ गया।

कितने बरस उसे उस कमरे में बीत गए थे परन्तु आज उसे वह कमरा अपरिचित-सा लग रहा था। यों जाग कर रात के समय उस ने इस कमरे में कभी कोई विचार न किया था। प्रायः ही आधी रात बीते वह लौटता था। शराब पिए रहने से एक मूढ़ता-सी छाई रहती। आते ही वह सो जाता। इतना अधिक सोचने की थकावट के कारण और नित्य के अभ्यास से बार-बार इच्छा हो रही थी कि थोड़ी पी ले तो नींद आ जाए परन्तु मन से एक फटकार-सी उठती, अब क्या पीना !

पिए या न पिए; यह सोचते-सोचते खयाल आया—इस समय न पिएगा सही परन्तु बाद में जब लोग पीने को कहेंगे····? इस प्रसंग में क्लब से अपमानित होकर आने की बात फिर ध्यान में आ गई। सोचा, उन लोगों के सम्मुख

वह जाएगा किस मुंह से ?·······मन ने विरोध और उपेक्षा से कहा—ऐसे आदमियों में जाने की जरूरत ही क्या ? और दुनिया नहीं है क्या ? मुझे क्या यह शोभा देता है ? मैं क्या इसी लायक हूं ? उस ने सोचा अच्छा ही हुआ, भगवान जो करते हैं, भलाई के लिए ! भगवान की दया से यह घटना आज हो गई और जैसे वह कीचड़ से निकल आया ।

यह सब निश्चय कर लेने पर भी शरीर में कुछ अस्वाभाविक शैथिल्य-सा लग रहा था और जिह्वा पर बार-बार शराब के स्वाद का अभाव याद आ जाता था । वक्त-जरूरत के लिए, युद्ध के समय मौके से मिल गई बढ़िया विलायती शराब की दो बोतलें जिस आलमारी में रखी थीं, वह कल्पना में बार-बार दिखाई दे जातीं । इस बात से स्वयं अपने ऊपर ही खीझ उठती—उठा कर उन बोतलों को फेंक दे ! मन ने तर्क किया—नुकसान करने से क्या लाभ ?········ किसी को दे दी जा सकती हैं । फिर खयाल आया—दे देने से किसी का क्या लाभ होगा ? आखिर वह उठा । आलमारी खोली । बोतलें ले, डाट खोलने का पेंच ढूंढ़ा । बोतलें खोलीं और दांत भींच कर नाबदान में उड़ेल दीं और स्वयं अपनी प्रतारणा करके कहा—बस !

भावरिया कई दिन तक अपने साथियों से मिलने न गया था। पुत्तूलाल, रेवती, सुकुल, पंजाबी वगैरह उस के यहां आए । भावरिया को संकुचित और निस्तेज देख उन्हों ने मित्रता के अधिकार से प्रतारणा की-क्या हो सेठ तुम भी; बच्चों की सी बातें करते हो ! एक दिल-बहलावे की चीज के पीछे इतनी परेशानी ? अरे यार, एक क्या, कालिज की ऐसा बीसियों लौण्डियां हाजिर कर दें ! ····न हो उसी का पता दो ।·····साली को उठा न लाएं तो कहना किसी के पेशाब से मूंछ मुंडवा दें ! यह रांडों का सा बिसूरना छोड़ो ! मर्द-बच्चे हो······।" भावरिया ने उन्हें टाल दिया । पुरानी राह से उस का मन उचाट हो चुका था ।

भावरिया की पुरानी संगति छूट गई थी । दिन और आधी रात तक का लम्बा समय काटना दूभर हो जाता था । बहुत-सा समय वह दुकान की गद्दी पर बैठ कारोबार देखने का यत्न करता । शेष समय में उस ने गीता की दी हुई चार-पांच छोटी-छोटी पुस्तकें पढ़ डालीं । पढ़ने का उसे अभ्यास न था । छपा हुआ प्रत्येक अक्षर उस के लिए सत्य था । उस ने उन पुस्तकों और 'जनयुग' की प्रत्येक कापी को दो-दो बार बढ़ा और उसे यह सब सत्य जान पड़ा । सोचा,

ऐसे काम में सहयोग देकर उसे संतोष हो सकता है। और अधिक पढ़ने और जानने की इच्छा हुई। इस प्रकार की पुस्तकें गीता से ही मिल सकती थीं। गीता का घर उसे मालूम था परन्तु वहां जाने में संकोच अनुभव होता···· उस की नजरों में वह आदर-विश्वास खो चुका था।

भावरिया बाजार से अखबार लेकर पढ़ने लगा। शनिवार के दिन बाजार से 'जनयुग' लेकर भी पढ़ा। देश-भर में प्रांतीय असेम्बलियों के चुनाव का संघर्ष चल रहा था। अखबारों में प्रायः परस्पर-विरोधी बातें रहती थीं। उसे विस्मय होता था, जैसे लोग घर-बार और बाजार में 'मैं-मैं, तू-तू' कर झगड़ते हैं, वैसे ही अखबार भी कर रहे थे। अधिकांश अखबारों में कम्युनिस्टों के विरुद्ध बातें और उन की निन्दा रहती थी। कम्युनिस्टों की बातों में उसे सचाई मालूम हुई थी। उन बातों का इतना विरोध देख कर उस का मस्तिष्क चकरा जाता था। इन अख़बारों में कम्युनिस्टों के खिलाफ ऐसे-ऐसे लांछन और आरोप रहते थे कि भावरिया विस्मित रह जाता। अखबारों में छपा रहता, "कम्युनिस्ट, मुस्लिम लीग और सरकार से पैसा लेकर देशद्रोह करते हैं, गोमांस खाते हैं और अपनी पार्टी की लड़कियों को किराये पर देते हैं।" गीता को अच्छी तरह जान लेने के बाद उसे इन बातों पर विश्वास न होता था। परन्तु वह सोचता—'यदि यह सब सच नहीं तो अखबार में छप कैसे रहा है ?' परिणाम-स्वरूप, अखबारों की प्रत्येक बात को वह सन्देह की दृष्टि से देखने लगा।

राजनीतिक व्याख्यान की खबर पाता तो नेताओं के मुख से सच बात जानने के लिए चौपाटी पहुंचता। पंडित जवाहरलाल और सरदार पटेल के मुख से उस ने सुना कि कम्युनिस्ट अंग्रेजों से मिले हुए हैं और देश से गद्दारी कर रहे हैं। ऐसे नेताओं की बात पर वह अविश्वास न कर सका। वह देश के प्रति विश्वास-घात करने वालों से घृणा करने के लिए मजबूर हो गया।

कम्युनिस्टों का खयाल आते ही गीता की भी बात याद आ जाती। सोच-सोच कर उस ने निश्चय किया—कम्युनिस्ट पार्टी जनता और सरकार को धोखा देकर पैसा उड़ाने वाले लोगों का गिरोह है। उस ने यह भी सुना था कि कम्युनिस्ट लोग रूस से भी पैसा पाते हैं। मन में शंका होती, आखिर इतना पैसा बटोर कर ये लोग करते क्या हैं ? गीता के व्यवहार में पैसे का उपयोग करने या जमा करने की कोई बात दिखाई न दी थी। सोचा—आपस में बांट लेते हों या मजदूरों में बांट देते हैं। इन्हें इस से क्या मिलता है ? परन्तु ये कांग्रेस से

क्यों लड़ते हैं ? गीता इन लोगों में कैसे फंस गई ? और फिर सोचने लगता—वह भी घुटी हुई छोकरी है। जबान उस की कैंची की तरह कच-कच चलती है। कैसा चकमा दे गई ! गीता के प्रति घृणा-सी हुई परन्तु साथ ही वह बात याद आई—'क्या आप को यह शोभा देता है ? मैं तो आप को ऐसा नहीं समझती थी !' वह गीता के प्रति क्रोध न कर सका·····उस भली लड़की को कम्युनिस्टों ने जाने कैसे फंसा लिया है। वह दो सौ रुपया भी उस ने उन्हीं लोगों के हाथ में जा रखा······जाने क्या करते हैं रुपये का ?

लेबर-फ्रंट (मजदूर-मोर्चे) पर काम करने वाले कामरेड श्रीनिवास, पद्मा मालेकर और मुरारी कई दिन से कह रहे थे कि कांग्रेस के प्रचार से मजदूर बस्तियों में उन की स्थिति कमजोर हो रही है। उन की सहायता के लिये और कामरेड भेजे जायें। मजहर और मेघनाथ शहर के दूसरे मोर्चों पर ढील करने के पक्ष में नहीं थे। उन का विचार था—अभी तक स्थिति ऐसी है कि उन के केडर (कार्यकर्ता) मध्यम, शिक्षित श्रेणी से ही मिल सकते हैं इसलिये मध्यम-वर्ग से सम्बन्ध स्थापित करने वाले कल्चर फ्रण्ट (सांस्कृतिक मोर्चे) और स्टूडेंट फ्रण्ट (विद्यार्थी मोर्चे) की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिये। इसके अतिरिक्त उन्हें मजदूरों में किये गये पार्टी के ठोस काम पर भरोसा था। मजदूरों के आड़े समय में सदा हम ही उनके साथ खड़े हुये हैं। हम ने ही उन की हड़तालों को सफल बनाया है। हमें छोड़ वे अपना वोट किसी और को न देंगे। अधिक प्रदर्शन से लाभ क्या ?

परन्तु केन्द्रीय दफ्तर से हिदायत मिली कि चुनाव के समय तक सब फोर्सिज (शक्तियां) लेबर फ्रण्ट पर कन्सन्ट्रेट (केंद्रित) कर दी जायें। केवल मजदूरों की आर्थिक मांगों पर ही बल देना पर्याप्त नहीं। मजदूरों की राष्ट्रीय भावना की सहानुभूति पाना भी आवश्यक है। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं की नियुक्ति मजदूर क्षेत्रों में कर दी।

गीता को भी गिरगाम, धोबीतालाब और फोर्ट छोड़ कर नित्य ट्राम से परेल जाना पड़ता था और संध्या साढ़े आठ से पहले वह लौट न पाती। मजदूर क्षेत्र में कम्युनिस्टों का दल बढ़ने पर कांग्रेस वालों का दल भी बढ़ा। चुनाव के दंगल में केवल अपना प्रचार करना ही पर्याप्त न था। विरोधी दल के प्रचार को रोकना, उसके प्रचार को विफल करना और भी आवश्यक था।

विचारों का ऐसा संघर्ष शब्दों की सीमा लांघ कर हाथ-पांव से भी प्रकट होने लगता है। अपने विरोधी की ईमानदारी पर भी विश्वास करना या दूसरे की बात को बेईमानी समझ कर भी उसे सहते जाना, सीधे और साधारण व्यक्ति की संस्कृति के वश की बात नहीं इसलिये जुलूस निकाल कर और नारे लगा कर प्रचार करने वाले दलों में प्रायः भिड़न्त हो जाती थी और परिणाम में सिर-फुटव्वल की नौबत आ जाती।

कांग्रेस का समर्थन बहुत-से अखबार कर रहे थे। कम्युनिस्टों का अपना एक ही अखबार था—'जनयुग'। कामरेड लोग उसे घर-घर पहुंचा देने के लिये पूरी ताकत लगा रहे थे। सभी मेम्बर, युवक और युवतियां अखबार बेचने जाते थे। अधिक अखबार बेच सकना कामरेडों में योग्यता का प्रमाण हो गया था।

कांग्रेस-कार्यकर्ताओं और कांग्रेस-समर्थकों को 'जनयुग' का प्रचार, कांग्रेस-विरोध और देशद्रोह के विष से भरा जान पड़ता था। भोली-भाली जनता को इस विष से बचाने के लिये 'जनयुग' न पढ़ने के, उसे जला देने के नारे लगाये जाते थे। 'जनयुग' बेचने वालों को गाली और मार-पीट की धमकी दी जाती थी। कांग्रेस के स्थानीय नेता व्याख्यानों में 'जनयुग' की निन्दा करके और उसे बेचने वाले कामरेडों को, विशेष कर अखबार बेचने वाली कामरेड लड़कियों को दुश्चरित्र कह कर 'जनयुग' के विरुद्ध घृणा फैलाने का यत्न करते थे।

इस विरोध से कामरेडों के अखबार बेचने की उत्तेजना और बढ़ रही थी। 'जनयुग' के विरोधियों की उत्तेजना भी बढ़ रही थी। कई जगह 'जनयुग' छीन कर जला दिया गया; कई जगह कामरेड पिट गये। उस उत्तेजना में स्त्रियों और लड़कियों के प्रति सज्जनता और उदारता का विचार न रह सका। कई जगह कामरेड लड़कियां भी पिट गयीं। उनकी साड़ियां नोचने का यत्न किया गया। अखबार का बण्डल छीना जाने पर भी पद्मा मालेकर ने छोड़ा नहीं और परिणाम में उसकी कलाई पर चोट पड़ने से हड्डी टूट गई। मेघनाथ के माथे पर ढेला लगने से खून बह गया था। वह पट्टी बांध कर व्याख्यान देने और अखबार बेचने पहुंचता था।

ऐसे सब समाचारों को कम्युनिस्ट अपने पत्र 'जनयुग' में मोटे-मोटे अक्षरों में छापते थे। पिटने वाले या ज्यादती सहने वाले कामरेडों के चित्र छापे जाते। परिणाम में कामरेड लोग और अधिक संख्या में गाली-गलौज और मार-पीट का सामना करने के लिये आगे बढ़ने लगे।

कामरेडों का विचार था कि गाली और मार खाना ही उनकी विजय में सहायक होगा। जनता की सहानुभूति स्वयं ही पीड़ितों की ओर हो जायेगी परन्तु कामरेडों के न डरने पर भी उन के समर्थक मजदूर डरने लगे। ऐसी निर्बल पार्टी से सहानुभूति प्रकट करना या ऐसी पार्टी से अपने उद्धार की आशा करना मजदूरों को निरर्थक जान पड़ने लगा।

कम्युनिस्टों ने मजदूरों में अपने प्रति भरोसा कम होते देखा तो केन्द्रीय दफ्तर से हिदायत दी गई—कोई कामरेड चुपचाप मार खा कर न लौटे। मार का बदला मार से दो। कम्युनिस्ट पार्टी की लाल सेना (स्वयंसेवक दल) के आदमी लाल झण्डे लेकर प्रचार करने वाले कामरेडों के साथ रहने लगे। इन झण्डों में कमची के स्थान में काम लायक डण्डे रखे जाते।

केन्द्रीय दफ्तर से पिट कर न आने की हिदायत मिल गई तो श्रीनिवास, रंगा और फजल जैसे कामरेडों ने अपनी बांहों के पुट्ठे मल कर कहा—'अब देखा जायेगा!' लाल सेना के कई सैनिक जो विरोधियों की गालियों से परास्त हो गये थे; उनकी गर्दनें फिर ऊंची हो गयीं। उन्होंने विरोधी की चोट की प्रतीक्षा न कर गाली के जवाब ही में उन्हें बिछा दिया। वे इस प्रतीक्षा में रहते कि कोई उन्हें गाली दे।

अगले दिन अखबारों में कम्युनिस्टों के अत्याचार के कांड की खबरें घायलों के चित्रों सहित छापी गयीं। कम्युनिस्ट पार्टी के केन्द्रीय दफ्तर ने फिर एक बार सिर खुजाया। फिर नई हिदायत कामरेडों को दी गई—केवल उत्तेजना से विरोधी पर प्रहार करना अनुचित है। केवल मार का जवाब ही मार से दिया जाना चाहिये। सरमायादारों और साम्राज्यवादियों के छलिया दूत इस प्रकार के कुचक्र से हमारे और कांग्रेस के विरोध को बढ़ाकर अपना उल्लू सीधा करने का प्रयत्न करेंगे। ध्यान रहे, किसी भी झगड़े में किसी जाने-पहचाने कांग्रेसी व्यक्ति या नेता को चोट न आये। ऐसी घटना से जनता को हमारे विरुद्ध भड़काया जा सकता है। हमारा विरोध करने वाले केवल कांग्रेसी ही नहीं हैं। कांग्रेस की आड़ लेकर इस समय देश के दूसरे शत्रु, सरमायादारों के गुर्गे हमारा विरोध कर रहे हैं।

विदेशी सरकार और पुलिस को सदा परेशान करने वाले कांग्रेसी और कम्युनिस्ट 'इन्कलाब जिन्दाबाद, आजादी लेकर रहेंगे, साम्राज्यवाद और ब्रिटिश सरकार के नाश' के नारे लगाते हुये निकलते और ये नारे आपस में एक-दूसरे

के नाश के नारों में बदल जाते। वे लोग आपस में सिर-फुटव्वल भी करते। पुलिस और सरकार उन्हें आपस में झगड़ने की पूरी स्वतंत्रता दे हथेली की ओट हंसती और जब भारत की स्वतंत्रता के लिये प्राण देने के लिये आतुर इन दोनों दलों का झगड़ा बहुत बढ़ जाता, तो विदेशी सरकार की शक्ति पुलिस के रूप में आगे बढ़ती। विदेशी सरकार दोनों को डांट-फटकार कर शान्त रहने का उपदेश देती और दफा १४४ का अनुशासन लगा देती।

माटुंगा-क्लब की घटना को अभी दो सप्ताह नहीं बीते थे। पदमलाल दस बजे आकर दुकान की गद्दी पर बैठा था कि 'सिवाजी' और 'हिंगाटन' मिलों के आढ़ती भावाजी आते दिखाई दिये। भावरिया ने उन्हें सत्कार से गद्दी पर बिठाया और कष्ट करने का कारण पूछा।

भावाजी भावरिया के कन्धे पर स्नेह से हाथ रख बोले, "अरे कुछ नहीं, ऐसे ही कितने दिन से दिखाई नहीं दिये। खयाल आया, जाकर देख आयें, क्या हाल है।" भावरिया की कुशल पूछ लेने और दूसरी अनेक बातें हो जाने के पश्चात् भावाजी ने धीमे स्वर में बात की, "भाई, इलेक्शन का झगड़ा है न? कांग्रेस के काम से फुर्सत ही नहीं होती। आने की तो कब से सोच रहे थे। और भाई कांग्रेस तो आप ही लोगों की है। कांग्रेस का काम तो सब के सहयोग से ही होता है।"

भावाजी जैसे प्रतिष्ठित व्यक्ति के आने से भावरिया को उत्साह हुआ ही था। उसने अनुमान किया—चन्दे का सवाल होगा। इससे पहले भी भावाजी की बात उसने नहीं टाली थी। इस समय दुष्कर्म से मन उचटा हुआ था। भले काम का अवसर आने से उसे और भी अधिक उत्साह हुआ।

"जैसे आज्ञा कीजिए," भावरिया ने विनय से हाथ जोड़ दिए, "सब तरह से तैयार हैं। आप से कुछ दूर थोड़े ही हैं।"

भावाजी ने स्नेह से भावरिया के हाथ थाम लिए, "अरे भाई, तुम तो अपने ही हो। अब तक तो मुसलमान कांग्रेस के दुश्मन थे, अब इन लाल बावटावाले कम्युनिस्टों को देखो। कम्युनिस्ट क्या कौमनस्ट हैं।......अंग्रेजों से पैसा खाते हैं। लाट साहब की कौंसिल में खुद कबूल लिया सरकार ने*, मुस्लिम लीग से

* केन्द्रीय असेम्बली में सरकार ने श्री एम० एन० राय की रैडिकल डैमोक्रेटिक पार्टी को तेरह हजार रुपया मासिक सहायता देने की बात स्वीकार की थी।

कामरेडों का विचार था कि गाली और मार खाना ही उनकी विजय में सहायक होगा। जनता की सहानुभूति स्वयं ही पीड़ितों की ओर हो जायेगी परन्तु कामरेडों के न डरने पर भी उन के समर्थक मजदूर डरने लगे। ऐसी निर्बल पार्टी से सहानुभूति प्रकट करना या ऐसी पार्टी से अपने उद्धार की आशा करना मजदूरों को निरर्थक जान पड़ने लगा।

कम्युनिस्ठों ने मजदूरों में अपने प्रति भरोसा कम होते देखा तो केन्द्रीय दफ्तर से हिदायत दी गई—कोई कामरेड चुपचाप मार खा कर न लौटे। मार का बदला मार से दो। कम्युनिस्ट पार्टी की लाल सेना (स्वयंसेवक दल) के आदमी लाल झण्डे लेकर प्रचार करने वाले कामरेडों के साथ रहने लगे। इन झण्डों में कमची के स्थान में काम लायक डण्डे रखे जाते।

केन्द्रीय दफ्तर से पिट कर न आने की हिदायत मिल गई तो श्रीनिवास, रंगा और फजल जैसे कामरेडों ने अपनी बांहों के पुट्ठे मल कर कहा—'अब देखा जायेगा!' लाल सेना के कई सैनिक जो विरोधियों की गालियों से परास्त हो गये थे; उनकी गर्दनें फिर ऊंची हो गयीं। उन्होंने विरोधी की चोट की प्रतीक्षा न कर गाली के जवाब ही में उन्हें बिछा दिया। वे इस प्रतीक्षा में रहते कि कोई उन्हें गाली दे।

अगले दिन अखबारों में कम्युनिस्टों के अत्याचार के कांड की खबरें घायलों के चित्रों सहित छापी गयीं। कम्युनिस्ट पार्टी के केन्द्रीय दफ्तर ने फिर एक बार सिर खुजाया। फिर नई हिदायत कामरेडों को दी गई—केवल उत्तेजना से विरोधी पर प्रहार करना अनुचित है। केवल मार का जवाब ही मार से दिया जाना चाहिये। सरमायादारों और साम्राज्यवादियों के छलिया दूत इस प्रकार के कुचक्र से हमारे और कांग्रेस के विरोध को बढ़ाकर अपना उल्लू सीधा करने का प्रयत्न करेंगे। ध्यान रहे, किसी भी झगड़े में किसी जाने-पहचाने कांग्रेसी व्यक्ति या नेता को चोट न आये। ऐसी घटना से जनता को हमारे विरुद्ध भड़काया जा सकता है। हमारा विरोध करने वाले केवल कांग्रेसी ही नहीं हैं। कांग्रेस की आड़ लेकर इस समय देश के दूसरे शत्रु, सरमायादारों के गुर्गे हमारा विरोध कर रहे हैं।

विदेशी सरकार और पुलिस को सदा परेशान करने वाले कांग्रेसी और कम्युनिस्ट 'इन्कलाब जिन्दाबाद, आजादी लेकर रहेंगे, साम्राज्यवाद और ब्रिटिश सरकार के नाश' के नारे लगाते हुये निकलते और ये नारे आपस में एक-दूसरे

के नाश के नारों में बदल जाते। वे लोग आपस में सिर-फुटव्वल भी करते। पुलिस और सरकार उन्हें आपस में झगड़ने की पूरी स्वतंत्रता दे हथेली की ओट हंसती और जब भारत की स्वतंत्रता के लिये प्राण देने के लिये आतुर इन दोनों दलों का झगड़ा बहुत बढ़ जाता, तो विदेशी सरकार की शक्ति पुलिस के रूप में आगे बढ़ती। विदेशी सरकार दोनों को डांट-फटकार कर शान्त रहने का उपदेश देती और दफा १४४ का अनुशासन लगा देती।

माटुंगा-क्लब की घटना को अभी दो सप्ताह नहीं बीते थे। पदमलाल दस बजे आकर दुकान की गद्दी पर बैठा था कि 'सिवाजी' और 'हिंगाटन' मिलों के आढ़ती भावाजी आते दिखाई दिये। भावरिया ने उन्हें सत्कार से गद्दी पर बिठाया और कष्ट करने का कारण पूछा।

भावाजी भावरिया के कन्धे पर स्नेह से हाथ रख बोले, "अरे कुछ नहीं, ऐसे ही कितने दिन से दिखाई नहीं दिये। ख़याल आया, जाकर देख आयें, क्या हाल है।" भावरिया की कुशल पूछ लेने और दूसरी अनेक बातें हो जाने के पश्चात् भावाजी ने धीमे स्वर में बात की, "भाई, इलेक्शन का झगड़ा है न? कांग्रेस के काम से फुर्सत ही नहीं होती। आने की तो कब से सोच रहे थे। और भाई कांग्रेस तो आप ही लोगों की है। कांग्रेस का काम तो सब के सहयोग से ही होता है।"

भावाजी जैसे प्रतिष्ठित व्यक्ति के आने से भावरिया को उत्साह हुआ ही था। उसने अनुमान किया—चन्दे का सवाल होगा। इससे पहले भी भावाजी की बात उसने नहीं टाली थी। इस समय दुष्कर्म से मन उचटा हुआ था। भले काम का अवसर आने से उसे और भी अधिक उत्साह हुआ।

"जैसे आज्ञा कीजिए," भावरिया ने विनय से हाथ जोड़ दिए, "सब तरह से तैयार हैं। आप से कुछ दूर थोड़े ही हैं।"

भावाजी ने स्नेह से भावरिया के हाथ थाम लिए, "अरे भाई, तुम तो अपने ही हो। अब तक तो मुसलमान कांग्रेस के दुश्मन थे, अब इन लाल बावटावाले कम्युनिस्टों को देखो। कम्युनिस्ट क्या कौमनस्ट हैं।......अंग्रेजों से पैसा खाते हैं। लाट साहब की कौंसिल में खुद कबूल लिया सरकार ने*, मुस्लिम लीग से

---

* केन्द्रीय असेम्बली में सरकार ने श्री एम० एन० राय की रैडिकल डैमोक्रेटिक पार्टी को तेरह हजार रुपया मासिक सहायता देने की बात स्वीकार की थी।

पैसा खाते हैं। नहीं, तुम ही कहो, भला हिन्दू होकर तुम पाकिस्तान का समर्थन कर सकते हो ? अरे भाई, अपने देश के ही दो टुकड़े कर दिए तो स्वराज्य क्या पत्थर लोगे ? अब देखो, चुनाव में कांग्रेस के मुकाबिले खड़े हो रहे हैं। गरीब मजदूरों के हिमायती बनते हैं। अरे भाई, तुम गरीब मजदूर की क्या सहायता करोगे ?......नंगा नहाये तो निचोड़े क्या ? उल्टे उन्हीं का तो पैसा खाते हो ! अरे सन् बयालीस में तो सरकार से मिल गए। अब आए हैं गरीबों की मदद करने। अरे गरीबों का मददगार भला महात्मा गांधी से बढ़कर कौन है ? जिसने गरीबों की खातिर राज-पाट त्याग दिया। गरीबों का कुछ बनेगा तो सेठ साहूकारों की मदद से कि इन गरीबों का पैसा खाने वालों से ?"

भावरिया ध्यान से भावाजी की बात सुन रहा था और उसे बात ठीक जंच रही थी। भावाजी कहते गए, "......लेकिन वो तूफान मचाया है बदमाशों ने ! पुलिस तो उनकी मददगार है ही, और मवालियों को पैसा दे, ताड़ी पिलाकर ले आते हैं......मिलों के बदमाश मजदूर, जिनके न घर का पता न घाट का, उन्हें लाकर शहर के भले आदमियों के लड़कों को परेशान करते हैं। परेल में कांग्रेस वालंटियर जाते हैं तो बदमाश उन्हें पीट देते हैं। कांग्रेस के झण्डे छीनकर जला देते हैं !......और तुमसे क्या-क्या कहें ! अब क्या कांग्रेस-वाले बेचारे पुलिस के यहां जाएं ? आपस के लोगों को ही करना है, भैया !"

भावाजी भावरिया की पीठ पर हाथ रखकर कहते गए, "इसका इंतजाम करना है। कांग्रेसी सरकार कायम होगी तो अपने ही लोगों का फायदा होगा। 'सिवाजी' मिल वाले तो यों ही बदमाशों से परेशान हैं। कह रहे थे, तुम्हारे आदमियों के लिए जितना रुपया कहो, भिजवा दें। हमने कहा, 'अरे भावरिया और पुत्तूलाल कोई बेगाने नही हैं।"

भावरिया ने कुछ कर न पाने से शरीर की शिथिलता और मन की उदासी में कुछ करने के अवसर की स्फूर्ति अनुभव की। भावाजी जैसे बड़े आदमी उसकी दुकान पर इतना कहने आए थे। उसने नम्रता से आश्वासन दिया, "आपने यहां तक आने का कष्ट व्यर्थ किया। कहला भेजते, मैं कोठी पर हाजिर हो जाता। आपके हुकुम से कौन बाहर है ? सब ठीक हो जाएगा। देख लेंगे कितनी हिमायत है पुलिस की और कौन बदमाश मवाली हैं। आपको चिन्ता करने की जरूरत नहीं। क्या पुत्तूलाल भाई के यहां भी कहला दिया ?...उनसे जरा कष्ट कर अपने मुंह से कह देते...यह न समझें कि हमें गिना नहीं। आप

जानते हैं, भैया तनिक-तनिक पर तुनकते हैं। परेल में उनके आदमी भी हैं और वैसे हम तो आपके और 'सिवाजी' वालों के हुकुम से बाहर नहीं। हम तो रहेंगे ही। जब भी याद किया, हाजिर रहे।"

भावरिया ने मलखान, पंजाबी और टीका को बुलवा भेजा। अपनी आस्तीनें समेटते हुए पंजाबी ने कहा, "हुकुम मिला, दौड़े आए। हम तो कहते थे भाई सेठ को जाने क्या फकीरी लग गई कि सब लोगों को भुला दिया।"

मलखान और टीका ने चलते समय 'आदमियों के लिए कुछ 'खाने-पीने' की बात का इशारा किया। भावरिया खुद तो कसम ले चुका था परन्तु दूसरे का हक कैसे मारता? मन में उसने कहा—अपने को क्या, 'सिवाजी' वाले, जिनका काम है, जानें। उसने मुनीम से पचास रुपये टीका को दिलवा दिए और कहा, "पांच बजे तक सब लोग सकलिया के यहां पहुंच जाएं।"

'सरदार' लोगों को, सेना का संचालन करने वाले सेनापतियों की भांति घटनास्थल पर स्वयं जाने की जरूरत नहीं रहती। इशारा पाकर उनके आदमी सब कुछ कर सकते है। 'सरदारों' का काम अवसर के अनुकूल आदमी छांटकर काम में लगाना और अपने आदमियों की परवरिश करते रहना होता है परन्तु पुत्तूलाल को खबर मिली तो उसने भावरिया को कहला भेजा था कि हम भी चलेंगे, सेठ भी आएं। एक तरफ से देखते रहेंगे। बहुत दिन से मिले नहीं, मुलाकात हो जाएगी। पुत्तूलाल से मुलाकात के लिए विशेष उत्साह न होने पर भी संदेश मिलने पर टाल देना भावरिया को उचित न जंचा। इससे मन-मुटाव बढ़ जाता।

भावरिया अपनी कार में परेल पहुंचा तो एक टोली हंसिया-हथौड़े के चिन्ह-वाले लाल झंडे लिए ट्राम स्टेंड के समीप 'पोआबावड़ी' में घूम रही थी। उनके सांवले चेहरों पर पसीना चमक रहा था। वे बाहें उठा-उठाकर नारे लगा रहे थे, "इन्कलाब जिन्दाबाद! साम्राज्यवाद का नाश हो! अंग्रेजी राज का नाश हो! सरमायादारी का नाश हो! हिन्दू-मुस्मिल भाई-भाई!"

टोली का नेता घूमकर पुकारता, "वोट किसको दोगे?" टोली उत्तर देती, "गिरनी कामगार यूनियन को!" वह फिर बांह उठाकर पूछता, "वोट किसको दोगे?" टोली उत्तर देती, "कामरेड डांगे को!" नारे लगाते-लगाते यह टोली एक गली में चली गई।

भावरिया अपनी मोटर की चाल धीमी कर सोच रहा था—पुत्तूलाल अभी

आया या नहीं; आया है तो जाने किस जगह हो ? वह 'पोआ-बावड़ी' के चक्कर की गोलाई में बनी चाय की दुकानों में झांकता चला आ रहा था। उसे चक्कर के आखिरी ईरानी होटल में अशफाक पंजाबी दिखाई दिया।

पंजाबी भावरिया की मोटर का हार्न पहचान कर सिगरेट फूंकता हुआ रेस्तोरां से बाहर निकल आया। दुकान से उतर मोटर की खिड़की के समीप आ उसने कहा, "सेठ, सब लोग आ गए हैं। लाला के आदमी भी आ गए हैं। अभी तो लाल झण्डे वालों का कुछ जमाव नहीं बंधा।"

"लाला नहीं आए ?" भावरिया ने पूछा।

"नहीं, अभी तो नहीं, सुकुल आए हैं। उधर होटल में हैं।" पंजाबी ने हाथ से संकेत कर बताया, "यहां अपने वतन का एक आदमी मिल गया, उससे बात कर रहे थे। आओ बैठो।"

भावरिया रेस्तोरां में जाकर ऐसी जगह बैठ गया कि अपनी गाड़ी और सड़क दिखाई देती रहे। दूकान के छोकरे ने आकर पूछा और उसने एक प्याला चाय के लिए कह दिया। पंजाबी अपने परिचित के पास जा बैठा। भावरिया ने प्रतीक्षा में सिगरेट सुलगा ली।

रेस्तोरां के सामने से एक दूसरी टोली निकली—प्रायः लड़के थे, आठ से पन्द्रह बरस की आयु के। बहुत ऊंचे स्वर में नारे लगाने के कारण उन की आवाज चेंचिया जाती थी, "इन्कलाब जिन्दाबाद ! अंग्रेजी राज का नाश हो ! जयहिन्द ! वोट किस को दोगे ? कांग्रेस को ! कौमी गद्दारों का नाश हो ! ···एक दो; लाल झण्डा फेंक दो !" भावरिया ने देखा, उस के लिए दोनों टोलियों में अन्तर न था। वह सोच रहा था, पुत्तूलाल क्यों नहीं आया ?

भावरिया दूसरा सिगरेट लगाने जा रहा था कि ट्राम-स्टेंड की ओर से सहसा कनस्तर बजने की आवाज सुन कर उस की आंखें उस ओर उठ गईं। देखा—लड़कों की भीड़ ने एक जवान लड़की और उस के साथ लाल झण्डा लिए कामरेड को घेर लिया था। लड़के कामरेड और लड़की को चिढ़ाने के लिए 'ओए-ओए' चिल्ला रहे थे। लड़की और कामरेड भीड़ से निकल जाने का यत्न कर रहे थे। इतने में उस और भीड़ के समीप चाय की दुकान से तीन-चार आदमी निकले और लड़कों की भीड़ में शामिल हो गए। भावरिया को संदेह हुआ कि लड़की गीता ही न हो। वह ध्यान से देख रहा था कि बगल से पंजाबी बोल उठा, "वे हैं तो सुकुल के साथ आए लाला के आदमी।"

भावरिया ने देखा—सुकुल के साथ का आदमी हंस कर लड़की से कुछ कह रहा था और लड़के ताली बजा-वजा कर 'हो-हो' कर रहे थे और हंस-हंस कर गालियों के नारे लगा रहे थे। कामरेड झल्ला रहा था और गीता परेशान हो रही थी।

भावरिया होठों में सिगरेट दबाए दुकान से उतर लम्बे कदम रखता हुआ घटनास्थल की ओर बढ़ गया। पंजावी भी लम्वे-लम्वे कदम रखता, आस्तीनें समेटता उस के पीछे दौड़ा।

पुत्तूलाल का आदमी मुख से पुचकारने का शब्द करता हुआ गीता को सम्वोधन कर रहा था, "ए बाई, इधर को आओ !" एक आठ-नौ बरस का लड़का भीड़ में घुसकर कामरेड के थैले से कुछ कागज खींच रहा था। दूसरा लड़का गीता की बगल से बटुआ छीनने लगा।

भावरिया ने पुचकारने वाले आदमी को घूरकर डांटा, "क्यों परेशान करता है वे औरत को ?"

वह आदमी भावरिया की डांट से सहमा नहीं। उसने भावरिया की ओर नजर उठाई। उसकी आंखें लाल हो रही थीं। भावरिया को वह पहचानता न था। मूंछ की नोक मरोड़ उसने उपेक्षा से उत्तर दिया, "तू कौन होता है बे, तेरी मां लगती है कि घरवाली ?"

"क्या ?" भावरिया की आंखें फैल गईं और कंधे पीछे को तन गए और कदम आगे उठ गया।

आदमी डरा नहीं। उसी मुद्रा में उसने भी उत्तर दिया, "क्या कहा ? बताता हूं तुम्हें !

भावरिया का तमाचा तड़ाक से उस आदमी के उठे हुए गाल पर पड़ गया। उसके हाथ का प्रहार भावरिया पर पड़ता परन्तु इसी बीच में भावरिया के पीछे से पंजावी ने उस आदमी के सीने को दोनों हाथों से धक्का दे दिया। वह लड़खड़ा कर पीछे जा गिरा परन्तु उसके साथ के दूसरे आदमी ने पंजाबी की कमर में हाथ डाल दिया और दोनों भिड़ गए। समीप की दुकानों से दोनों ओर के आदमी दौड़ पड़े।

भावरिया को भीड़ की ओर जाते देख सुकुल अपनी जगह से उठ लपका आ रहा था परन्तु उसके पहुंचने से पहले, पांच-छः सेकण्ड में इतना काण्ड हो गया था। आते ही सुकुल ने अपने आदमियों को डांट कर पंजाबी को छुड़ाया।

उसने बड़ी कठिनाई से परिस्थिति संभाली। दोनों ओर के आदमी गुर्राते हुए अलग-अलग हो गए। सूकुल भावरिया का हाथ थामे अपने आदमियों को गाली देकर उनकी ओर से माफी मांगने लगा, "सेठ जाने दो, साले आपको पहचानते नहीं······" वह भावरिया को उसकी मोटर की ओर ले गया। लड़कों की भीड़ मारपीट के भय से छंट गई थी। गीता और उसका साथी कामरेड अवसर पाते ही खिसक गए थे।

भावरिया फिर दुकान में जा पांच-सात मिनट बैठा रहा। सुकुल समीप बैठा उसकी खुशामद कर रहा था परन्तु भावरिया बैठ न पाया। उसका मन उबल रहा था। वह लौटने के लिए अपनी कार में आ गया। 'पोआ-बावड़ी' के चक्कर से सड़क पर मुड़ते हुए उसने एक गली से लाल झण्डे लिए बीस-पच्चीस जवान आदमियों की टोली आती देखी। सोचा—यह दंगे की खबर पाकर लड़ने जा रहे होंगे, पर उसका मन रुकने को न हुआ।

गीता के साथ जैसी घटना पिछली संध्या ट्राम-स्टेण्ड के समीप 'पोआ-बावड़ी' में हुई थी; चुनाव के कारण फैली उत्तेजना और वैमनस्य में उसका विशेष महत्त्व न था। उस उत्तेजनापूर्ण परिस्थिति में भारतमाता की जय के बदले विरोधियों का नाम लेकर मां, बहन की गाली के नारे लगाए जाते थे। अश्लीलता और उच्छृङ्खलता राजनीतिक जोश प्रकट करने के साधन बन रहे थे। गली-कूचों और सड़क पर गेरू, कोयले और चूने से चुनाव के अखाड़े के प्रतिद्वन्द्वियों के लिए अश्लील गालियां लिख दी गई थीं। एक मामूली-सी बात को लेकर गीता क्या दुःख मनाने बैठती और किसके पास शिकायत लेकर जाती? स्वयं उस पर भी चुनाव की उत्तेजना का उन्माद था; किसी विरोध से न दबकर, सबका सामना करके जनता के लिए आत्मनिर्णय की पुकार को सबल बनाने का। इस उन्माद में वह और सब कुछ भूली हुई थी।

पड़ोस से मां के समीप कौन आता-जाता है, क्या चर्चा होती है; इसकी चिन्ता उसने पहले भी कभी न की थी और अब तो करती ही क्या! सुबह उसने पड़ोसिन बानू मौसी और गिरजा की मां को अपने घर में देखा था परन्तु वह खामुखा उनसे क्या बात करती। आठ बजे नहा-धोकर बाहर के लिए तैयार होकर उसने पुकारा, "मां, खाने को कुछ देती हो तो दो, नहीं तो मैं जाऊं?··· मुझे आज बहुत काम है।"

मां रसोई में थी। वह गीता के लाड़ के उल्हाने के जवाब में कुछ बोली नहीं। गीता दुबारा पुकारना चाहती थी कि मां सामने दिखाई दी—उसे लगा मां के शरीर का सम्पूर्ण रक्त किसी पिचकारी से खींच लिया गया हो; चेहरा पीला पड़ गया था और आंखें क्रोध में गुलाबी हो रही थीं। मां आवाज दबाकर और दांत पीस बोली, "अगर जीने की तरफ कदम बढ़ाया तो पांव तोड़ दूंगी !··· मालूम होता कि ऐसा ही जस लाएगी तो जनमती के गले में अंगूठा दे खत्म कर देती। क्या मालूम था छाती का दूध पिलाकर सांप पाल रही हूं !··· अभी और क्या करने को बाकी है जो बाहर जाएगी ?··· बहुत नाम तो कर दिया अखबारों में।" माँ का गला रुंध गया और आंखों में आंसू बह गए। खड़े रहना कठिन था, इसलिए वे सामने से हट गईं।

गीता की कल्पना और अनुमान के क्षितिज के कहीं बहुत परे से सहसा यह इतनी जोर से बिजली कड़क गई थी। वह अच्छी-भली आंखें खोले खड़ी रहने पर भी चेतनाशून्य हो गई। कुछ देर तो वह दरवाजे की चौखट पकड़े ही खड़ी रही, फिर जाकर बिस्तर पर लेट गई। पहले तो वह कुछ सोच ही न पाई और फिर सोचने लगी तो जान न पाई कि क्या हो गया था;···इसका मतलब क्या ?··· किसने आकर मां से क्या कहा, 'बहुत नाम तो कर दिया अखबारों में !' उसे गिरजा की मां और बानू मौसी के सुबह आने की बात याद आई।

गीता उठ बैठी। उसने बरामदे से पड़ोस में बानू मौसी के यहां जाकर सीधे ही पूछा, "मौसी, क्या बात है;···क्या हुआ ?"

"कुछ भी तो नहीं बेटी !" बानू मौसी ने भयभीत आंखों से उत्तर दिया, "मैंने तो कुछ नहीं कहा बेटी···रामू के पिताजी ने अखबार देखकर बताया तो मैंने बेन से पूछा, 'हाय, नासपीटे ने यह क्या छाप डाला ! इनके सब कोई मर जाएं ! इनके क्या बेटी-बहिन नहीं हैं अपने घर में ? बेटी, मुझे रामू की कसम जो मैंने कुछ कहा हो। सुबह से मुंह में पानी का घूंट नहीं लिया है, झूठ बोलूं तो भगवान करे मेरे मुंह में अन्न का दाना न जाए···" बानू कातर दृष्टि से गीता की ओर देखती रही।

इतना सुनकर भी गीता कुछ समझ न पाई। पूछती भी क्या ? "जरा, अखबार तो देखूं ?" उसने सोचकर कहा।

"मरा जाने कहां पड़ा है !···वे ही पढ़ते हैं।" इधर-उधर नजर दौड़ाकर

बानू ने कहा, "रामू ही नहीं छोड़ता, फाड़ डालता है। मैंने तो देखा भी नहीं।" वह इधर-उधर अखवार ढूंढ़ने लगी। गीता को टलते न देखा तो उसने तहाकर रखा हुआ गुजराती का दैनिक एक ओर रखा उठा दिया, "यह है तो, मुझे क्या मालूम था यहीं रखा है।"

गीता अखवार ले लौटी। खड़े ही खड़े लेकर देखने लगी। पहले ही पन्ने पर मोटे अक्षरों में समाचार था :

"कम्युनिस्ट-सखी गीता के लिए गुंडों के दलों में मार-पीट ! कम्युनिस्ट-सखियां शृङ्गार करके मनचले जवानों को 'जनयुग' पढ़ाने निकलती हैं। इसके परिणाम में होने वाली घटनाओं का यह उदाहरण है। जनता ऐसे अनाचार की उपेक्षा कब तक करेगी····?"

गीता की आंखों के सामने अंधेरा छा गया। बड़ी कठिनाई से वह अपनी खाट तक पहुंच पाई। अखवार उसके हाथ से गिर गया और वह आंखें मूंदकर लेट गई। ऐसा जान पड़ा, श्वास रुक रहा है।

प्रवल आघात की जड़ता कुछ देर में दूर हुई तो उसकी आंखों से आंसू बहने लगे। खूब आंसू बह जाने के बाद उसके हृदय से पुकार उठी, 'क्या झूठ, अन्याय और अत्याचार की इससे भी आगे और कोई सीमा है?' कुछ और आंसू बहने के वाद हृदय ने विरोध किया, 'क्या मां को भी मुझ पर विश्वास नहीं ? सीना फाड़ कर कैसे दिखा दूं ! आखिर दुनिया को किस बात से विश्वास होगा कि मैंने कुछ नहीं किया ! ऐसा अत्याचार करने वालों के लिए क्या कोई दण्ड नहीं ?··· पार्टी वाले तो सब कुछ समझते हैं। वे क्या इसे योंही सह जाएंगे ? स्त्री का दमन करने वाला समाज भला क्या न्याय करेगा ! पार्टी तो सब कुछ समझती है परन्तु अब पार्टी तक वह पहुंचे कैसे ? इलेक्शन के झंझट में किसी को फुर्सत कहां ? शायद यह बात उनकी नजरों में ही न आए। मजहर क्या कुछ नहीं करेगा ? श्रीनिवास तो मारने-पीटने के लिए तैयार हो जाएगा परन्तु यहां तो बुद्धि से काम लेने की जरूरत है। पर वह साथियों को समाचार किस प्रकार दे ?··· किसी तरह एक पर्चा जनरल सेक्रेटरी को लिख सके।····कैसे ? वह छिछली हंडिया में कैद मछली की भांति तड़प रही थी। दिन भर उसी तरह पड़ी तड़पती रही। दिन के बाद वैसी ही तड़पन में रात और अगला दिन भी बीता। ज्यों-ज्यों समय बीतता जा रहा था, जड़ता दूर होकर बेचैनी बढ़ रही थी। चिन्ता और सोच-विचार की उधेड़-बुन में मस्तिष्क चकराकर व्याकुलता

और भी असह्य होती जा रही थी। कमरे के बाहर से अनेक प्रकार के शोर-गुल की मिली-जुली गूंज कमरे में भर रही थी। निरन्तर ट्राम की घंटी की टना-टन और मोटरों के भोंपुओं की विचित्र आवाजें कान में आ रही थीं परन्तु गीता के लिए विकट सूनापन था। छत्तीस घण्टे बीतने को आ रहे थे, किसी ने एक भी शब्द गीता के प्रति नहीं कहा। श्यामू भी मुंह लटकाए इधर-उधर निकल गया। छोटे भाई का परेशान करने वाला मारपीट का लाड़-प्यार गीता के लिए एक अतीत स्मृति बन गया। दुनिया ही बदल गई। मां उससे क्या बोलती ?··· उसका दुःख क्या कम था !

गिरजा की मां और बानू से गीता की मां ने अखबार की बात सुनी तो उसकी ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की नीचे रह गई। आंखों के पलक झप-काना भूल गई। मस्तिष्क में एक ज्वाला-सी उठी। वह जल गए काठ की तरह अचेतन हो गई थी, पर इतने बड़े दुर्भाग्य को वह सहसा समझ भी न पाई। जब समझ पाई तो यही इच्छा हुई कि उस बड़े मकान की तीनों मंजिलों के फर्श फट जाएं, नीचे जमीन फट जाए और उसमें वह सदा के लिए समा जाए, कोई उसका मुख न देख सके। जिस लड़की के आचरण पर गर्व से सीना फुलाकर वह दुनिया-भर को चुनौती देती फिरती थी, उसी के लिए यह कलंक ? यदि उसकी लड़की कलंकिनी होती, वह अपने हाथ से स्वयं उसके और अपने कलेजे में छुरी भोंक, उसके अपराध का प्रायश्चित्त कर देती। और फिर क्रोध का आवेग कहता—ऐसा मिथ्या कलंक लगाने वाले का सीना फाड़ उसका खून पी जाए।···परन्तु वह प्रतिकार करने जाए तो कहां ? और प्रतिकार करे तो किससे ? जो बात अखबार में छप गई, उसे तो दुनिया मानेगी। वह कलंक तो बम्बई के हर एक आदमी की जबान पर है, बम्बई की ईंट-ईंट उसे पुकार रही है। कोई एक तो नहीं कह रहा है जिसकी वह जबान पकड़ ले ! किससे और कहां वह प्रतिकार करने जाए ? उसका श्वास-श्वास आर्तनाद कर रहा था--झूठ है, अन्याय है। क्रोध में उसका रोम-रोम जल रहा था। वह अपना क्रोध प्रकट भी किस पर करती ? लड़की पर बरस पड़ी थी, "अगर अब जीने की तरफ कदम बढ़ाया तो पांव तोड़ दूंगी !"···अपने ही शरीर के अंश और हृदय के टुकड़े को उसने कितने ही श्राप दिए और फिर निस्सहाय और बेबस हो रसोई में बैठी रोती रही। कौन था उसका ? एक लड़की और एक सोलह बरस का बालक ! गीता के पिता की याद में रोई—वे जिन्दा रहते तो क्या मुझे अबला विधवा जान कोई

ऐसा अत्याचार कर सकता था ?···जिसे ओट देने वाला मर्द नहीं, उसका दुनिया में कौन है । वह रोती ही रही; किसी से कुछ कहने के लिए न उठी । घर में चूल्हा भी न जला ।

दूसरे दिन संध्या समय शामू गीता की खाट के ससीप आया । आंखें उठाए विना ही गम्भीर चेहरे और भारी स्वर में बोला, "मां कह रही हैं, जीम लो!" और चला गया । गीता के रुके हुए आंसू फिर वह आए—हाय, क्या यह लड़का भी मुझे कलंकिनी समझता है ? इसके सामने अपने कलंक की क्या सफाई दे सकती हूं ? वस जीमने के लिए उठ न सकी । मां ने कुछ समय प्रतीक्षा की और लड़की को उठते न देख स्वयं भी विना खाए, रसोई समेटकर उठ गई और खाट पर जा लेटी ।

संध्या रात बन गई । वाहर से आने वाला शोरगुल दव कर सन्नाटा होता जा रहा था । गीता को खाट पर सिसकते-सिसकते उंघाई आ रही थी, आहट सुन उसकी पलकें उघड़ीं । देखा—शामू वहुत गम्भीर मुख बनाए उसकी खाट की पाटी से लगा खड़ा था ।

शामू को अपने समीप आया देख गीता का मन उमड़ आया, "क्या है भैया ?" उसने शामू की बांह थाम ली । शामू खाट पर वैठ गया ।

"वैन, बम पिक्रिक एसिड से वनता है ?" सिर झुकाए शामू ने पूछा ।

"क्यों ?" विस्मय से गीता की आंखें फैल गईं ।

"वैन, यह झूठी खबर कांग्रेस वालों ने छापी है । मेरे साथ लड़का पढ़ता है, उसका भाई तुम्हारी पार्टी में हैं । उसने बताया है । मैं बदमाशों से बदला लूंगा, चाहे जान चली जाए ।"

"नहीं भैया," गीता ने शामू को बांह में ले अपनी ओर खींच लिया, "हमारी पार्टी वाले ऐसा बदला नहीं लेते । हम कांग्रेस से लड़ेंगे तो अंग्रेजों से कौन लड़ेगा? यह तो अंग्रेजों के पूंजीपति एजेण्टों की शरारतें हैं । वे लोग कांग्रेस में घुसकर ऐसी हरकतें करते हैं । उन्होंने कांग्रेस को बहका रखा है । कांग्रेस तो देश की राष्ट्रीय संस्था है । देश की आजादी के लिए विदेशी सरकार से लड़ने वाली संस्था । हमारी पार्टी कांग्रेस से लड़ती नहीं, उन्हें समझाती है । भाई-भाई लड़ेंगे तो विदेशी लुटेरा ही राज्य करेगा···! समझते हो न ?"

शामू को सन्तोष न हुआ । उसकी आंखों में आंसू आ गए, "ये साले दूसरों की मां-बहनों को को गाली देते हैं और सत्य, अहिंसा का पाखंड करते हैं । इनसे

बदला लेना चाहिए ।"

गीता ने उसे अपने और समीप समेट लिया और समझाती रही कि बदला लेने से तो झगड़ा बढ़ेगा । हमें देश और देश की जनता के हित की नीति पर चलना है । उसके लिए चाहे मार खानी पड़े, जेल जाना पड़े या झूठी बदनामी भी सहनी पड़े । वह छोटे भाई को समझाती रही—स्वराज्य से पार्टी का क्या अभिप्राय है और वह स्वराज्य कैसे देश की जनता के सम्मिलित प्रयत्न के बिना नहीं मिल सकता । शामू को उसने कहा, "तुम पार्टी दफ्तर में मजहर भाई से सब हाल कह आओ । मैं भी एक पत्र लिख दूंगी । जैसा वे लोग कहेंगे, वही हमें करना चाहिए ।

शामू ने बताया, आज सांझ को कोई एक लम्बा-लम्बा, सांवला-सा पार्टी का आदमी आया था । तुम्हें पूछता था । मां ने देख लिया और उससे बहुत विगड़ीं । वह चुपके से चला गया ।

अनुमान कर गीता ने पूछा, "क्या दाईं गाल पर चोट का चिह्न था ?"

"देखा नहीं," शामू ने कहा, "दांत बाहर निकले थे आगे को ।"

"हूं, रंगा होगा," गीता ने कहा, "पार्टी कामरेड है ।"

"एक और आदमी भी आया था मोटर में" शामू ने और बताया, "पदमलाल तब मैं बाहर था । मां ने नहीं देखा । मैंने सोचा, मां देखेंगी तो बिगड़ेंगी । मैंने कह दिया, 'बैन को बुखार है । लेटी हुई है ।' वह चला गया । कहता था, 'नमस्कार कहना, फिर आएंगे ।"

गीता सोचती रही । भावरिया ने उसके साथ छल किया था और भावरिया के प्रति उसके मन में क्रोध भी था, परन्तु परेल की घटना में उसी ने आकर उसे फजीहत से बचाया था । अखबार वालों की इस शरारत में उसका क्या अपराध ? गुण्डे की शरारत से तो कोई बेचारी लड़की शायद बच भी जाए परन्तु इन अख-बार वाले सज्जनों से तो कहीं शरण नहीं । शायद इसी सम्बन्ध में बात करने आया हो कि क्या करना चाहिए पर मुझे उससे क्या लेना है ! बहुत भर पाई । दूर ही रहे तो अच्छा है । रंगा को मां ने मिलने नहीं दिया । सम्भव है कोई खास बात कहने आया हो या मुझे बुलाने ही आया हो ।···गीता को सन्तोष हुआ, पार्टी ने उसे भुला नहीं दिया । पार्टी किसी को भुला कैसे सकती है, गर्व से उसने मन में कहा, 'वी आर वन फैमिली (हमसब पार्टी के लोग एक ही परिवार के अंग हैं) ।'

शामू बहुत देर तक बहन की खाट पर उसके समीप बैठा रहा । वह पहली रात थी जब उसने अल्हड़पना और दंगा छोड़ बहन से गंभीरता से बात की । भाई की भोली और उत्तेजनापूर्ण बातें गीता के लिए कितने संतोष का कारण थीं ! उसने एक बांह का सहारा अनुभव किया । वह बांह देखने में कितनी दुबली-पतली कमजोर हो, है तो मर्द की बांह ! वह अकेली नहीं है । शामू छोटा है तो क्या ? है तो लड़का···मर्द ! उसके सहारे वह खड़ी हो सकेगी ।

परेल की घटना को एक सप्ताह बीता था । यह सप्ताह गीता ने कैद में बिताया, कुछ मां के आतंक से और कुछ लज्जा-संकोच से । सप्ताह-भर में उसकी अवस्था ऐसी हो गई जैसे बेल से कटी कच्ची लौकी धूप में सिकुड़ और पलक् जाए । मां कुछ बोलती न थीं । सबकी निगाहों से बच कर किसी न किसी काम में उलझी रहती । यों गीता भी गुम-सुम बनी रही परन्तु मस्तिष्क उसका प्रति-क्षण चकराता रहता । इस बीच में शामू दो बार गीता के कहने से पार्टी दफ्तर गया । गीता ने अखबार की खबर के कारण घर की स्थिति का सब हाल मजहर को लिख भेजा और कुछ दिन घर से बाहर निकलने में असमर्थता प्रकट की । मजहर ने उसे धैर्य से काम लेने का परामर्श दिया और परेल की घटना की ब्योरेवार रिपोर्ट मांगी । गीता ने सब वृत्तान्त लिख भेजा ।

दो दिन बाद शामू चेहरे पर गम्भीरता का भाव लिए आया और बोला, "मजहर भाई ने खबर भेजी है; शाम को सात बजे आएंगे । तुमसे जरूरी मिलना है । मैं मां से कहूंगा, बैन को डाक्टर के यहां ले जा रहा हूं । तुम परवाह मत करो ।"

गीता ने स्नेह और भरोसे से शामू की ओर देखा—यह सोलह बरस का लड़का कितना साहस कर सकता है । मैं इससे इतनी बड़ी होकर भी अस-हाय हूं । भाई के प्रति गीता ने अब तक केवल उसकी बीमारी में ही स्नेह और चिन्ता अनुभव की थी । इसके अतिरिक्त दोनों में परस्पर होड़, धौल-धप्पा और जली-कटी कहने का ही सम्बन्ध था । गीता उसे केवल मां का लाड़ला और शरारती भाई ही समझती थी जो शूरता की खोज में आई०एन०ए०का सिपाही बनने के सिवा और कोई बात न सोच सकता था । गीता की इस कठिनाई में वह छोटा-सा, बेसमझ भाई उसका रक्षक बन कर खड़ा हो गया । गीता की पार्टी 'उसकी' पार्टी बन गई । दोनों में बिना किसी विचार-परिवर्तन के उद्देश्य की

एकता हो गई । वे भाई-बहिन ही नहीं 'कामरेड' बन गए । गीता ने अपने अपमान और यन्त्रणा की अवस्था में भाई की दृष्टि और व्यवहार में अपने प्रति ममता, आदर और गौरव अनुभव किया और वह उसके हृदय का टुकड़ा 'छोटा कामरेड' बन गया ।

संध्या सात बजे गीता शामू के साथ बाहर निकली । कुछ ही दूर जाकर 'फनास बावड़ी' की गली में मजहर अपना चमड़े का बस्ता बगल में दबाए मिल गया । गीता को देख मजहर की आंखें विस्मय से फैल गईं । माथे की त्योरियां गहरी कर उलाहने के स्वर में कहा, "कामरेड, व्हाट इज दिस (यह क्या हुआ है तुम्हें) ?···क्या बीमार थीं ?"

गीता ने सिर झुकाकर होंठ काट लिए ।

गीता को चुप देख मजहर बोला, "दिस इज नानसेन्स ! अगर बदमाश लोग हमें इस तरह डरा-धमका लें तो फिर तो हो चुका । वाह, ऐसे तो किसी का भी नाम लेकर कोई भी खबर उड़ा दे तो बस हो गया ! वाह, डू यू अण्डरस्टैण्ड (समझती हो) ?"

"बैन तो खाना भी नहीं खाती है ।" शामू बीच में बोल दिया । "तो तुम कैसे छोटे कामरेड हो···अब तुम खयाल रखना ! अच्छा······हां, मैं उसी अखबार की घटना के सम्बन्ध में आया था । पी० सी० (प्रान्तीय कमेटी) उस मामले को काफी सीरियसली (महत्व देकर) ले रही है । मुझ से उन्होंने रिपोर्ट मांगी थी । मैंने लिख दिया था कि भावरिया जरूर बदमाश मशहूर है । उससे तुम्हारा परिचय कैसे हुआ, तुमने उससे रुपया पार्टी के नाम पर रसीद देकर लिया और पार्टी को सौंप दिया । तुम उसे 'जनयुग' और दूसरा साहित्य देती रही हो । कामरेड बागले तुम्हारे साथ था । उसका बयान भी मैंने लिखकर पी० सी० को भेज दिया है । भावरिया ने यदि परेल में किसी लड़की की दुर्व्यवहार से रक्षा की तो कुछ बुरा नहीं किया । यह भी सम्भव है इतनी सज्जनता उसमें तुम्हारे ही प्रभाव से आई हो, परन्तु पी० सी० सन्तुष्ट नहीं हुई । उन्होंने इस मामले में अपने यहां से इन्क्वायरी (जांच-पड़ताल) कराई है और मुझे और तुम्हें कल तीन बजे प्रान्तीय दफ्तर में बुलाया है । वहां पहुंचना जरूरी है, डू यू अण्डरस्टैण्ड (समझीं) ?"

मजहर की चिन्ता के प्रभाव से गीता भी न बच सकी परन्तु उसने साहस से कहा, "उन्होंने इंक्वायरी की है तो और भी अच्छा है । बात और भी साफ

हो जाए। कामरेड वागले तो मेरे साथ था, उसे नहीं बुलाया पी० सी० ने ?"

"नहीं," सिर हिलाकर मजहर ने इन्कार किया, "वात साफ होने की उसमें वात क्या है ? कांग्रेस का समर्थन करने वाले अखबार आजकल कितने अनस्क्रुपुलस (वेलगाम) हो रहे हैं, उसकी कोई सीमा नहीं। जाली चिट्ठियां छापने में, सच को दवाने में, झूठ का प्रचार करने में, किसी बात में उन्हें शरम नहीं। अब तक तुम्हारे वर्क (काम) की रिपोर्ट बहुत अच्छी रही है लेकिन पार्टी का एटीच्यूड (रवैया) बहुत स्ट्रिक्टनेस (अनुशासन) का हो रहा है। वे लोग मेम्बरों की प्राइवेट लाइफ (व्यक्तिगत जीवन) थॉरोली पार्टी की लाइन पर (पूर्णतः पार्टी के अनुशासन में) चाहते हैं।"

मजहर ने चमड़े का बस्ता दाईं बगल से बाईं बगल में बदलकर शामू को समीप पुकारा। शामू पार्टी का तरीका समझने लगा था। जो बात उससे नहीं कही जा रहीं थी, उसे न सुनने के लिए वह मजहर और बहिन के कुछ दूर पीछे चला आ रहा था। पुकारे जाने पर समीप आ गया। उसकी पीठ पर हाथ रख मजहर ने कहा, "देखो यंग कामरेड, वैन को कल तीन बजे प्रान्तीय दफ्तर में ले आना, समझे ! समय पर आ जाना और कामरेड, तुम चुनाव में पार्टी का कुछ काम नहीं करोगे ? देखो, वैन को अपने साथ ले आया करो और वैन के खाने-पीने का ख्याल रखना, समझे ! पार्टी कामरेडों का बीमार होना पसन्द नहीं करती······समझे !"

शामू ने मुख से कुछ न वोल, गर्दन अकड़ाकर गम्भीर उत्तरदायित्व स्वीकार कर लिया। मजहर ने मुस्कराकर मुट्ठी उठा 'लाल सलाम' किया तो उसने भी वैसे ही सलाम का उत्तर दिया।

गीता भाई के साथ घर लौटी तो उसके मन का अवसाद आधे से अधिक दूर हो चुका था। बगल में चलते छोटे भाई की रक्षा में वह अभय अनुभव कर रही थी। पुरुष की तुलना में स्त्री को किसी भी प्रकार असमर्थ या हेय समझकर पुरुष की सहायता के प्रति घृणा और विरोध का भाव भाई के प्रति ममता में डूब गया था।

मजहर, गीता और शामू प्रान्तीय कमेटी के दफ्तर में पौने तीन बजे पहुंच गए। दूसरे कई कामरेड भी प्रतीक्षा कर रहे थे। साथ के कमरे में प्रान्तीय कमेटी के लोग थे। कमरे का दरवाजा बन्द था। बारी-बारी से उस कमरे में

लोगों को बुलाया जा रहा था। मजहर और गीता के देखते-देखते तीन बार दूसरे लोगों को बुलाया गया परन्तु उनकी बारी न आई। साढ़े चार बजे उन्हें बुलाया गया। मजहर और गीता के भीतर जाने पर कमरे का दरवाजा बन्द हो गया। चार आदमी एक छोटी मेज के तीन ओर घिरे बैठे थे और सामने तीन कुर्सियां खाली थीं। कुर्सियां सब एक-सी नहीं, जैसी मिल गईं बटोर कर जोड़ दी गई थीं। मेज पर फाइलों का ढेर था।

दाईं ओर बैठा आदमी खद्दर की सफेद कमीज और पतलून पहने था। उसके साथ का व्यक्ति खद्दर के कुरते-पायजामे में था। उसका मोटे शीशे का चश्मा बोझ के कारण नीचे खिसक रहा था। हजामत तीन दिन की बढ़ी हुई। तीसरा व्यक्ति केवल बनियान और निकर पहने था, हजामत उसकी भी बढ़ी हुई और चश्मे के पीछे आंखें नींद से बोझिल थीं। चौथा व्यक्ति कमीज और धोती पहने था। उसके सिर के केश सेह के कांटों की भांति खड़े थे और आंखों में सन्देह भरा था।

दाईं ओर से दूसरी कुर्सी पर बैठे व्यक्ति ने मजहर और गीता को अंग्रेजी में सम्बोधन किया, "हल्लो कामरेड्स ! मजहर…" गीता की ओर देख पहचानने के प्रयत्न में वह आंखें झपक कर रह गया परन्तु उसके साथ के व्यक्ति ने सहयोग दिया, "हल्लो गीता !—यस गीता !" उसने भी कहा। परिचय की मुस्कान उसकी सिकुड़ी हुई आंखों में दौड़ गई।

गीता और मजहर कुर्सी पर बैठ गए। दाईं ओर से दूसरी कुर्सी पर बैठे व्यक्ति ने अपने हाथ में लिए कागज पर दृष्टि दौड़ाई। एक क्षण जैसे कुछ सोचकर बोला, "हां, यह सब क्या तमाशा हो गया अखबारों में ?" उसने गीता की आंखों में आंखें गड़ा दीं। मुस्कराहट उसके चेहरे से ऐसे मिट गई जैसे कभी थी ही नहीं।

गीता सहम गई, "जो कुछ हुआ, मैंने घटना का पूरा ब्योरा लिखकर दे दिया है।"

प्रान्तीय कमेटी के कामरेडों ने गीता के उत्तर की उपेक्षा कर मजहर की ओर देखा। मजहर ने उत्तर दिया, "अखबारों का जैसा व्यवहार आजकल है, ऐसी बात किसी भी व्यक्ति के बारे में छाप दी जा सकती है।"

"हूं।" पहले कामरेड ने असंतोष से अपने बाईं ओर बैठे व्यक्ति की ओर देखा।

हो जाए । कामरेड बागले तो मेरे साथ था, उसे नहीं बुलाया पी० सी० ने ?"

"नहीं," सिर हिलाकर मजहर ने इन्कार किया, "बात साफ होने की उसमें बात क्या है ? कांग्रेस का समर्थन करने वाले अखबार आजकल कितने अनस्क्रुपुलस (बेलगाम) हो रहे हैं, उसकी कोई सीमा नहीं। जाली चिट्ठियां छापने में, सच को दबाने में, झूठ का प्रचार करने में, किसी बात में उन्हें शरम नहीं। अब तक तुम्हारे वर्क (काम) की रिपोर्ट बहुत अच्छी रही है लेकिन पार्टी का एटीच्यूड (रवैया) बहुत स्ट्रिक्टनेस (अनुशासन) का हो रहा है । वे लोग मेम्बरों की प्राइवेट लाइफ (व्यक्तिगत जीवन) थॉरोली पार्टी की लाइन पर (पूर्णतः पार्टी के अनुशासन में) चाहते हैं ।"

मजहर ने चमड़े का बस्ता दाईं बगल से बाईं बगल में बदलकर शामू को समीप पुकारा । शामू पार्टी का तरीका समझने लगा था । जो बात उससे नहीं कही जा रही थी, उसे न सुनने के लिए वह मजहर और बहिन के कुछ दूर पीछे चला आ रहा था । पुकारे जाने पर समीप आ गया । उसकी पीठ पर हाथ रख मजहर ने कहा, "देखो यंग कामरेड, बैन को कल तीन बजे प्रान्तीय दफ्तर में ले आना, समझे ! समय पर आ जाना और कामरेड, तुम चुनाव में पार्टी का कुछ काम नहीं करोगे ? देखो, बैन को अपने साथ ले आया करो और बैन के खाने-पीने का ख्याल रखना, समझे ! पार्टी कामरेडों का बीमार होना पसन्द नहीं करती······समझे !"

शामू ने मुख से कुछ न बोल, गर्दन अकड़ाकर गम्भीर उत्तरदायित्व स्वीकार कर लिया । मजहर ने मुस्कराकर मुट्ठी उठा 'लाल सलाम' किया तो उसने भी वैसे ही सलाम का उत्तर दिया ।

गीता भाई के साथ घर लौटी तो उसके मन का अवसाद आधे से अधिक दूर हो चुका था । बगल में चलते छोटे भाई की रक्षा में वह अभय अनुभव कर रही थी । पुरुष की तुलना में स्त्री को किसी भी प्रकार असमर्थ या हेय समझकर पुरुष की सहायता के प्रति घृणा और विरोध का भाव भाई के प्रति ममता में डूब गया था ।

मजहर, गीता और शामू प्रान्तीय कमेटी के दफ्तर में पौने तीन बजे पहुंच गए । दूसरे कई कामरेड भी प्रतीक्षा कर रहे थे । साथ के कमरे में प्रान्तीय कमेटी के लोग थे । कमरे का दरवाजा बन्द था । बारी-बारी से उस कमरे में

लोगों को बुलाया जा रहा था। मजहर और गीता के देखते-देखते तीन बार दूसरे लोगों को बुलाया गया परन्तु उनकी बारी न आई। साढ़े चार बजे उन्हें बुलाया गया। मजहर और गीता के भीतर जाने पर कमरे का दरवाजा बन्द हो गया। चार आदमी एक छोटी मेज के तीन ओर घिरे बैठे थे और सामने तीन कुर्सियां खाली थीं। कुर्सियां सब एक-सी नहीं, जैसी मिल गईं बटोर कर जोड़ दी गई थीं। मेज पर फाइलों का ढेर था।

दाईं ओर बैठा आदमी खद्दर की सफेद कमीज और पतलून पहने था। उसके साथ का व्यक्ति खद्दर के कुरते-पायजामे में था। उसका मोटे शीशे का चश्मा बोझ के कारण नीचे खिसक रहा था। हजामत तीन दिन की बढ़ी हुई। तीसरा व्यक्ति केवल बनियान और निकर पहने था, हजामत उसकी भी बढ़ी हुई और चश्मे के पीछे आंखें नींद से बोझिल थीं। चौथा व्यक्ति कमीज और धोती पहने था। उसके सिर के केश सेह के कांटों की भांति खड़े थे और आंखों में सन्देह भरा था।

दाईं ओर से दूसरी कुर्सी पर बैठे व्यक्ति ने मजहर और गीता को अंग्रेजी में सम्बोधन किया, "हल्लो कामरेड्स ! मजहर···" गीता की ओर देख पहचानने के प्रयत्न में वह आंखें झपक कर रह गया परन्तु उसके साथ के व्यक्ति ने सहयोग दिया, "हल्लो गीता !—यस गीता !" उसने भी कहा। परिचय की मुस्कान उसकी सिकुड़ी हुई आंखों में दौड़ गई।

गीता और मजहर कुर्सी पर बैठ गए। दाईं ओर से दूसरी कुर्सी पर बैठे व्यक्ति ने अपने हाथ में लिए कागज पर दृष्टि दौड़ाई। एक क्षण जैसे कुछ सोचकर बोला, "हां, यह सब क्या तमाशा हो गया अखबारों में ?" उसने गीता की आंखों में आंखें गड़ा दीं। मुस्कराहट उसके चेहरे से ऐसे मिट गई जैसे कभी थी ही नहीं।

गीता सहम गई, "जो कुछ हुआ, मैंने घटना का पूरा ब्योरा लिखकर दे दिया है।"

प्रान्तीय कमेटी के कामरेडों ने गीता के उत्तर की उपेक्षा कर मजहर की ओर देखा। मजहर ने उत्तर दिया, "अखबारों का जैसा व्यवहार आजकल है, ऐसी बात किसी भी व्यक्ति के बारे में छाप दी जा सकती है।"

"हूं।" पहले कामरेड ने असंतोष से अपने बाईं ओर बैठे व्यक्ति की ओर देखा।

"लेकिन पदमलाल भावरिया से तुम्हारा परिचय और मेल-जोल था ?" इस कामरेड ने गीता को सम्बोधन किया।

"मेल-जोल तो नहीं,······चार या पांच दफे मुलाकात हुई होगी। 'जनयुग' और पार्टी साहित्य की कुछ पुस्तकें उसे दी थीं। प्रायः एक मास से मैं उससे नहीं मिली।"

"तुमने पदमलाल से दो सौ रुपया लेकर पार्टी को दिया था ?"

"जी हां, उसकी रसीद उसे दे दी थी।" गीता ने उत्तर दिया।

"रसीद की बात मालूम है, लेकिन क्या उसे पार्टी के उद्देश्य से सहानुभूति थी ? नहीं, तो किस सम्बन्ध से उससे रुपया लिया गया ? और तुम्हें मजहर ने सचेत कर दिया था कि उसका चाल-चलन ठीक नहीं है। पार्टी कामरेड्स को जानना चाहिए कि एक-एक पैसा लेने की जिम्मेदारी उनके कंधे पर है। तुम तो समझदार कामरेड हो। तुम्हारे काम की रिपोर्ट बहुत अच्छी रही है।··· अब ऐसा क्यों हुआ ?"

गीता को चुप देख वही कामरेड फिर बोला, "पार्टी को रुपया उसने तुम्हें खुश करने के लिए दिया था, पार्टी से सहानुभूति के कारण नहीं······ठीक है यह बात ?"

"मैंने पार्टी के लिए ही मांगा था और उससे कह दिया था कि पार्टी के लिए चाहिए,······ पार्टी को दूंगी और रसीद भी दी थी।"

मोटे कांच का चश्मा लगाए कामरेड ने कुछ झुंझलाहट से कहा, "तुम्हारी ईमानदारी का सवाल नहीं है; परन्तु परिणाम क्या हुआ ? और तुम बाद में भी उससे मिलती रहीं।"

"केवल चार-पांच बार, 'जनयुग' और दूसरी पुस्तकें दी थीं।"

"सब बातों की खबर तुमने अपने ग्रुप-सेक्रेटरी को नहीं दी। क्या तुम इसे निजी जीवन की बात समझती थीं ?"

"ऐसी तो कोई खास बात हुई नहीं।" आशंका से गीता ने धीमे स्वर में कहा।

"हमें खबर मिली है कि जनवरी के दूसरे सप्ताह में तुम उस आदमी के साथ माटुंगा-क्लब में गई थी। वहां शराब पी जा रही थी और वेश्याएं भी थीं। क्या यह ठीक है ?"

गीता का चेहरा पीला पड़ गया और उसे अनुभव हुआ कि सामने बैठे

व्यक्तियों की आंखें उसके चेहरे पर चुभी जा रही थीं। एक क्षण दुविधा के बाद आंखें झुकाए ही उसने उत्तर दिया, "हां, यह ठीक है लेकिन मुझे मालूम नहीं था कि वह मुझे ऐसी जगह ले जा रहा है और मैं वहां ठहरी भी नहीं। उसके बाद से मैं फिर उससे मिली भी नहीं।"

"लेकिन इस घटना का जिक्र तुमने अपने ग्रुप-सेक्रेटरी से नहीं किया!" कामरेड ने मजहर की ओर देखा।

"नहीं।" सिर हिलाकर मजहर ने इनकार किया।

"यह मेरी निजी व्यक्तिगत भूल थी।" गीता का सिर झुक गया, "संकोच और लज्जा की ऐसी बात किसीसे कहने की इच्छा न हुई। कोई लाभ भी न था। इसके बाद फिर मैं उससे नहीं मिली।"

"निजी और व्यक्तिगत क्या?" कामरेड का स्वर कठोर हो गया। नाक पर खिसक आए भारी चश्मे को ऊपर उठाकर उसने कहा, "तुम्हारा जीवन अपने लिए है या उद्देश्य के लिए? तुम्हारे प्रत्येक व्यवहार का प्रभाव तुम्हारे उद्देश्य पर और पार्टी की स्थिति पर पड़ता है। अखबार में यह खबर इसलिए छपी है कि तुम पार्टी कामरेड हो। पार्टी पर मिथ्या लांछन लगाने का अवसर देने की जिम्मेदारी किस पर है?"

"एक मिनट," हाथ आगे बढ़ा मजहर ने टोका, "बीच में बोलने के लिए क्षमा कीजिए लेकिन बीच की घटनाएं यदि न भी होतीं तब भी ऐसी खबर छप सकती थी। मेरे विचार में माटुंगा-क्लब की घटना और अखबार की खबर का कोई सम्बन्ध नहीं। बीसियों झूठी खबरें छपती हैं। अखबार वालों को यदि माटुंगा-क्लब की घटना मालूम होती तो पहले वे उसी को छापते। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि माटुंगा-क्लब की घटना का प्रभाव परेल की घटना छपने पर पड़ा है।"

तीसरा कामरेड अब तक चुप था। मजहर की ओर उंगली उठाकर उसने कहा, "देयर यू आर! (ठीक कहा तुमने) अगर माटुंगा-क्लब की घटना छपती तो क्या होता?······घटना घटी है तो छप भी सकती थी। यह हमारी खुशकिस्मती है कि बदमाशों को यह घटना मालूम नहीं हुई परन्तु कामरेड से भूल हुई, इससे तो हम इनकार नहीं कर सकते?"

"इनकार कर सकते हैं?" मोटे चश्मेवाले कामरेड ने प्रश्न किया।

"लेकिन कामरेड सेक्रेटरी, माटुंगा-क्लब जाने का इरादा····" मजहर

कहना चाहता था ।

"डैम इरादा !" मजहर को टोककर सेक्रेटरी ने कहा, "भूल इरादे और घटना में ही नहीं होती । भूल होती है, व्यवहार और नीति निश्चित करने में। एक संदिग्ध-चरित्र व्यक्ति से, उसके विषय में जान-पहचान कर भी मिलना-जुलना, सम्बन्ध रखना भूल है या नहीं ? ऐसी बात का परिणाम और क्या होगा ?···पार्टी मेम्बर के ऐसे व्यवहार का प्रभाव पार्टी पर पड़ेगा या नहीं ?"

गीता ने सिर झुकाए उत्तर दिया, "मुझसे उसका व्यवहार अनुचित नहीं था। तीन दफे मैं उसके साथ घूमने गई थी । उस समय कोई अनुचित बात उसने नहीं की । मैं उससे पार्टी के सम्बन्ध में बात करती थी और वह कुछ समझने भी लगा था ।"

गीता की इस सफाई की उपेक्षा कर सेक्रेटरी ने अपने हाथ के कागज की ओर देखकर कहा, "कामरेड गीता, तुमने उचित सतर्कता से व्यवहार नहीं किया और फिर ऐसी घटना होने पर उसे छिपाया । दिस इज सीरियस ब्रीच आफ डिसिप्लिन (यह अनुशासन की भयंकर उपेक्षा है) । पार्टी मेम्बर के साथ होने वाली प्रत्येक घटना और मेम्बर का व्यवहार पार्टी को मालूम रहना चाहिए ताकि उसके परिणाम और उपाय पर विचार किया जा सके । इस कमेटी ने इस मामले के सभी पहलुओं पर विचार कर और तुम्हारे पिछले बहुत अच्छे काम और व्यवहार पर विचार कर निश्चय किया है कि तुम्हें केवल तीन मास के लिए पार्टी की मेम्बरी से सस्पेण्ड (स्थगित) कर दिया जाए ।······तीन मास तक तुम्हें पार्टी पर कोई अधिकार न होगा परन्तु पार्टी के प्रति मेम्बर के सभी कर्तव्य तुम्हें पूरे करने होंगे ।"

गीता ने सिर उठा प्रान्तीय कमेटी के कामरेड्स की ओर देखा । उसकी आंखों में दो बूंद आंसू छलक आए ।

"दिस इज नानसेंस (क्या पागलपन है) !" सेक्रेटरी का स्वर रूखा हो गया, "तुम सबसे अच्छे कामरेड्स में गिनी जाती हो ! ···यह डिसिप्लिन (अनुशासन) की बात है ।······डू यू प्रोटेस्ट अगेंस्ट डिसिप्लिन (तुम अनुशासन का विरोध करती हो) ?"

"मैं एक बात कहना चाहता हूं ।" मजहर ने कमेटी के कामरेड्स की ओर देख कर कहा, "इस अनुशासन से दूसरे कामरेड्स क्या समझेंगे ? ···वे समझेंगे कि परेल की घटना के लिए कामरेड गीता दोषी है ।"

तीसरे कामरेड ने मजहर की ओर घूम और उंगली उठाकर पूछा, "कामरेड गीता ने भूल की है या नहीं ? · · · ·तुमने भूल की है या नहीं ?" गीता की ओर घूम कर उसने पूछा, "अनुशासन केवल जाहिरा भूल के लिए नहीं, छिपी हुई भूलों के लिए भी होना चाहिए । पार्टी पाखण्ड में विश्वास नहीं करती । कामरेड्स को अपने व्यवहार के लिए जिम्मेदारी समझनी चाहिए । पार्टी कामरेड्स को ठीक बात बताओ ।···उन्हें गलतफहमी क्यों हो ?"

सेक्रेटरी ने गीता को सम्बोधन किया, "तुम्हें कुछ एतराज है ?"

गीता ने सिर हिलाकर इनकार कर दिया ।

"ठीक ! दैट्ज गुड······तुम्हें खुश होना चाहिए कि तुम दूसरे कामरेड्स के लिए अनुशासन का उदाहरण बनकर उनकी सहायता कर रही हो ! ······ अच्छा ।"

गीता सिर झुकाए उठ गई । मजहर भी खड़ा हो गया । बन्द मुट्ठी उठा उन्होंने 'लाल सलाम' किया और कमरे से बाहर जाने लगे । सेक्रेटरी ने पुकारा "कामरेड मजहर, एक मिनट और !"

गीता बाहर चली गई । "मजहर, तुम्हारे ग्रुप में ये सब एडवेंचर होते रहे और तुम्हें मालूम नहीं ! ····· तुम कामरेड्स के व्यवहार पर नजर नहीं रखते ? गीता का अब विशेष ध्यान रखना ।"

बीच की कुर्सी पर बैठे कामरेड ने पूछा, "बिरदेकर के बारे में क्या रिपोर्ट है तुम्हारी·······कुछ संभला ?"

"उसने कई जगह थोड़ा-थोड़ा कर्ज लिया है और अब दे नहीं पा रहा ।"

"क्यों ? सिगरेट बहुत फूंकता है, चटोरा है या कुछ और ?"

"हां, सिगरेट और फिजूलखर्ची की आदत तो है ।"

"सिगरेट बड़ी फिजूल चीज है ।" सेक्रेटरी ने बीच में कहा, "कामरेड्स को इससे डिसकरेज करो (रोको) ! ······तुम पीते हो ?"

'छोड़ दिया ।"

"अच्छा किया । यंग (छोटे) कामरेड्स पर इसका अच्छा असर नहीं पड़ता । तुम एक पियोगे, वे दस पिएंगे । ·· अच्छा ।" सेक्रेटरी ने 'लाल सलाम' के लिए मुट्ठी ऊपर उठा दी । वैसे ही उत्तर दे मजहर चला गया ।

पदमलाल भावरिया को अखबार में गीता के नाम से परेल की घटना का

वृत्तान्त पढ़कर बहुत दुःख और क्रोध आया था। मन में आया, अखबार के दफ्तर में जाकर उनकी खबर ले। बहुत देर तक वह उसी चिन्ता में उलझा रहा। सोचता रहा, जाकर कहेगा क्या ? ख्याल आया, वहां उत्तर मिलेगा—हमने किसी का नाम तो दिया नहीं। जिन्हें गुण्डा कहते हैं अखबार को उनका नाम छापने का तो साहस नहीं हुआ। गरीब लड़की के गले पर छुरी फेर दी। सोचा, क्यों न जाकर गीता से ही इस विषय में सलाह करे।

जो कुछ उसकी पार्टी वाले कहेंगे, वही करना ठीक होगा। इस बदमाशी का कुछ तो जवाब होना चाहिए। कम्युनिस्टों की जितनी निन्दा उसने इन अखबारों में पढ़ी थी, या ऐसे लोगों से सुनी थी, उस पर से उसका विश्वास हट गया। भावाजी और उनके साथियों के प्रति भी उसे अश्रद्धा हो गई।

संध्या सूरज डूबते समय दुकान बढ़ने पर भावरिया छोटा गणेश बाड़ी में गीता के मकान पर पहुंचा। जीने की ओर जाते एक सोलह-सत्रह बरस के लड़के को उसने पुकारा, "भैया, जरा सुनो, यहां गीताजी रहती हैं न ? जो कम्युनिस्ट पार्टी में काम करती हैं, जानते हो ?"

"हूं।" लड़के ने गम्भीरता से उत्तर दिया।

"हमारा नाम पदमलाल है। जरा उन्हें खबर दे दोगे ? हम मिलना चाहते हैं, कुछ काम है।"

"उनकी तबियत ठीक नहीं है, बुखार है।" लड़के ने सिर खुजाकर उत्तर दिया और प्रतीक्षा किए बिना जीना चढ़ने लगा।

लौट जाने के सिवा उपाय न था। राह में वह सोचता गया—देखो इन अखबार वालों का जुल्म ! गरीब को कितना परेशानं किया; बीमार कर दिया। ख्याल आया, जाकर भावाजी से शिकायत करे—महाराज, यह क्या करवा रहे हो ? फिर खयाल आया—नहीं, पहले इन लोगों से बात कर लेना ठीक है। जाने क्या समझें ? कुछ और उत्पात खड़ा हो जाए ! जाने अखबार में क्या और छाप दें ? फिर अपने तो वारे-न्यारे ही करने वाले ठहरे।

आठ-नौ दिन उसे फुर्सत न मिल सकी। एक दिन फिर समय निकाल कर छोटा गणेश बाड़ी गया। भाग्य से वही लड़का उसी समय जीना उतर नीचे आया। भावरिया के पुकारने से वह समीप आ गया।

"भैया, गीताजी को जानते हो न ?"

"हां हमारी बैन हैं।"

दूसरे दिन भावरिया दुकान पर आ रहा था। बाजार में उस ने सुना कि सरकार ने जहाजी सिपाहियों का राशन-पानी बन्द कर दिया है पर सिपाही अपनी हड़ताल पर डटे हैं।......सरकार को गाली देकर भावरिया ने कहा, "जब तक देसी सिपाही सालों की जंजीर के कुत्ते बन कर अपनों को काटने दौड़ते थे तब तक तो उन्हें खूब चराते रहे। अब काहे को खाना देंगे? राशन-पानी बंद करके डराना चाहते हैं गरीबों को! और इन......" उस ने फिर गाली दी, "अंग्रेजों को ही हिन्दुस्तानी अनाज न दें तो देखेंगे, कितने दिन मक्खन-बिस्कुट खा लेंगे!"

भावरिया रास्ते में तनवरिया, बोमनजी और उसमान भाई की कोठियों में गया। कुछ ही देर में तनवरिया, बोमनजी, भावरिया और उसमान भाई के यहां के आदमी 'अपोलो' की तरफ चल दिए। रास्ते में फल, मिठाई, बिस्कुट जो कुछ मिला, लेकर टोकरे भर लिए। बन्दर पर जाकर देखा—हजारों आदमियों की भीड़ थी। जगह-जगह तिरंगे, हरे और लाल झण्डे एक साथ फहरा रहे थे। जयहिन्द, इन्कलाब जिन्दाबाद और अंग्रेजी सरकार के नाश के नारे लग रहे थे। वरदी पहने जवान सिपाही सर्वसाधारण जनता में ऐसे घुल-मिल रहे थे जैसे जनता के ही अंग हों, भेद केवल कपड़ों का था। बोमनजी ने उत्साह से कहा, "अब तब ठीक हो जो कोई हिन्दुस्तानी किसी अंग्रेज को एक दाना अनाज नहीं दे।...... अपने भाई का पेट भरने को तो सब मुल्क है। अंग्रेज इस को कैसे भूखा मारेगा?"

भावरिया लौट कर दुकान पर आया परन्तु परिस्थिति की उत्तेजना और उत्सुकता बनी रही। संध्या समय दुकान बढ़ाई जा रही थी कि 'खड़ा पारसी' चौमुहानी की ओर से लाउड-स्पीकार की आवाज सुनाई दी। उधर नजर गई तो एक लारी पर तिरंगे, हरे और लाल झण्डे फहरा रहे थे। लारी पर लाउड-स्पीकर बोल रहा था, "इन्कलाब जिन्दाबाद! भाइयो, आप के देश के जहाजी सिपाहियों ने सरकार के जुल्म के खिलाफ हड़ताल की है।"

भावरिया उत्सुकता से चौमुहानी की ओर बढ़ चला। लाउड-स्पीकर की आवाज स्पष्ट होती जा रही थी। समीप पहुंच कर उस ने भीड़ की आड़ से देखा, लारी में गीता 'लाल सलाम' में मुट्ठी उठाए माइक्रोफोन के चमकदार डण्डे के सामने खड़ी बोल रही थी। उस का चेहरा लाल था और पसीना बह रहा था। वह कह रही थी, "ये हिन्दुस्तानी जहाजी सिपाही आप के ही भाई

सभाओं को कुचल कर रख देती थी, इस संगठित शक्ति के प्रदर्शन के सामने भयभीत कुत्ते की तरह टांगों में दुम दबाए इधर-उधर कतरा रही थी। भावरिया एक ओर खड़ा इस जुलूस को देखता रहा। उत्साह से उस का सीना उभर आया और आंखों में सरूर छा गया। सोचा, अब अंग्रेज खत्म हुए। साथ ही ख्याल आया, विलायती कम्पनी में बाकी उस की उगाही भी गई।······गई तो क्या ?

आगे जाना व्यर्थ था। जुलूस निकल जाने पर वह लौटने के लिए समीप की गली से घूम कर चला। फोर्ट की गलियों में बड़ी-बड़ी विलायती कम्पनियों के अंग्रेज साहब लोग दफ्तर बन्द करके भागे जा रहे थे। कहीं-कहीं दिखाई पड़ने वाले गोरे सिपाहियों के चेहरे उतरे हुए और आशंकित थे। भावरिया उमंग और उत्साह अनुभव कर रहा था। उसे दो महीने की घटनाएं याद आने लगीं—नेता जी की जयंती के अवसर पर जुलूस निकाला गया था। पुलिस जगह-जगह गोली चला कर जुलूस को यों भगा देती थी जैसे जूठे पत्तों पर घिर आई मक्खियों को उड़ा दिया जाए। अब उसी पुलिस के मालिक कैसे सहमे हुए थे।

दुकान पर लौट उस ने खबर सुनाई और पल-भर में बात बाजार में फैल गई। आस-पास के लोग जुट आए और ब्योरा पूछने लगे। चेहरे और आंखें उत्साह से चमक उठीं। अंग्रेजों के अधिकार में भारतीय फौज ही देश से बेगानी हो, देश को अंग्रेजों के हाथ में बांधे हुए थी। अब सेना के लोग अपनों से आ मिले तो अपने राज में कसर क्या ? कोई बढ़ कर कह रहा था, "आखिर अपना ही तो खून है !" कोई कह रहा था, "भाई, घुटने पेट को ही मुड़ते हैं !"

चुनाव के संघर्ष की पेचीदा राजनीति जन-साधारण की पहुंच से बाहर थी। उन की समझ से वह स्वराज्य की लड़ाई नहीं, आपस की लड़ाई थी परन्तु अपने देश को गैरों से वापस लेने की बात, अपने आदमियों के गैरों से हट कर अपनों से आ मिलने की बात सब को समझ आ रही थी।

जो खबर आती, पहले से बढ़ कर आती—"देसी जहाजी सिपाहियों ने बम्बई को घेर लिया है। जहाजी सिपाहियों ने वायरलेस लगा कर कराची, मद्रास और कलकत्ता सब जगह अंग्रेजों के खिलाफ़ लड़ाई की खबर भेज दी है। सब छावनियों में देसी सिपाही अंग्रेजों के खिलाफ हो गए। हिन्दुस्तानी हवाई फौजों ने हवाई जहाजों पर कब्जा कर लिया है। सब हिन्दुस्तानी एक हो गए। मुट्ठी भर अंग्रेज बम्बई से भागने की तैयारी कर रहे हैं। अंग्रेजों के दफ्तरों और मकानों पर अंग्रेजी फौज पहरा दे रही है······"

दूसरे दिन भावरिया दुकान पर आ रहा था। बाजार में उस ने सुना कि सरकार ने जहाजी सिपाहियों का राशन-पानी बन्द कर दिया है पर सिपाही अपनी हड़ताल पर डटे हैं।......सरकार को गाली देकर भावरिया ने कहा, "जब तक देसी सिपाही सालों की जंजीर के कुत्ते बन कर अपनों को काटने दौड़ते थे तब तक तो उन्हें खूब चराते रहे। अब काहे को खाना देंगे ? राशन-पानी बंद करके डराना चाहते हैं गरीबों को ! और इन......." उस ने फिर गाली दी, "अंग्रेजों को ही हिन्दुस्तानी अनाज न दें तो देखेंगे, कितने दिन मक्खन-बिस्कुट खा लेंगे !"

भावरिया रास्ते में तनवरिया, बोमनजी और उसमान भाई की कोठियों में गया। कुछ ही देर में तनवरिया, बोमनजी, भावरिया और उसमान भाई के यहां के आदमी 'अपोलो' की तरफ चल दिए। रास्ते में फल, मिठाई, बिस्कुट जो कुछ मिला, लेकर टोकरे भर लिए। बन्दर पर जाकर देखा—हजारों आदमियों की भीड़ थी। जगह-जगह तिरंगे, हरे और लाल झण्डे एक साथ फहरा रहे थे। जयहिन्द, इन्कलाब जिन्दाबाद और अंग्रेजी सरकार के नाश के नारे लग रहे थे। वरदी पहने जवान सिपाही सर्वसाधारण जनता में ऐसे घुल-मिल रहे थे जैसे जनता के ही अंग हों, भेद केवल कपड़ों का था। बोमनजी ने उत्साह से कहा, "अब तब ठीक हो जो कोई हिन्दुस्तानी किसी अंग्रेज को एक दाना अनाज नहीं दे।...... अपने भाई का पेट भरने को तो सब मुल्क है। अंग्रेज इस को कैसे भूखा मारेगा ?"

भावरिया लौट कर दुकान पर आया परन्तु परिस्थिति की उत्तेजना और उत्सुकता बनी रही। संध्या समय दुकान बढ़ाई जा रही थी कि 'खड़ा पारसी' चौमुहानी की ओर से लाउड-स्पीकार की आवाज सुनाई दी। उधर नजर गई तो एक लारी पर तिरंगे, हरे और लाल झण्डे फहरा रहे थे। लारी पर लाउड-स्पीकर बोल रहा था, "इन्कलाब जिन्दाबाद ! भाइयो, आप के देश के जहाजी सिपाहियों ने सरकार के जुल्म के खिलाफ हड़ताल की है।"

भावरिया उत्सुकता से चौमुहानी की ओर बढ़ चला। लाउड-स्पीकर की आवाज स्पष्ट होती जा रही थी। समीप पहुंच कर उस ने भीड़ की आड़ से देखा, लारी में गीता 'लाल सलाम' में मुट्ठी उठाए माइक्रोफोन के चमकदार डण्डे के सामने खड़ी बोल रही थी। उस का चेहरा लाल था और पसीना बह रहा था। वह कह रही थी, "ये हिन्दुस्तानी जहाजी सिपाही आप के ही भाई

और बेटे हैं। उन्हें आप की ही सहायता का भरोसा है। भूख और अपमान से ऊब कर उन्हों ने न्याय की मांग की है। उन का अपमान देश का अपमान है। उन की भूख देश की भूख है। आज वे गुलामी की जंजीरें तोड़ कर आजादी की लड़ाई लड़ने के लिए आप की ओर मिलाप और सहायता का हाथ बढ़ा रहे हैं। इन सिपाहियों की न्यायपूर्ण मांग को दबा देने के लिए निर्दय विदेशी सरकार पूरी शक्ति से बन्दूकों की गोलियां और तोपों के गोले बरसा रही है। आप के भाई और बेटे उस का जवाब बहादुरी से दे रहे हैं। सरकार के जुल्म से भूखे मरते अपने बेटों और भाइयों को खाना देने के अपराध में हमारी जनता पर आज तीसरे पहर कालबादेवी रोड पर गोली चलाई गई। अपने भूखे भाई-बेटों को भोजन देने के कारण हम पर गोली चलाई जाती है, इस से बड़ा अत्याचार संसार में और क्या होगा ? बम्बई का बच्चा-बच्चा, हरएक मर्द और औरत, हिन्दू और मुसलमान, ईसाई और पारसी जान देकर भी सरकार के इस जुल्म का मुकाबला करेगा। हिन्दुस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी आप से अपील करती है कि इस अत्याचार का विरोध करने के लिए आप कल बम्बई में पूरी हड़ताल करें। हर एक दुकान, मिल, दफ्तर, ट्राम, मोटर, बस सब कुछ बन्द रहेगी। हम किसी किस्म का दंगा और लूट-मार नहीं होने देंगे। हमारी नाराजी और विरोध अंग्रेज सरकार के जुल्म के खिलाफ है और हम विदेशी सरकार को चेतावनी देते हैं कि अपने शहीद होने वाले प्रत्येक नौजवान के खून का बदला हम खून से लेंगे !"

गीता आंचल से चेहरे का पसीना पोंछती हुई माइक के सामने से हट गई। उसके स्थान पर दूसरा कामरेड खड़ा हो वही बात कहने लगा। लारी 'लाल-बाग' की ओर चल दी। भावरिया काठ के पुतले की भांति निश्चल यह सब सुन रहा था। लारी चल देने पर उसने अनुभव किया, उसके शरीर का रोम-रोम खड़ा हो गया है। पीठ पीछे रीढ़ पर पसीने की एक धारा बह गई है। धोती के छोर से पसीना पोंछ वह कुछ क्षण लारी की ओर देखता रहा और फिर लौट पड़ा।

भावरिया ने सुबह आंखें खुलते ही नीचे गली में अखबार वाले की पुकार सुनी। छोकरे को बुलाकर तुरन्त अखबार लाने के लिये कहा और प्रतीक्षा में खिड़की से झांकता रहा। पहले पन्ने पर ही देखा— सरदार पटेल की अपील :

"जनता इस नाजुक परिस्थिति में सब प्रकार शान्त रहे !

"हड़ताल आदि द्वारा नगर में किसी प्रकार की अशान्ति का कारण न होना चाहिये ।

"जहाजी सिपाहियों ने नेताओं से सलाह लिये बिना सेना का अनुशासन भंग किया है। उनके इस काम में किसी प्रकार का सहयोग जनता को न देना चाहिये······"

भावरिया को अपनी आंखों पर विश्वास न हुआ। मस्तिष्क पर प्रबल आघात-सा लगा। कुल्ला, दातुन और स्नान भूल कर वह उसी प्रकार बैठा रह गया। फिर उठकर स्नान-भोजन करते समय भी खयाल आता रहा—'अच्छा स्वराज यह नेता दिखा रहे हैं कि अपने भूखे मरते देश वालों की मदद करने को मना कर रहे हैं ! ······कैसी राजनीति है यह ? आंखों के सामने पिछले दिन दोपहर में देखे जहाजी सिपाहियों के चेहरे फिर गये और खयाल आया, सरकार उन्हें भूखा मार रही है, वे आकर अपने आदमियों से मिलना चाहते हैं और हम उनकी मदद न करें ? ····जाने राजनीति की यह क्या सांठ-गांठ है ? कल शाम 'वे' बेचारे गला फाड़ रहे थे कि गोली चली है, हड़ताल करो। ये कह रहे हैं हड़ताल मत करो।····खूब रही ! हड़ताल कैसे नहीं होगी !'

छोटे मुनीम ने आकर पूछा, "सेठ जी, दुकान खुलेगी ?"

सिर हिला इनकार में भावरिया ने पूछा, "बाजार में कैसी हवा है ?"

"लोग तो कह रहे हैं जैसे आप, तनवरिया और बोमन जी कहें। अभी तो बाजार बन्द है। लोग राह देख रहे हैं ।"

"बन्द रहेगा बाजार।" भावरिया ने उठने का विचार न दिखा कर कह दिया।

"भावा जी और बाबू रामगोपाल बाजार में घूम रहे हैं। कह रहे हैं हड़ताल नहीं होनी चाहिये, सरदार पटेल का हुक्म है। कांग्रेस ने हड़ताल की मनाही की है। यह सब झगड़ा लाल-बावटा वालों ने कराया है।" सिर और गर्दन खुजलाते हुये मुनीम ने कहा ।

"कहने दो !" मन के क्रोध को उपेक्षा का रूप देने के लिये भावरिया बोला।

"जरा दुकान तक चले चलते····भावाजी खड़े थे। कह रहे थे—सेठजी से 'जयगोपाल जी' कहने आये थे।"

मुनीम की ओर देख अनिच्छा से भावरिया ने उत्तर दिया, "अच्छा।" और छोकरे से कपड़े मंगा कर पहनने लगा।

भावरिया ने देखा, बन्द बाजार में एक ओर मोटर खड़ी थी और भावाजी और बाबू रामगोपाल चटक सफेद खद्दर का कुर्ता, धोती, टोपी पहने बाजार के बीच खड़े लोगों से बात कर रहे थे। भावरिया को देख कर उन्होंने दूर से ही दोनों हाथ उठा कुशल पूछा। उनके सदा प्रसन्न चेहरे पर क्षोभ अथवा उत्तेजना का चिन्ह न था। उस विनय और शान्ति के सामने भावरिया को अपने मन की उत्तेजना के प्रति संकोच-सा अनुभव हुआ। उसने भी मुस्कराने का यत्न कर उत्तर दिया, "अरे, आपने काहे कष्ट किया! कहला भेजते। मैं मकान पर आ जाता।····आज्ञा कीजिये!"

भावा जी ने स्नेह से भावरिया के दोनों हाथ थाम लिये, "अरे भैया, कैसी बात करते हो; आज्ञा क्या? ऐसे ही बाजार की हालत देखते चले आये मिलने। दुकानें नहीं खुलवा रहे क्या?" विस्मय से उन्होंने पूछा।

भावरिया की उत्तेजना फिर भड़क उठी। उसे वश कर, भावा जी से आंखें चुरा उसने उत्तर दिया, "अब जैसे बाजार वालों की राय हो। हम तो सब के साथ हैं। कौन खामुखा अपनी दुकान में आग लगवा ले!"

भावा जी ने हंस दिया, "अरे भाई सेठ, क्या कह रहे हो?····किसकी हिम्मत है ऐसी बम्बई में?" भावरिया के हाथ थामे ही वे बोले, "समझाने से सब होता है। लोग क्या जानते हैं! ये सब हिंसा-हत्या के काम अपने कांग्रेस के नहीं हैं। सरकार की अपनी फौज और सरकार के झगड़े में अपने को क्या? अपने पेट के लिये वे लोग हड़ताल कर रहे हैं तो अपने को क्या?"

"समीप खड़ा एक आदमी बोल उठा, "अरे, पेट के लिये ही तो स्वराज्य चाहिये, नहीं तो किसलिये?"

भावाजी ने उसकी ओर देखा ओर उपेक्षा कर भावरिया का हाथ थामे कहते गये, "कल तक यही लोग तो अपने ऊपर गोली चलाते थे, क्यों? और ऐसे समय यह उपद्रव खड़ा कर दिया इन लोगों ने। भड़काने वाले जो हैं उन्हें तो जानते ही हो?····सन् बयालीस में तो सरकार की बगल में जा छिपे थे। अरे क्या गांधी जी, सरदार पटेल और नेहरू जी से भी ज्यादा राजनीति समझते हैं ये लोग? इस वक्त सरकार झुक रही है, समझौते की बात हो रही है पर इन्हें तो देश का नुकसान जो करना है·····लोग तो समझाने से समझते हैं

सेठ जी ! और फिर तुम्हारी बात कौन टाल सकता है ?" अपने हाथों में थमे भावरिया के हाथों को उन्होंने आन्तरिकता से दबा दिया ।

"महाराज, अपने तो इतने महात्मा हैं नहीं" भावा जी की ओर बिना देखे भावरिया ने उत्तर दिया, "कि कोई अन्न-पानी बन्द कर दे, सीने पर गोली चलाये और हम हाथ जोड़े बैठे रहें और फिर जो सबकी राय हो—अपनी दुकान तो महाराज खुलेगी नहीं ।"

"अच्छा, अच्छा भाई, जैसा समझो !" भावा जी ने मुस्कराकर उत्तर दिया । उनके स्वर में असन्तोष का कोई चिन्ह न था, "अरे भाई, इन अखबार वालों ने उस दिन क्या बदतमीजी की । सालों को बुला कर धमकाया, ऐसा करोगे तो हम नहीं जानते, अगर यह छापेखाने का सब टंडोरा फुक-फुका जाये । क्या समझते हैं अपने आपको····? अच्छा तो सेठ जी, कोई दंगा-वंगा न होने पाये । यहां तो आप ही हैं । देखते रहियेगा ! बड़े नाजुक वखत है राजनीति के ।"

भावरिया ने अब भी भावा जी से आंख नहीं मिलाई, "महाराज, अपने पास कौन तोप-बन्दूक रखी हैं जो किसी को धमकाने, मारने जायेंगे और कोई कुचल ही डालने आये तो चींटा भी चिकोटी काटता है ।"

भावा जी अब भी प्रसन्न और शान्त थे । भावरिया का हाथ थामे ही रहे, भावरिया के लड़के की बाबत पूछते रहे, बहुत दिनों से देखा ही नहीं लड़के को । क्या दुकान पर नहीं आता ?···अंग्रेजी स्कूल में पढ़ता है न ? बड़ा अच्छा है । अच्छा, अब चलें !"

भावरिया का हाथ छोड़ रामगोपाल की बांह उन्होंने थाम ली और 'जयगोपाल जी' कह कर मोटर की ओर चल दिये ।

इन लोगों के चले जाने के बाद बाजार के लोगों ने भावरिया को घेर लिया । "पूरी हड़ताल होगी जी !" उसने कहा, "बड़े-बड़े स्वराज्य के लेक्चर देते रहे ! अब जब मौका आया, तोप-बन्दूक देखी तो कांछ खोलने लगे······"

"सब मिलों में पूरी हड़ताल है ।" समीप खड़े लोगों ने बताया, "लाल-बावटा वाले सब झण्डे लेकर बड़े जोरों का जुलूस निकाल रहे हैं । सब लोग साथ हैं । परेल से इधर ही आ रहा है जुलूस ।"

दुकान पर लगे तिरंगे झण्डे लोगों ने हाथों में ले लिये । तनवरिया के यहां से एक बड़ा तिरंगा झण्डा ऊंचे बांस पर आ गया । भावरिया ने कहा, "सब झण्डे रहेंगे !······सब झण्डे लाओ !" समीप ही चमड़े वाले सैयद की दुकान से

हरा झण्डा आ गया। लाल झण्डा नहीं मिला। हरे और तिरंगे झण्डे लेकर भीड़ चल दी। सब तरफ से लोग ऐसे आ-आ कर जमा होने लगे जैसे बरसात में संध्या समय चिराग पर पतंगे आ जुटते हैं। नारे लगने लगे—"जयहिन्द! इन्कलाब जिन्दाबाद! अंग्रेजी राज का नाश हो! सिपाहियों के साथ न्याय हो! अपने भाइयों को भूखा नहीं मरने देंगे! हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई!" जुलूस के आगे-आगे बच्चों की भीड़ नारे लगाती चलने लगी। दुकानों के ऊपर मकानों की तीसरी-चौथी मंजिल तक सब खिड़कियों से स्त्रियां झुक-झुक कर भीड़ को देखने लगीं।

जुलूस की भीड़ 'खड़ा पारसी' की चौमुहानी तक पहुंची थी कि 'लाल-बाग' की ओर से गोरों से भरी फौजी लारियां आती दिखाई दीं। लारियों को देखकर भीड़ ने ऊंचे स्वर में नारे लगाए। गोरों ने मशीनगन घुमाकर गोलियों की दो बौछारें कर दीं। गोलियां ऐसे आईं जैसे टोकरी भर-भरकर कंकर फेंके गए हों। भीड़ तितर-बितर हो गई। भावरिया एक खम्भे की आड़ में हो गया। गोलियां केवल भीड़ पर ही नहीं, चौतरफा मकानों के छज्जों और खिड़कियों की ओर भी चलाई गई थीं। भीड़ के आगे कूद-कूद कर नारे लगाने वाले तीन लड़के छटपटाकर गिर पड़े। कुछ चोट खाकर चीखने लगे। लारियां अपने काम का परिणाम देखने के लिए रुकी नहीं, तेजी से निकल गईं।

भावरिया का दिल धक्-धक् कर रहा था। खम्भे की आड़ से निकल उसने देखा, सामने की चाल की दूसरी मंजिल से एक औरत चीख मारकर कूद पड़ी। गोली की बौछार से डरकर भागी हुई भीड़ फिर सिमटने लगी। भावरिया लपक कर खिड़की से कूद पड़ी स्त्री के पास पहुंचा। औरत बेहोश हो गई थी। उसके समीप ही चार बरस की एक बच्ची गोलियों से बिंधी पड़ी थी।

बच्ची जुलूस देखने के लिए मकान के छज्जे पर आ बाहर झुक गई थी। वह गोलियों से बिंधकर नीचे गिर पड़ी। यह देख, उसे बचाने के लिए उसकी मां चीखकर ऊपर से कूद पड़ी। चोट खाए और भी आदमी इधर-उधर चीख रहे थे। भयभीत लोग बता रहे थे, कहां-कहां गोलियां पड़ी हैं। गोलियों से जगह-जगह दीवारों का पलस्तर उखड़ गया था।

गोरों की गोलियों से जख्मी बच्चों और दूसरे लोगों का रोना और खून बहता देखकर भावरिया का मन भय और विरोध से व्याकुल हो गया। परेल का जुलूस देखने का ध्यान न रहा। वह घायलों को उनके घर पहुंचाने की व्यवस्था

करने लगा। भीतर मन उबाल खा रहा था—आखिर गोरों ने गोली चलाई किस बात पर ?······क्यों ?······किस बात पर ? भीड़ में से तो किसीने एक कंकरी भी नहीं फेंकी ! यह सब हमारे सीने पर हथियार बांधे धड़धड़ाते फिरने का ही गुमान है। दोमंजिले से गिरी औरत को होश नहीं आ रहा था। उसे वैसे ही उठाकर ऊपर पहुंचाया गया।

परेल और मदनपुरा से भागकर आए आदमियों से पता लगा—सभी जगह ही ऐसा हाल गोरी फौज कर रही है। परेल की ओर से हंसिया-हथौड़े का लाल बिल्ला लगाए कुछ स्वयंसेवक एक जख्मी को कंधों पर उठाए उसके घर छोड़ने जा रहे थे। भावरिया भी जख्मियों को उठवा कर भेज रहा था।

फौजी लारी की गड़गड़ाहट फिर सुनाई दी। लोग तितर-बितर होने लगे। जख्मियों को छोड़कर आड़ के लिए भागने लगे। लारी आ पहुंची और फिर उन्होंने जहां भी आदमी देखे, गोली चला दी। इस बार कोई भी नारे नहीं लगा रहा था। दो आदमी और जख्मी हो गए।

"क्या सबको मार डालेंगे ?" भावरिया ने अपने साथ के आदमियोंसे कहा, "क्या खून सवार हुआ है इनके सिर पर ?" समीप खड़े नुक्कड़ के होटल वाले बैरमखां ने कहा, "वहां बन्दर में सिपाहियों के पास भी तोप-बन्दूक हैं, वहां तो बस चलता नहीं। हम निहत्थे लोगों को मार रहे हैं साले। मोटर में छिपे सबको मारते चले जाते हैं। सड़क पर आएं तो देखें !"

साथ के आदमियों की ओर देखकर भावरिया ने कहा, "दोनों तरफ से सड़क रोक दो। यह लारी फिर आएगी। ये लोग शाम तक सबको मार डालेंगे।"

सब लोग जो कुछ हाथ लगा, खाली ड्रम, टीन की चादरें, पटड़े, शहतीर, पत्थर घसीट-घसीट कर सड़क पर बांध लगाने लगे। बांध अभी मोटर रोकने लायक बन नहीं पाया था कि फिर एक लारी आ गई। लोग भागने लगे। भावरिया ने गाली दे चिल्लाकर कहा, "भागकर कहां जाओगे ? अगर बम फेंक-कर घरों को ही आग लगा देंगे तो कहां जाओगे ? वे भी माई के लाल हैं जो समुद्र में तोपों की चोट खा रहे हैं। जो अपने बाप की औलाद है, डटकर लड़ें। लानत है भागने वाले पर !" उसने लोहे का एक भारी गधेला उठा लिया और समीप आती हुई लारी की ओर लपका और उसके पीछे दूसरे आठ-दस आदमी। लारी वालों ने चढ़ आते लोगों की ओर मशीनगन घुमा दी परन्तु स्वयं गाड़ी की चाल और इन लोगों के लारी की ओर ही बढ़ जाने से, ऊंचे पर जमी हुई

मशीनगन की गोलियां इनके सिरों पर से निकल गईं ।

भावरिया ने लोहे का गधेला पूरी शक्ति से गाड़ी के बोनट पर दे मारा । भयभीत गोरे ड्राइवर के हाथ कांप गए । एक गाड़ी एक बड़े ढोल और फुटपाथ पर बने खंभे से टकरा गई । गोरों ने रिवाल्वर निकाल लिए । भावरिया ने लोहे का गधेला फिर से उठाकर ड्राइवर पर दे मारा । मशीनगन चुप हो गई । लोग लपककर लारी पर चढ़ गए । इतने में दूसरी लारी उलटी ओर से आ गई । यह कांड देख लारी फासले पर ही रुक गई । दूर से ही गोरों ने मशीनगन खूब देर तक घुमा-घुमाकर भीड़ पर चलाई । जब सड़क पर कोई भी आदमी अपने पैरों पर खड़ा न रह गया, उन्होंने टूटी हुई लारी को लोहे की सांकल से अपनी लारी के पीछे बांधा और खींच ले गए ।

'खड़ा पारसी' की चौमुहानी के काण्ड का समाचार दो घंटे बाद मदनपुरा पहुंचा । लाल सेना के स्वयंसेवक जख्मियों और मुर्दों को उठाने के लिए आए । उन्होने छः लाशें और तेरह जख्मी हस्पताल पहुंचाए । इन जख्मियों में अर्ध-मूर्छित अवस्था में पदमलाल भावरिया भी था । उसके शरीर में पांच गोलियां लगी थीं । शरीर से निरन्तर रक्त बह रहा था ।

डाक्टरों को भावरिया के बचने की आशा न थी । दवाई की सुइयां उसके शरीर में लगाई गईं । एक घंटे बाद उसने आंखें खोलीं । कागज-पेंसिल लिए एक वालण्टियर ने उसके कान के समीप झुककर धीमे स्वर में पूछा, "आप अपने घर का पता दीजिए । हम खबर भेज देंगे । आपके घर के लोग आप से मिल सकेंगे ।"

गीता की मां का कलेजा धक्-धक् कर रहा था । भय के मारे पेट की आंतें ऐंठ-ऐंठ कर रह जातीं । बार-बार सोचती—मेरे भाग्य से दोनों ही आगबगोले पैदा हुए । अपने-आप तो जो थी, लड़के को भी चौपट किया । ऐसे भय के समय लोगों के बच्चे आराम से घर बैठते हैं परन्तु इन दोनों को मैदान जीतने की फिक्र है । मुट्ठी-भर के जिस्म नहीं हैं, रत्ती-भर अक्ल नहीं, स्वराज्य लेंगे ! यह सत्यानासी पार्टी मेरे दोनों बच्चों को गोद से ले गई । दोपहर में बाजार से धड़ाके की आवाजें आईं तो वह कभी छज्जे पर दौड़ती, कभी ऊपर । क्रोध और उद्विग्नता से मन चाहता, सिर दीवार पर मार कर फोड़ ले । वह मर जाए तो फिर ये कलमुंहे जो चाहें करें ।

तीसरे पहर शामू आया। भला-चंगा। केवल भवें पसीने से चिपकी हुई थीं। मां ने डांटा तो उसने जवाब में क्रोध दिखाया, "तुम क्या जानती हो, शहर में क्या हो रहा है! मशीनगनें चल रही हैं। कांग्रेस के लीडर चूहों की तरह बिलों में घुस गए। हमारी पार्टी लीड दे रही है। हिन्दू-मुसलमान और कांग्रेसी भी सब हमारे साथ हैं। तीनों झुंड एक साथ चलते हैं, जानती हो? सैकड़ों को हस्पताल पहुंचाया। बैन की ड्यूटी हस्पताल में है। मैं भी वहीं था। वहीं मूंगफली और गुड़ पार्टी वालों ने दिया। बैन ने मुझे भेज दिया कि तुम घबरा रही होगी, इसलिए आया हूं।··· वहां इतना काम है! तुम बड़ी डरपोक हो। हमारे तो सिर पर से गोलियां निकल गई·····।" शामू की मां के मुंह से निकल गया, "हाय!" और उसने लड़के का सिर छाती से लगा लिया। वह तैयार हुई कि चल कर गीता को अपने साथ लिवा लाए परन्तु शामू घर के मालिक मर्द की स्थिति से बिगड़ उठा, "क्या अकल मारी गई है तुम्हारी? खबरदार, बैठो यहीं!" मां ने कातरता से उसकी ओर देखा और लड़के के अधिकार को स्वीकार कर चुप रह गई।

शामू ने कहा, "रात को कर्फ्यू-आर्डर हो जायगा। जो बाहर निकलेगा, उसे गोली मार दी जाएगी। तुम जल्दी से बैन और उसके साथियों के लिए पूरी तरकारी बना दो। मैं हस्पताल दे आऊंगा। जल्दी करो। 'लालबाग' पैदल जाना होगा। ट्राम और बस बन्द हैं।"

मां रसोई में थी। एक कामरेड गीता को ढूंढ़ता आया और शामू को गीता के लिए एक संदेश दे चला गया। कटोरदान में कई आदमियों के लायक खाना ले शामू के० जी० एम० हस्पताल जाने के लिए तैयार हुआ तो मां ने फिर गिड़गिड़ाकर बेटे की रक्षा के लिए साथ चलने की बात कही। शामू मां की मूर्खता से बिगड़ उठा, "तुम कुछ समझती तो हो नहीं!···अगर कुछ हो गया तो मैं तुम्हें कहां बचाता फिरूंगा? बैन होती तो एक बात भी थी···दौड़-भाग तो लेती!···उलटा मुझे मरवा दोगी!"

गीता की ड्यूटी सुबह से ही कुछ दूसरे साथियों के साथ के० जी० एम० हस्पताल में फौजी गोरों द्वारा जख्मी किए गए लोगों की सेवा के लिए लगी हुई थी।

संध्या समय शामू खाना लेकर आया तो उसने बहिन को एक पुर्जा देकर

मशीनगन की गोलियां इनके सिरों पर से निकल गईं ।

भावरिया ने लोहे का गधेला पूरी शक्ति से गाड़ी के बोनट पर दे मारा । भयभीत गोरे ड्राइवर के हाथ कांप गए । एक गाड़ी एक बड़े ढोल और फुटपाथ पर बने खंभे से टकरा गई । गोरों ने रिवाल्वर निकाल लिए । भावरिया ने लोहे का गधेला फिर से उठाकर ड्राइवर पर दे मारा । मशीनगन चुप हो गई । लोग लपककर लारी पर चढ़ गए । इतने में दूसरी लारी उलटी ओर से आ गई । यह कांड देख लारी फासले पर ही रुक गई । दूर से ही गोरों ने मशीनगन खूब देर तक घुमा-घुमाकर भीड़ पर चलाई । जब सड़क पर कोई भी आदमी अपने पैरों पर खड़ा न रह गया, उन्होंने टूटी हुई लारी को लोहे की सांकल से अपनी लारी के पीछे बांधा और खींच ले गए ।

'खड़ा पारसी' की चौमुहानी के काण्ड का समाचार दो घंटे बाद मदनपुरा पहुंचा । लाल सेना के स्वयंसेवक जख्मियों और मुर्दों को उठाने के लिए आए । उन्होने छः लाशें और तेरह जख्मी हस्पताल पहुंचाए । इन जख्मियों में अर्ध-मूर्छित अवस्था में पदमलाल भावरिया भी था । उसके शरीर में पांच गोलियां लगी थीं । शरीर से निरन्तर रक्त बह रहा था ।

डाक्टरों को भावरिया के बचने की आशा न थी । दवाई की सुइयां उसके शरीर में लगाई गईं । एक घंटे बाद उसने आंखें खोलीं । कागज-पेंसिल लिए एक वालण्टियर ने उसके कान के समीप झुककर धीमे स्वर में पूछा, "आप अपने घर का पता दीजिए । हम खबर भेज देंगे । आपके घर के लोग आप से मिल सकेंगे ।"

गीता की मां का कलेजा धक्-धक् कर रहा था । भय के मारे पेट की आंतें ऐंठ-ऐंठ कर रह जातीं । बार-बार सोचती—मेरे भाग्य से दोनों ही आगबगोले पैदा हुए । अपने-आप तो जो थी, लड़के को भी चौपट किया । ऐसे भय के समय लोगों के बच्चे आराम से घर बैठते हैं परन्तु इन दोनों को मैदान जीतने की फिक्र है । मुट्ठी-भर के जिस्म नहीं हैं, रत्ती-भर अक्ल नहीं, स्वराज्य लेंगे ! यह सत्यानासी पार्टी मेरे दोनों बच्चों को गोद से ले गई । दोपहर में बाजार से धड़ाके की आवाजें आईं तो वह कभी छज्जे पर दौड़ती, कभी ऊपर । क्रोध और उद्विग्नता से मन चाहता, सिर दीवार पर मार कर फोड़ ले । वह मर जाए तो फिर ये कलमुंहे जो चाहें करें ।

तीसरे पहर शामू आया। भला-चंगा। केवल भवें पसीने से चिपकी हुई थीं। मां ने डांटा तो उसने जवाब में क्रोध दिखाया, "तुम क्या जानती हो, शहर में क्या हो रहा है! मशीनगनें चल रही हैं। कांग्रेस के लीडर चूहों की तरह बिलों में घुस गए। हमारी पार्टी लीड दे रही है। हिन्दू-मुसलमान और कांग्रेसी भी सब हमारे साथ हैं। तीनों झुंड एक साथ चलते हैं, जानती हो? सैंकड़ों को हस्पताल पहुंचाया। बैन की ड्यूटी हस्पताल में है। मैं भी वहीं था। वहीं मूंगफली और गुड़ पार्टी वालों ने दिया। बैन ने मुझे भेज दिया कि तुम घबरा रही होगी, इसलिए आया हूं।·· वहां इतना काम है! तुम बड़ी डरपोक हो। हमारे तो सिर पर से गोलियां निकल गईं····।" शामू की मां के मुंह से निकल गया, "हाय!" और उसने लड़के का सिर छाती से लगा लिया। वह तैयार हुई कि चल कर गीता को अपने साथ लिवा लाए परन्तु शामू घर के मालिक मर्द की स्थिति से बिगड़ उठा, "क्या अकल मारी गई है तुम्हारी? खबरदार, बैठो यहीं!" मां ने कातरता से उसकी ओर देखा और लड़के के अधिकार को स्वीकार कर चुप रह गई।

शामू ने कहा, "रात को कर्फ्यू-आर्डर हो जायगा। जो बाहर निकलेगा, उसे गोली मार दी जाएगी। तुम जल्दी से बैन और उसके साथियों के लिए पूरी तरकारी बना दो। मैं हस्पताल दे आऊंगा। जल्दी करो। 'लालबाग' पैदल जाना होगा। ट्राम और बस बन्द हैं।"

मां रसोई में थी। एक कामरेड गीता को ढूंढ़ता आया और शामू को गीता के लिए एक संदेश दे चला गया। कटोरदान में कई आदमियों के लायक खाना ले शामू के० जी० एम० हस्पताल जाने के लिए तैयार हुआ तो मां ने फिर गिड़गिड़ाकर बेटे की रक्षा के लिए साथ चलने की बात कही। शामू मां की मूर्खता से बिगड़ उठा, "तुम कुछ समझती तो हो नहीं!···अगर कुछ हो गया तो मैं तुम्हें कहां बचाता फिरूंगा? बैन होती तो एक बात भी थी···दौड़-भाग तो लेती!···उलटा मुझे मरवा दोगी!"

गीता की ड्यूटी सुबह से ही कुछ दूसरे साथियों के साथ के० जी० एम० हस्पताल में फौजी गोरों द्वारा जख्मी किए गए लोगों की सेवा के लिए लगी हुई थी।

संध्या समय शामू खाना लेकर आया तो उसने बहिन को एक पुर्जा देकर

कहा, "कामरेड जीतन जे० जे० हस्पताल से यह संदेश लाया है।" पुज में लिखा था—'पदमलाल भावरिया जख्मी होकर आया है। उसे पांच गोलियां लगी हैं। हालत खराब है। शायद ही बचे। उसने तुम्हें मिलने के लिए बुलाया है। जल्दी आओ।'

गीता को पसीना आ गया—ऐसी अवस्था में कैसे न जाए? जाए तो कैसे? जब तक उसकी ड्यूटी संभालने वाला न हो। परेशानी में कुछ निश्चय न कर पा रही थी। फिर ख्याल आया—पार्टी-सेक्रेटरी से इजाजत लिए बिना जा कैसे सकती है? भावरिया से मिलने की उसे मनाही थी। सोचा—शामू के हाथ पर्चा लिखकर इजाजत मंगा ले और अभी चली जाए। कागज ले, पर्चा लिखने लगी तो याद आया—सात बजे से कर्फ्यू हो जाएगा।...लड़का कहां जाएगा? कागज उसने हाथ में मरोड़कर फेंक दिया। वैसे ही भीतर उसका हृदय मुसककर रह गया।

गीता ने शामू के कन्धे पर हाथ रखकर उसे बहुत शीघ्र घर को जाने के लिए कहा और समझाया कि मां से कह देना—कोई चिन्ता न करे। यहां किसी तरह का भय नहीं है। वह दांतों से होंठ दबाकर फिर काम में लग गई। विक्षिप्त मस्तिष्क के कारण आंखों के सामने बार-बार जख्मी भावरिया का चित्र आ जाता। पट्टियों से सिर, हाथ-पांव बंधे हुए, कराहता हुआ—जैसे पचासों आदमी उसकी आंखों के सामने पलंगों पर पड़े छटपटा रहे थे। किसी की चीख या कराहना सुनकर उसकी ओर वह चल देती। वह सोच भी न पा रही थी। रात-भर प्रतीक्षा कर सुबह मजहर से इजाजत लेकर जे० जे० हस्पताल जाने के सिवा उपाय न था।

उलझन में दिन-भर वह कुछ खा न पाई थी। अब संध्या भी कुछ खा सकना असम्भव हो गया। समय बड़ी कठिनाई से बीत रहा था। चारों ओर से जखमियों की चिल्लाहट और कराहट कानों में पड़ रही थी। किसी को खून की कै हो जाती, किसी को दूसरी कोई हाजत। गीता डाक्टरों और नर्सों के बताए ढंग पर मशीन की तरह काम करती जा रही थी। कुछ बोलने की सामर्थ्य न थी। उसकी आंखों के सामने निरन्तर जख्मी पदमलाल भावरिया का रूप फिर रहा था। जिस मरीज के पास जाती, सोचती—ऐसे ही 'वह' भी पड़ा होगा, क्षत-विक्षत!

अगले दिन सुबह नौ बजे सहायता के लिए तीन कामरेड और पहुंच गए।

जिन लोगों को ड्यूटी पर चौबीस घण्टे हो गए थे, उन्हें कुछ समय के लिए घर जाकर नहा-धो आने के लिए छुट्टी दी गई। गीता हस्पताल से निकल घर न जा, परेल में पार्टी दफ्तर पहुंची। दफ्तर में पांच-छः कामरेड थकावट से निढाल, बेखबर सोए हुए थे। एक ओर मेघनाथ भी सो रहा था। बेसुधी में उसकी ऐनक उतर गई थी, बाल फैल गए थे और मुख खुला हुआ था। असगर जाग रहा था और एक दूसरे साथी से धीमे-धीमे बात करता हुआ मूंगफली और गुड़ खा रहा था।

"मजहर भाई कहां हैं ?" गीता ने पूछा।

असगर ने मेघनाथ को खूब ठेल-ठेल कर जगाया। नींद खुलने पर उसने आंखें मलकर ऐनक लगाई और माथे से बाल समेटकर गीता की ओर देखा, "क्यों, क्या है ?"

"मजहर भाई कहां हैं ?"

"शायद···हस्पताल में होंगे। जे० जे० हस्पताल में छः मजदूर कामरेड्स की डैथ (मृत्यु) हो गई है। उनके लिए सब इन्तजाम करना था। वहीं होंगे क्यों···तुम्हें यह क्या हो रहा है ?" ध्यान से गीता के चेहरे की ओर देख उसने पूछा।

गीता से कुछ उत्तर देते न बना। एक लम्बी सांस ले, जीना उतरने लगी। गीता के पांव लड़खड़ा रहे थे। सड़क पर किसी प्रकार की सवारी न थी। हस्पताल बहुत दूर था। एक घण्टे से अधिक चलकर वह हस्पताल पहुंची।

मजहर हस्पताल के फाटक पर ही दिखाई डिया। साइकल पर पीछे बहुत सा कोरा, सफेद कपड़ा बांधे उसी समय पहुंचे एक कामरेड से वह कह रहा था, "कितनी देर कर दी तुमने ?" कामरेड का उत्तर सुने बिना उसने गीता को सम्बोधन किया, "क्या है कामरेड ?" गीता के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना वह फिर कामरेड की ओर घूम गया, "भाई, जल्दी करो ! सब लोग इन्तजार में हैं।" और वह भीतर की ड्योढ़ी की ओर चल दिया।

गीता मजहर के पीछे-पीछे चली। हस्पताल की बगल में एक ओर बहुत-से शव अर्थियों पर रखे हुए थे। कुछ शवों को घेर कर बैठे और खड़े लोग सिसक-सिसक कर रो रहे थे। कुछ शवों के समीप 'लाल सेना' के स्वयं-सेवक खड़े आपस में बातचीत कर रहे थे। साइकल पर कफन आ गया देखकर स्वयंसेवक आगे बढ़े और कपड़ों के टुकड़े कर शवों को लपेटने लगे।

कहा, "कामरेड जीतन जे० जे० हस्पताल से यह संदेश लाया है।" पुज में लिखा था—'पदमलाल भावरिया जख्मी होकर आया है। उसे पांच गोलियां लगी हैं। हालत खराव है। शायद ही वचे। उसने तुम्हें मिलने के लिए बुलाया है। जल्दी आओ।'

गीता को पसीना आ गया—ऐसी अवस्था में कैसे न जाए ? जाए तो कैसे ? जब तक उसकी ड्यूटी संभालने वाला न हो। परेशानी में कुछ निश्चय न कर पा रही थी। फिर ख्याल आया—पार्टी-सेक्रेटरी से इजाजत लिए बिना जा कैसे सकती है ? भावरिया से मिलने की उसे मनाही थी। सोचा—शामू के हाथ पर्चा लिखकर इजाजत मंगा ले और अभी चली जाए। कागज ले, पर्चा लिखने लगी तो याद आया—सात बजे से कर्फ्यू हो जाएगा।···लड़का कहां जाएगा ? कागज उसने हाथ में मरोड़कर फेंक दिया। वैसे ही भीतर उसका हृदय मुसककर रह गया।

गीता ने शामू के कन्धे पर हाथ रखकर उसे बहुत शीघ्र घर को जाने के लिए कहा और समझाया कि मां से कह देना—कोई चिन्ता न करे। यहां किसी तरह का भय नहीं है। वह दांतों से होंठ दवाकर फिर काम में लग गई। विक्षिप्त मस्तिष्क के कारण आंखों के सामने वार-वार जख्मी भावरिया का चित्र आ जाता। पट्टियों से सिर, हाथ-पांव वंधे हुए, कराहता हुआ—जैसे पचासों आदमी उसकी आंखों के सामने पलंगों पर पड़े छटपटा रहे थे। किसी की चीख या कराहना सुनकर उसकी ओर वह चल देती। वह सोच भी न पा रही थी। रात-भर प्रतीक्षा कर सुबह मजहर से इजाजत लेकर जे० जे० हस्पताल जाने के सिवा उपाय न था।

उलझन में दिन-भर वह कुछ खा न पाई थी। अब संध्या भी कुछ खा सकना असम्भव हो गया। समय वड़ी कठिनाई से बीत रहा था। चारों ओर से जखमियों की चिल्लाहट और कराहट कानों में पड़ रही थी। किसी को खून की कै हो जाती, किसी को दूसरी कोई हाजत। गीता डाक्टरों और नर्सों के बताए ढंग पर मशीन की तरह काम करती जा रही थी। कुछ बोलने की सामर्थ्य न थी। उसकी आंखों के सामने निरन्तर जख्मी पदमलाल भावरिया का रूप फिर रहा था। जिस मरीज के पास जाती, सोचती—ऐसे ही 'वह' भी पड़ा होगा, क्षत-विक्षत !

अगले दिन सुबह नौ बजे सहायता के लिए तीन कामरेड और पहुंच गए।

जिन लोगों को ड्यूटी पर चौबीस घण्टे हो गए थे, उन्हें कुछ समय के लिए घर जाकर नहा-धो आने के लिए छुट्टी दी गई। गीता हस्पताल से निकल घर न जा, परेल में पार्टी दफ्तर पहुंची। दफ्तर में पांच-छः कामरेड थकावट से निढाल, बेखबर सोए हुए थे। एक ओर मेघनाथ भी सो रहा था। बेसुधी में उसकी ऐनक उतर गई थी, बाल फैल गए थे और मुख खुला हुआ था। असगर जाग रहा था और एक दूसरे साथी से धीमे-धीमे बात करता हुआ मूंगफली और गुड़ खा रहा था।

"मजहर भाई कहां हैं ?" गीता ने पूछा।

असगर ने मेघनाथ को खूब ठेल-ठेल कर जगाया। नींद खुलने पर उसने आंखें मलकर ऐनक लगाई और माथे से बाल समेटकर गीता की ओर देखा, "क्यों, क्या है ?"

"मजहर भाई कहां हैं ?"

"शायद...हस्पताल में होंगे। जे० जे० हस्पताल में छः मजदूर कामरेड्स की डैथ (मृत्यु) हो गई है। उनके लिए सब इन्तजाम करना था। वहीं होंगे क्यों...तुम्हें यह क्या हो रहा है ?" ध्यान से गीता के चेहरे की ओर देख उसने पूछा।

गीता से कुछ उत्तर देते न बना। एक लम्बी सांस ले, जीना उतरने लगी। गीता के पांव लड़खड़ा रहे थे। सड़क पर किसी प्रकार की सवारी न थी। हस्पताल बहुत दूर था। एक घण्टे से अधिक चलकर वह हस्पताल पहुंची।

मजहर हस्पताल के फाटक पर ही दिखाई डिया। साइकल पर पीछे बहुत सा कोरा, सफेद कपड़ा वांधे उसी समय पहुंचे एक कामरेड से वह कह रहा था, "कितनी देर कर दी तुमने ?" कामरेड का उत्तर सुने बिना उसने गीता को सम्बोधन किया, "क्या है कामरेड ?" गीता के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना वह फिर कामरेड की ओर घूम गया, "भाई, जल्दी करो ! सब लोग इन्तजार में हैं।" और वह भीतर की ड्योढ़ी की ओर चल दिया।

गीता मजहर के पीछे-पीछे चली। हस्पताल की बगल में एक ओर बहुत-से शव अर्थियों पर रखे हुए थे। कुछ शवों को घेर कर बैठे और खड़े लोग सिसक-सिसक कर रो रहे थे। कुछ शवों के समीप 'लाल सेना' के स्वयं-सेवक खड़े आपस में बातचीत कर रहे थे। साइकल पर कफन आ गया देखकर स्वयंसेवक आगे बढ़े और कपड़ों के टुकड़े कर शवों को लपेटने लगे।

ड्योढ़ी के समीप प्रान्तीय कमेटी के सेक्रेटरी दूसरे और दो मेम्बरों के साथ खड़े दो और कामरेडों से बात कर रहे थे। गीता ने इन्हें पहचाना। इन्हीं के सामने उसका मामला पेश हुआ था। गीता को भूल, मजहर उन लोगों के समीप जा बात करने लगा। गीता भी उसके पीछे-पीछे पहुंच कुछ अन्तर से खड़ी अपनी ओर ध्यान होने की प्रतीक्षा करने लगी।

मजहर ने सेक्रेटरी से कहा, "सब इन्तजाम हो गया। छः वर्कर्स (मजदूरों) के लिए पार्टी-फण्ड से कपड़ा मंगा दिया है। बाकी लोगों के लिए उनके अपने आदमी ले आए हैं।"

प्रान्तीय कमेटी के एक मेम्बर ने पूछा, "वर्कर्स की अर्थियों के लिए आदमी तो पूरे हैं? छः-छः आदमी होने चाहिए ताकि कंधा बदलने की सुविधा रहे।"

"हो जाएगा।" मजहर ने उत्तर दिया, "हम सब लोग हैं। कुछ दूर तक आप लोग भी चलेंगे। आदमी बुलवाए हैं। वे तब तक रास्ते में मिल जाएंगे। अब देर नहीं होनी चाहिए?"

"कितना अफसोस है!" सेक्रेटरी ने चश्मे के नीचे उंगलियां डाल अपनी नींद से सूजी-सी आंखें मलकर चश्मा ठीक करते हुए कहा, "इन बहादुरों का जुलूस नहीं निकल सकता?"

गीता उतावली हो रही थी। अपनी ओर किसी का ध्यान होते न देख, एक कदम आगे बढ़ बोली, "कामरेड्स, मैं एक बात पूछना चाहती हूं।"

सेक्रेटरी ने अपनी चुंधियाई आंखें उसकी ओर उठाईं और फिर सहायता के लिए मजहर की ओर देखा। प्रान्तीय कमेटी का दूसरा मेम्बर बोल उठा, "ओह, कामरेड गीता!"

"यस गीता, हां गीता!"

सेक्रेटरी ने पूछा, "हां, हां, क्या है?"

साथ खड़े कामरेड्स में से एक बोल उठा, "कामरेड गीता, आपके लिए कल तीन बजे पार्टी-दफ्तर में पदमलाल भावरिया का संदेश भिजवाया था। मिला नहीं?" सभी लोग गीता की ओर देखने लगे।

"मैं के० जी० एम० हस्पताल में ड्यूटी पर थी। वहां संध्या को भाई ने खबर पहुंचाई। उस समय ड्यूटी पर थी। कोई दूसरा आदमी नहीं था।"

"ठीक है।" प्रान्तीय कमेटी के मेम्बर ने सिर हिलाकर अनुमोदन किया।

संदेश भिजवाने वाला कामरेड बोला, "कल दो बजे उसे वालंटियर लाए।

शरीर में पांच गोलियां लगी थीं। साथ के लोग कहते थे उसने भीड़ के आगे होकर लोहे का एक लाठ ले फौजी लारी को गिरा दिया। जब यहां लाया गया, बहुत खून बह जाने से बेहोश था। इंजेक्शन लगाने से कुछ देर के लिए होश आया। मैंने घर वालों का पता पूछा—जवाब दिया, 'उनका क्या होगा; आकर घबराएंगे। क्या शहर में गोली चल रही है ?"

"नहीं, अब शान्ति है।" मैंने कहा।

"क्या हमारे जहाजी सिपाही जीत गए ?"

"नहीं, कांग्रेस लीडरों ने उनसे हथियार डलवा दिए। समझौता हो जायेगा।" मैंने बताया।

"बोला, मारे गए गरीब !······दगा होगा !······हथियार डाल देने वाला कैसे जीतेगा ?"

प्रान्तीय कमेटी का दूसरा मेम्बर बोला, "वेरी गुड ! इसका सब हाल अखबार में दे देना होगा। नोट कर लिया है ? उसका फोटो लिया है ?"

कामरेड कहता गया, "मैंने पूछा, कहिए, आप के घर के लोगों को बुलवा दें ?" तो कामरेड का पता बताकर, गीता की ओर संकेत कर उसने कहा, "उन्हें बुलवा दो !"

गीता बोल उठी, "मैं उस से मिलने की इजाजत चाहती हूं।" कामरेड क्षण-भर गीता को देखता रह कर धीमे स्वर में बोला, "वह तो रात नौ बजे मर गया।···बड़े जीवट का आदमी था !"

गीता के पांव लड़खड़ा गए। गिर पड़ने से अपने को संभाले रखने के लिए वह अपने बटुए को दोनों हाथों से कस कर पकड़े थी।

मजहर हाथ में थमी पैंसिल से अपना सिर खुजाते हुए बोल, "यह गीता का ही प्रभाव था कि भावरिया जैसा बदनाम व्यक्ति भी राष्ट्रीय संघर्ष के मोर्चे पर आगे आया, वरना···"

सेक्रेटरी ने गीता की ओर देख मुस्कराने का यत्न कर कहा, "वी नो, वी नो (हम जानते हैं), गुड गर्ल (शाबाश, बहादुर) !"

गीता के आंसू बह गए।

घड़ी देख मजहर बोला, "बहुत देर हो रही है।"

सब लोग अर्थियों की ओर चल दिए। हिचकी की आवाज सुन सेक्रेटरी ने लौट कर देखा। ठीक से देख पाने के लिए उस ने अपना ढलक आया चश्मा

ऊपर चढ़ा, गीता के मुख की ओर देखा, "व्हाट इज दिस कामरेड (यह क्या करती हो) ?" सेक्रेटरी का स्वर भारी हो रहा था, "यह रोने का समय नहीं···हमें गर्व होना चाहिए ! ···यह आजादी के मूल्य की किश्त है।···उस के लिए रोना क्या ?"

गीता गले में उमड़ती हिचकी को पी गई। पलकों में आंसू भर जाने के कारण वह कुछ स्पष्ट देख न पा रही थी। मन से उठते आवेश को दबाए रखने के लिए वह दांतों से होंठों को काट रही थी, परन्तु गालों पर से आंसुओं की धाराएं बहती गईं। सहसा सुनाई दिया, "कामरेड्स, अटेंशन (सावधान) !"

अर्थियों के समीप खड़े कामरेड सिपाहियों की तरह तन कर सीधे खड़े हो गए। गीता भी तुरन्त, लड़खड़ाते कदमों से वहां पहुंच, उन के साथ मिल, उन्हीं की तरह तन कर खड़ी हो गई। गालों पर बहते आंसू पोंछ सकने के लिए उस के हाथ हिल न सके।

प्रान्तीय कमेटी का एक मेम्बर अपने स्थान से एक कदम आगे बढ़ कर बोला :

"अपने भाइयों के इस प्रकार क्रूरता से मारे जाने पर हमें क्रोध और शोक है !" उस का स्वर भर्रा गया, "···परन्तु यह दिन मुबारक है, जब राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिए सब भेद-भाव भुला कर हिन्दू-मुसलमान, छूत-अछूत, सरकारी और गैर-सरकारी हिन्दुस्तानियों का रक्त एक साथ बहा है। आज हिन्दुस्तानी-मात्र के सम्मिलित रक्त की आहुति से हमारे राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के संग्राम का नया और अन्तिम अध्याय आरम्भ होता है। हमें आशा है, भविष्य में भारत-माता के बेटे सरकारी और गैर-सरकारी भागों में बंट कर परस्पर एक-दूसरे का खून न बहाएंगे, बल्कि अपने सम्मिलित रक्त की नदी में विदेशी दमन को डुबो कर स्वतन्त्र हो जाएंगे।" सब लोग मूर्तिवत् स्थिर और मौन रह गए।

एक गहरी सांस ले सेक्रेटरी बोला, "अपने वीर शहीद साथियों के आदर में हम अपना 'लाल' सलाम देते हैं।"

सब लोगों की दृढ़ता से बंधी मुट्ठियां कंधों के ऊपर आकाश की ओर उठ गईं। दांतों से होंठ दबाए रहने पर भी गीता के आंसू बह रहे थे। मन के आवेग और शरीर की निर्बलता को वश में करने के प्रयत्न में उस की दृढ़ता से बंधी, आकाश की ओर उठी मुट्ठी कांप रही थी।

—:o:—

A6493
2-2-74

यशपाल साहित्य

संशोधित सूचीपत्र अक्टूबर १९६८

कहानी संग्रह

अभिशप्त	५—००
वो दुनिया	५—००
ज्ञानदान	५—००
पिंजड़े की उड़ान	५—००
तर्क का तूफान	५—००
भस्मावृत्त चिन्गारी	५—००
फूलो का कुर्त्ता	५—००
धर्मयुद्ध	५—००
उत्तराधिकारी	५—००
चित्र का शीर्षक	५—००
तुमने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूं ?	५—००
उत्तमी की मां	५—००
ओ भैरवी !	५—००
सच बोलने की भूल	५—००
खच्चर और आदमी	५—००
भूख के तीन दिन	६—००

राजनैतिक निबन्ध

रामराज्य की कथा	५—००
गांधीवाद की शव-परीक्षा	५—००
मार्क्सवाद (प्रेस में)	

हास्य निबन्ध

चक्कर क्लब	५—००
बात बात में बात	५—००
न्याय का संघर्ष	५—००
जग का मुजरा	५—००

उपन्यास

झूठासच—वतन और देश	१४—००
झूठासच—देश का भविष्य	१६—००
मनुष्य के रूप	७—५०
पक्का कदम	६—५०
देशद्रोही	७—००
दिव्या	६—००
गीता	४—००
दादा कामरेड	५—००
अमिता	६—००
जुलैखां	८—००
बारह घंटे	५—००
अप्सरा का श्राप	५—००
क्यों फंसें ? (प्रेस में)	

नाटक

नशे नशे की बात !	४—००

कथात्मक निबन्ध

देखा सोचा समझा	५—००
बीबी जी कहती हैं मेरा चेहरा रोबीला है	५—००

संस्मरण

सिं	
सिं	
सिं	
लो० . . .	
राहबीती	५—००

Library IIAS, Shimla
H 813.3 Y 26 P
00046483

विप्लव कार्यालय, २१ शिवाजी मार्ग, लखनऊ—१ (उ०प्र०)

विप्लव कार्यालय
ल ख न ऊ